



# KHAN GLOBAL STUDIES

KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6  
Mob. No.: +91-8877918018, +91-875735880

GEOGRAPHY

By : Ajit Sir

## भूगोल से संबंधित प्रमुख शब्दावली



# महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

**Aa Aa Lava (आह आह लावा) :** ज्वालामुखी उद्गार से निकले अधिक गाढ़े तथा लसदार (viscous) लावा को 'आह आह लावा' कहते हैं। इसे ब्लाक लावा भी कहते हैं।

**Abandoned Delta (परित्यक्त डेल्टा) :** जब नदी अपने पहले निर्मित डेल्टा को छोड़कर अन्यत्र नये डेल्टा का निर्माण करती है तो पहले वाले डेल्टा की वृद्धि रुक जाती है। इसे परित्यक्त या छाड़न डेल्टा कहते हैं।

**Abrasion (अपघर्षण) :** अपरदन के कारकों के साथ चलने वाले कंकड़-पत्थरों द्वारा मार्ग में पड़ने वाली चट्टानों के अपरदन की क्रिया को अपघर्षण (corrasion) कहते हैं।

**Abrupt Speciation (आकस्मिक प्रजाति उद्भव) :** प्रजातियों के गुण सूत्र (chromosomes) की संख्या में अचानक परिवर्तन होने से नयी प्रजातियों के अचानक उद्भव की प्रक्रिया को आकस्मिक या त्वरित प्रजाति उद्भव कहते हैं।

**Absolute Humidity (निरपेक्ष आर्द्रता) :** किसी निश्चित समय में निश्चित तापमान एवं आयतन वाली वायु में प्रति आयतन इकाई में मौजूद सभी जलवाष्प के सकल भार को निरपेक्ष आर्द्रता कहते हैं। इसे सामान्य तौर पर प्रति घनमीटर आयतन में जलवाष्प के भार को ग्राम में प्रदर्शित करते हैं।

**Absorption (अवशोषण) :** प्रवेशी विकिरण ऊर्जा के भाग को किसी तत्व या वस्तु द्वारा धारण करने तथा उसे सेंसिबुल ऊष्मा में बदलने की प्रक्रिया को अवशोषण कहते हैं।

**Accelerating Force (गतिवर्द्धक बल) :** वायु के वेग में वृद्धि करने वाले बल को जलवायु विज्ञान में गतिवर्द्धक बल कहते हैं। वायु के सन्दर्भ में

दाब प्रवणता बल (pressure gradient force) गतिवर्द्धक बल का कार्य करती है।

**Acid Lava (अम्लीय लावा) :** पीले रंग, हल्के भार एवं गाढ़े लावा को अम्लीय लावा कहते हैं। इसमें अम्ल की मात्रा अधिक होती है। जम जाने के बाद यह ऊँचे तापमान पर पिघलता है।

**Acid Lava Cone (एसिड लावा शंकु) :** तीव्र ढाल वाले एसिड लावा से निर्मित ऊँचे ज्वालामुखी शंकुओं को एसिड लावा शंकु कहते हैं। जब ज्वालामुखी उद्गार से निस्तृत लावा काफी गाढ़ा तथा लसदार (viscous) होता है एवं अम्ल की मात्रा अधिक होती है तो लावा ज्यों ही धरातल पर प्रकट होता है, उसी समय शीघ्रता से ठंडा होकर जम जाता है। अतः इसे फैलने का समय ही नहीं मिलता है। इसी कारण एसिड लावा शंकु की ऊँचाई तथा ढाल अधिक होता है।

**Active Dispersal (सक्रिय विसरण) :** जन्तुओं के अपने अन्तर्जात गुणों (यथा : बिल बनाना, रेंगना, चढ़ना, दौड़ना, तैरना, उड़ना आदि) के कारण गतिशील होने तथा अन्यत्र जाने से होने वाले विसरण को सक्रिय विसरण कहते हैं।

**Active Layer (सक्रिय सतह) :** परिहिमानी क्षेत्रों में परमाफ्रास्ट की ऊपरी लगभग एक मीटर मोटी परत को सक्रिय सतह इसलिए कहते हैं कि इसी सतह में परिहिमानी प्रक्रम क्रियाशील होते हैं।

**Active Volcano (सक्रिय ज्वालामुखी) :** जिन ज्वालामुखियों से लावा, गैस तथा अन्य पदार्थ सदैव निकला करते हैं उन्हें जाग्रत या सक्रिय ज्वालामुखी कहते हैं।

**Adiabatic Lapse Rate (रुद्धोष्म पतन दर) :** किसी भी ऊपर उठती या नीचे बैठती वायु के तापमान में होने वाले परिवर्तन की दर को

एडियाबेटिक पतन दर या एडियाबेटिक परिवर्तन कहते हैं। ऊपर उठती वायु की यह ताप पतन दर ओसांक (dew point) से पहले 10°C प्रति 1000 मीटर तथा ओसांक के बाद 5°C प्रति 1000 मीटर होती है। नीचे बैठती हवा की तापवृद्धि की दर 10°C प्रति 1000 मीटर (नीचे आने पर) होती है।

**Adiabatic Process (एडियाबेटिक प्रक्रिया) :**

ऊपर उठती वायु के फैलने के कारण तापमान में कमी तथा नीचे बैठती वायु के संकुचन के कारण तापमान में वृद्धि की प्रक्रिया को एडियाबेटिक प्रक्रिया कहते हैं। संक्षेप में ऊपर उठती या नीचे उतरती वायु के तापमान में परिवर्तन की प्रक्रिया को एडियाबेटिक प्रक्रिया कहते हैं। हवा के फैलाव के कारण 10°C/1000 मीटर की दर से तापमान में कमी तथा हवा में संकुचन के कारण 10°C / 1000 मीटर की दर से तापमान में वृद्धि होती है।

**Adsorption (अधिशोषण) :** अधिशोषण प्रक्रिया के अन्तर्गत पोटैसियम एवं मैग्नेसियम के कैटायन मृत्तिका खनिज के साथ चिपककर फेरोमैग्नेसियम का नोडूल बनाते हैं जो सागरीय नितल में जमा होते रहते हैं।

**Advectional Cooling (अभिवहनीय शीतलन)**

: किसी वायुराशि के क्षैतिज दिशा में गतिशील होने तथा विभिन्न तापमान वाली वायुराशियों के मिश्रण से ऊष्मा के क्षय होने से वायु के ठंडा होने की प्रक्रिया को अभिवहनीय डायबेटिक शीतलन कहते हैं।

**Adventive Crater (आश्रित क्रेटर) :** पुराने शंकु के ढालों पर निर्मित गौण क्रेटर को आश्रित क्रेटर इस लिए कहते हैं कि ये प्रमुख ज्वालामुखी शंकु एवं उसके क्रेटर पर आश्रित होते हैं।

**Aerobic Stage (सुवातित अवस्था) :** जब मिट्टियों में न्यूनतम जल/नमी परन्तु अधिकतम वायु रहती है तो मृदा की इस दशा को सुवातित अवस्था कहते हैं।

**Aerological Monsoon (एयरोलाजिकल**

**मानसून) :** क्षोभमण्डल में उच्च तलीय हवाओं, जिनकी दिशा में ऋत्तिक परिवर्तन होता है, को उच्च तलीय मानसून या एयरोलाजिकल मानसून कहते हैं।

**Aerology (वायु विज्ञान) :** ऊपरी वायुमण्डल के अध्ययन करने वाले विज्ञान को वायु विज्ञान कहते हैं।

**Air Mass (वायुराशि) :** उस विस्तृत वायुपुंज को वायुराशि कहते हैं जिसमें हजारों-लाखों वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले विस्तृत क्षेत्र में ऊँचाई के साथ तापमान एवं आर्द्रता की प्रवणता में लगभग समरूपता होती है।

**Air Pressure (वायुदाब) :** सागर तल पर प्रति इकाई क्षेत्र (एक वर्ग इंच, एक वर्ग सेण्टीमीटर, एक वर्गमीटर आदि) पर ऊपर स्थित वायुमण्डल की समस्त परतों के पड़ने वाले समस्त भार (weight) को वायुदाब कहते हैं। इसे सामान्य तौर पर मिलीबार (mb) में व्यक्त किया जाता है।

**Albedo (अलबिदो) :** किसी वस्तु की सतह से प्रवेशी विकिरण- ऊर्जा के प्रत्यावर्तित भाग को अलबिदो या प्रत्यावर्तन गुणांक (reflection coefficient) कहते हैं। इसे प्रत्यावर्तिता (reflectivity) भी कहते हैं। इसे सदा प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।

**Allogenic Succession (अन्यत्रजात अनुक्रम) :**

स्थान विशेष की पर्यावरण दशाओं, खासकर अजैविक (भौतिक) कारकों में परिवर्तन होने से विभिन्नता के कारण प्रजातियों के अनुक्रम को अन्यत्रजात अनुक्रम कहते हैं।

**Alluvial Cone (जलोढ़ शंकु) :**

पर्वतों की पदस्थली पर विभिन्न आकार वाले अवसादों (बोल्डर, कोबुल, पेबुल, ग्रैवेल, रेत आदि) के चापाकार तीव्र ढाल वाले जमाव द्वारा बने स्थलरूप को जलोढ़ शंकु कहते हैं।

**Alluvial Fan (जलोढ़ पंख) :** पर्वतों की पदस्थली के सहारे विभिन्न आकार वाले अवसादों से निर्मित जलोढ़ शंकु से कम ढाल वाले चापाकार स्थलरूप को जलोढ़ पंख कहते हैं।

**Alluvial Plain (जलोढ़ मैदान) :** नदियाँ अपने साथ लाये जलोढ़ (alluvium) को निचले स्थानों में लगातार जमा करती रहती हैं। इस तरह जलोढ़ (कांप) के निक्षेप से जनित मैदानों को 'जलोढ़ मैदान' या 'बाढ़ मैदान' (flood plain) कहते हैं। उदाहरण : भारत का विशाल उत्तरी मैदान।

**Altiplanation (तुंगसपाटीकरण) :** परिहिमानी क्षेत्रों की ऊंची पहाड़ियों पर परिहिमानी प्रक्रमों द्वारा समतलीकरण की प्रक्रिया को तुंग सपाटीकरण कहते हैं।

**Altiplanation Terraces (तुंग सपाटीकरण वेदिकायें) :** परिहिमानी क्षेत्रों के पर्वतीय भागों में ऊंचाई पर परिहिमानी प्रक्रम द्वारा तुंगसपाटीकरण की क्रिया द्वारा निर्मित सोपानों (benches) को तुंगसपाटीकृत वेदिकायें कहते हैं। एक वेदिका का दूसरी वेदिका से 2 से 12 मीटर ऊंचे कगारों (scarps) से अलगाव होता है। इनकी चौड़ाई 10 से 90 मीटर तक होती है।

**Amphidromic Point (उभयगामी विन्दु) :** किसी उभयगामी तंत्र में केन्द्रीय विन्दु को नोडल प्वाइण्ट या उभयगामी विन्दु कहते हैं, जहाँ से समज्वारीय तरंगें सभी दिशाओं में गमन करती हैं।

**Antipodal Situation (प्रतिध्रुवस्थ स्थिति) :** स्थल के विपरीत जल तथा जल के विपरीत स्थल की स्थिति को प्रतिध्रुवस्थ स्थिति कहा जाता है।

**Anaerobicstage (अवातित अवस्था) :** मृदा में अधिकतम जल/नमी (सम्पृक्तावस्था) परन्तु न्यूनतम वायु की दशा को मिट्टियों की अवातित अवस्था कहते हैं तथा इस अवस्था वाली मृदा को अवातित मृदा (poorly aerated soil) कहते हैं।

**Annular Drainage Pattern (वलयाकार अपवाह प्रतिरूप) :** किसी गुम्बदीय पर्वत के चारों ओर वृत्त के आकार में फैली सरिताओं के क्रम को वलयाकार प्रतिरूप कहते हैं। इसमें सरितायें गुम्बदीय पर्वत की परिक्रमा करती हुई प्रतीत होती हैं।

**Antecedent River (पूर्ववर्ती सरिता) :** पूर्ववर्ती सरिता उसे कहते हैं जिसका आविर्भाव स्थलखण्ड में उत्थान के पहले हो चुका रहता है। इस प्रकार पूर्ववर्ती नदियाँ उच्चावच्च को काटकर उसके आर-पार प्रवाहित होती हैं। उदाहरण : सिन्धु नदी, गंगा, यमुना, तिस्ता, ब्रह्मपुत्र आदि हिमालय को काटकर प्रवाहित होती हैं। चूंकि इस तरह की नदियाँ उच्चावच्च एवं ढाल के विपरीत प्रवाहित होती हैं अतः इन्हें अक्रमवर्ती सरिता (insequent streams) कहते हैं।

**Anthropogenic Climax (मानवजनित चरम) :** किसी निश्चित प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में मानव हस्तक्षेप के कारण उत्पन्न चरम वनस्पति की दशा को मानवचरम कहते हैं।

**Anthropogenic Weathering (मानजनित अपक्षय) :** वर्तमान समय में मानव अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से विभिन्न आर्थिक क्रियाओं (यथा : खनिज खनन, सड़क निर्माण एवं खनिज प्राप्ति हेतु डायनामाइट से पहाड़ियों को उड़ाना आदि) द्वारा चट्टानों में प्राकृतिक प्रक्रियाओं की अपेक्षा कई गुना तेजी से तोड़-फोड़ करता है। इस तरह मनुष्य द्वारा चट्टानों में तोड़-फोड़ को मानवजनित अपक्षय कहते हैं।

**Anticlinal Lake (अपनतीय झील) :** कभी-कभी अपरदन के कारण नदियों के मार्ग में अपनति का अनुप्रस्थ दिशा में अनावरण होने से नदियों का जल अपनतियों के पीछे अवरुद्ध हो जाता है जिस कारण निर्मित झील को अपनतीय झील कहते हैं।

**Anticlinal Valley (अपनतीय घाटी) :** वलित पर्वतीय क्षेत्रों में दीर्घकालीन अपरदन द्वारा उच्चावच प्रतिलोमन (in - version of relief) होने से अपनतियों के स्थान पर घाटियां बन जाती हैं जिन्हें अपनतीय घाटियां कहते हैं।

**Anticline (अपनाति) :** अन्तर्जात बल के कारण क्षैतिज संचलन से उत्पन्न सम्पीनात्मक बल (compressional force) के कारण परतदर शैलों में उत्पन्न वलन के ऊपर उठे भाग को अपनाति कहते हैं।

**Anticlinorium (समपनति) :** वलित पर्वतीय क्षेत्रों में जब एक वृहद् अपनाति के अन्तर्गत कई छोटी-छोटी अपनतियाँ एवं अभिनतियाँ बन जाती हैं तो उस संरचना या आकृति को समपनति (सम् + अपनाति) कहते हैं।

**Anticyclone (प्रतिचक्रवात) :** चक्रवातों के विपरीत प्रति चक्रवात वृत्ताकार समदाब रेखाओं द्वारा घिरा हुआ वायु परिसंचरण का ऐसा क्रम होता है जिसके केन्द्र में उच्चतम वायुदाब तथा परिधि में न्यूनतम वायुदाब होता है, जिस कारण हवायें केन्द्र से बाहर की ओर उत्तरी गोलार्द्ध में घड़ी की सुइयों के अनुकूल तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रतिकूल दिशा में प्रवाहित होती हैं।

**Aphanitic Igneous Rock (अफैनिटिक आग्नेय शैल) :** अत्यधिक सूक्ष्म कणों वाली आग्नेय शैल को अफैनिटिक शैल कहते हैं। डाइक, सिल एवं स्टाक में पायी जाने वाली चट्टानें इस वर्ग में आती हैं।

**Apogean Tides (अपभू ज्वार) :** जब चन्द्रमा पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर होता है उस समय उत्पन्न निम्न ज्वार को अपभू ज्वार कहते हैं।

**Aquatic Ecosystem (जलीय पारिस्थितिक तंत्र) :** पृथ्वी के जलीय भागों (स्थलीय एवं सागरीय दोनों) के जैविक एवं अजैविक संघटकों से युक्त जलीय पर्यावरण वाले पारिस्थितिक तंत्र को जलीय पारिस्थितिक तंत्र कहते हैं।

**Aquiclude (अक्वीक्लूड) :** धरातलीय सतह के नीचे दो पारगम्य तथा संपृक्त मण्डलों के बीच अपारगम्य शैल वाले संस्तर को अक्वीक्लूड कहते हैं।

**Arcuate Delta (चापाकार डेल्टा) :** नदियों के मुहाने पर वृत्त के चाप या धनुष के आकार में निर्मित डेल्टा को चापाकार डेल्टा कहते हैं। विश्व के अधिकांश वृहदाकार डेल्टा चापाकार डेल्टा हैं; उदाहरण : गंगा डेल्टा, नील डेल्टा, डैन्यूब डेल्टा, इरावदी डेल्टा, गोदावरी डेल्टा, हांगहो (यलो) डेल्टा, नाइजर डेल्टा आदि।

**Aret (अरेत) :** पर्वतीय भाग में दो पार्श्ववर्ती सर्क के पीछे हटने से निर्मित नुकीली पहाड़ी श्रेणी को तीक्ष्ण कटक (ridges) या अरेत कहते हैं।

**Artisian Well (अर्टिजियन कूप) :** अर्टिजियन कुएं या पाताल-तोड़ कुएं धरातलीय सतह के नीचे से ऊपर की ओर निकलने वाले जल के स्रोत (water springs) होते हैं। आर्टिजियन कुएं से जलप्राप्ति के लिए पहले सतह पर कुंआ खोदना पड़ता है। तत्पश्चात् नीचे से जल स्वतः धरातल पर आने लगता है। इसके विपरीत प्राकृतिक जल स्रोत (water springs) से जल स्वतः निकलता रहता है।

**Asthenosphere (दुर्बलता मण्डल) :** स्थलमण्डल के नीचे 85 किमी० से कई सौ किलोमीटर की गहराई तक वाले भाग, जिसमें चट्टानें ऊपरी भाग तथा निचले भाग की अपेक्षा कम दृढ़ होती हैं परन्तु इतनी दृढ़ (rigid) अवश्य होती हैं कि उनसे होकर अनुप्रस्थ भूकम्पीय तरंगें अग्रसर हो सकें, को दुर्बलता मण्डल करते हैं।

**Asymmetrical Anticline (असममित अपनाति) :** जब किसी अपनाति के एक ओर का ढाल अधिक तथा दूसरी ओर का ढाल कम होता है तो उसे असमान या असममित अपनाति कहते हैं।

**Atmosphere (वायुमण्डल) :** पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त गैसीय आवरण को वायुमण्डल कहते हैं।

**Atmospheric Humidity (वायुमण्डलीय आर्द्रता) :** किसी स्थान विशेष की किसी निर्दिष्ट समय में निश्चित तापमान एवं आयतन वाली वायु में गैसीय रूप में मौजूद जल की मात्रा (जलवाष्प की मात्रा) को वायुमण्डलीय आर्द्रता, या वायुमण्डलीय जलवाष्प (या मात्र वाष्प) कहते हैं।

**Atmospheric Instability (वायुमण्डलीय अस्थिरता) :** निचले वायुमण्डल में वायु के उठकर फैलने से उसके तापमान में परिवर्तन होने से उत्पन्न अस्थिर दशा को वायुमण्डलीय अस्थिरता कहते हैं।

**Atmospheric Stability (वायुमण्डलीय स्थिरता) :** निचले वायुमण्डल वायु के नीचे उतरने के कारण उसमें संकुचन होने तथा तापमान में वृद्धि होने से वायुमण्डल की स्थिर दशा को वायुमण्डलीय स्थिरता कहते हैं।

**Atmospheric Window (वायुमण्डलीय खिड़की) :** ऐसी किसी भी तरंगदैर्घ्य (wavelength) को वायुमण्डलीय खिड़की कहते हैं जिस पर विद्युतचुम्बकीय सौरिक विकिरण वायुमण्डल से गुजरकर पृथ्वी की सतह तक पहुंच सके।

**Atoll (एटॉल) :** घोड़े की नाल या मुद्रिका के आकार वाली प्रवाल भित्ति को एटॉल कहते हैं।

**Attrition (सन्निघर्षण) :** अपरदन के कारकों के साथ चलने वाले विभिन्न आकार वाले पदार्थों के आपस में टकरा कर टूटने-फूटने की क्रिया को सन्निघर्षण कहते हैं।

**Aurora (औरोरा) :** चुम्बकीय तूफानों द्वारा सूर्य की सतह से विसर्जित (discharged) इलेक्ट्रान के समूह द्वारा ध्रुवों के ऊपर उत्पन्न ब्रह्माण्डीय चमकते प्रकाश (cosmic glowing lights) को औरोरा कहते हैं।

**Auroral Lights (ध्रुवीय प्रकाश) :** सौरिक ज्वाला (solar flares) तथा सौरिक पवन द्वारा अवमुक्त एटामिक अणुओं की भारी मात्रा के मिश्रण से ध्रुवों के ऊपर आकाश में उत्पन्न प्रकाश, जो पृथ्वी के ध्रुवीय चुम्बकीय क्षेत्र तक पहुंच जाता है, को ध्रुवीय प्रकाश कहते हैं। ध्रुवीय प्रकाश दो तरह के होते हैं : (1) उत्तरी ध्रुवीय प्रकाश (aurora borealis) तथा (2) दक्षिणी ध्रुवीय प्रकाश (aurora australis)। औरोरा का अर्थ होता ऊषाकाल (dawn) तथा बोरियालिस एवं आस्ट्रलिस का अर्थ क्रमशः उत्तरी एवं दक्षिणी होता है।

**Auroras (ध्रुवीय प्रकाश) :** औरोरा का शाब्दिक अर्थ ऊषाकाल (dawn) होता है। औरोरा को ध्रुवीय प्रकाश कहते हैं, जो ब्रह्माण्डीय चमकते प्रकाश (cosmic glowing lights) होते हैं जिनका निर्माण चुम्बकीय तूफान के कारण सूर्य की सतह से उत्सर्जित इलेक्ट्रान तरंग के कारण होता है। औरोरा ध्रुवीय आकाश में लटके बहुरंगी आतिशबाजी (multicoloured fire-works) की तरह दिखाई पड़ते हैं। ये प्रायः आधी रात के समय दृष्टिगत होते हैं। उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव के आकाश में इन्हें क्रमशः उत्तरी ध्रुवीय प्रकाश (aurora borealis, borealis का अर्थ उत्तरी होता है) तथा दक्षिणी ध्रुवीय प्रकाश (aurora australis, australis का अर्थ दक्षिणी होता है) कहते हैं।

**Autecology (स्वपारिस्थितिकी) :** किसी भी पारिस्थितिक तंत्र में केवल एक प्रजाति के पारिस्थितिक सम्बन्धों के अध्ययन को स्वपारिस्थितिकी कहते हैं।

**Autochthonous Nappe (स्वस्थानिक ग्रीवाखण्ड) :** जब अपनति या वलन की एक भुजा टूटकर पास वाले वलन पर सवार हो जाती है तो उसे स्वस्थानिक ग्रीवाखण्ड कहते हैं।

**Autogenic Sediments (स्वजनित अवसाद) :** जैवरासायनिक वर्षण द्वारा प्राप्त अवसाद जब सागरीय नितल पर अपने स्थान पर जमा होते हैं तो उन्हें स्वजनित अवसाद कहते हैं।

**Autogenic Succession (स्वजात अनुक्रम) :** किसी पारिस्थितिक तंत्र में वनस्पतियों द्वारा होने वाले वनस्पतियों के अनुक्रमिक विकास (successional development) को स्वजात अनुक्रम कहते हैं।

**Autotrophic Component (स्वपोषित संघटक) :** जीवमण्डल में अपना भोजन स्वयं बनाने वाले प्रकाशसंश्लेषी हरे पौधे स्वपोषित संघटक की रचना करते हैं।

**Axis of Fold (वलन की अक्ष) :** वलन की दोनों भुजाओं के बीच अपनति के उच्चस्थ या अभिनति के निम्नस्थ भागों से गुजरने वाली कल्पित रेखा को वलन की अक्ष कहते हैं।

**Azonal Soil (अमण्डलीय मृदा) :** अपूर्ण विकसित संस्तरों (poorly developed horizons) वाली मृदा को अमण्डलीय मृदा कहते हैं। इसमें ऊपरी सतह से निचली सतह तक मिट्टियों की संरचना तथा गुणों में एकरसता होती है।

**Back Shore (पृष्ठ किनारा) :** जहां पर सागरीय तरंगें आगे बढ़कर पहुंचती हैं, उसे सागरीय पृष्ठ किनारा कहते हैं किनारे का यह भाग सागर की स्थल की ओर की अन्तिम सीमा है।

**Backland (पृष्ठ प्रदेश) :** कोबर के अनुसार भूसन्नति का जो पार्श्व गतिशील होता है उसे पृष्ठ प्रदेश कहते हैं तथा अपनी जगह पर स्थिर रहने वाले पार्श्व को अग्रदेश (foreland) कहते हैं।

**Badland Topography (उत्खात भूमि स्थलाकृति) :** शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क प्रदेशों में जलीय अपरदन द्वारा अवनलिकाओं (gullies) एवं वीहड़ों (ravines) का निर्माण होने से उत्पन्न ऊबड़-खाबड़ सतह वाली स्थलाकृति को उत्खात - भूमि स्थलाकृति कहते हैं।

**Bajada (बजाडा) :** गर्म शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क प्रदेशों में पर्वतीय अग्र भाग तथा पेडीमेण्ट एवं

प्लाय के मध्य निक्षेप जनित मन्द ढाल वाले मैदान को बजाडा कहते हैं।

**Barbed Drainage Pattern (कंकटीय अपवाह प्रतिरूप) :** जब किसी प्रदेश में मुख्य नदी की सहायक नदियां मुख्य नदी की अपवाह दिशा के विपरीत दिशा में प्रवाहित होती हैं तो उनसे निर्मित अपवाह तंत्र को कंकटीय अपवाह तंत्र कहते हैं।

**Barkhan (बरखान) :** उष्ण शुष्क मरुस्थलीय भागों में वायु द्वारा रेत के जमाव से निर्मित चापाकार या अर्द्ध चन्द्राकार अनुप्रस्थ बालुकास्तूपों (sand dunes) को बरखान कहते हैं।

**Barrier Reef (अवरोधक प्रवाल भित्ति) :** सागरीय तट से दूर, किन्तु उसके समानान्तर वृहदाकार प्रवाल भित्ति को अवरोधक प्रवाल भित्ति कहा जाता है।

**Base Level of Erosion (अपरदन का आधार तल) :** किसी भी भू-आकृतिक प्रक्रम द्वारा किए जाने वाले निम्नवर्ती अपरदन (downward or vertical erosion) की अन्तिम सीमा को अपरदन का आधार तल कहते हैं। नदी के सन्दर्भ में सागर तल आधार तल होता है। नदियां इसके नीचे अपनी घाटी को और अधिक गहरा नहीं कर सकतीं।

**Base Line (आधार रेखा) :** सागर की ओर निकले स्थलीय भागों को मिलाने वाली कल्पित रेखा को आधार रेखा कहते हैं।

**Basic Lava (पैठिक या बेसिक लावा) :** गहरे तथा काले रंग, अधिक भार तथा पतले लावा को बेसिक लावा कहते हैं। पतला तथा हल्का होने के कारण यह धरातल पर शीघ्र फैल जाता है।

**Basic Lava Cone (बेसिक लावाशंकु) :** विस्तृत क्षेत्र पर कम ऊँचाई वाले, हल्के तथा पतले एवं कम सिलिका वाले लावा से निर्मित शंकु को

बेसिक लावा शंकु कहते हैं। शील्ड के आकार वाले इस शंकु को शील्ड शंकु भी कहते हैं।

**Basket of Egg Topography (अण्डे की टोकरी वाली स्थलाकृति) :** एक क्षेत्र में सैकड़ों की संख्या में निर्मित ड्रमलिन तथा उनके बीच में निर्मित लघु आकार वाले गड्ढे से युक्त स्थलाकृति को अण्डे की टोकरी वाली स्थलाकृति कहते हैं।

**Batha (बाथा) :** बाथा यूरोपीय रूमसागरीय जलवायु प्रदेश की बौनी झाड़ी होती है। इस तरह की झाड़ी को कैलिफोर्निया (संयुक्त राज्य) में सेज स्क्रब कहते हैं।

**Batholith (बैथोलिथ) :** धरातलीय सतह के नीचे लम्बे, असमान तथा उभरे हुए ग्रेनाइट शैल के आकार को वैथोलिथ कहते हैं। ये प्रायः गुम्बदीय आकार के होते हैं, इनके किनारे खड़े ढाल वाले होते हैं तथा आधार अत्यधिक गहराई में होता है

**Beaches (बीच या पुलिन) :** सागरीय तरंगों द्वारा कम ढलुआ सागरीय तटों पर विभिन्न प्रकार एवं आकार के अवसादों के निक्षेपण से जनित स्थलाकृति को सागरीय पुलिन कहते हैं। अधिकांश पुलिन रेत निर्मित होती हैं।

**Bedding Plane (संस्तर तल) :** परतदार अवसादी शैलों के दो संस्तरों (beds या परत) के मध्य विभाजक संयोजक तल को संस्तर तल कहते हैं।

**Beheaded River (शीर्षकटी सरिता) :** किसी क्षेत्र में जब एक नदी द्वारा दूसरी नदी के ऊपरी भाग का अपहरण कर लिया जाता है तो उस सरिता के शेष बचे निचले जलमार्ग को शीर्षकटी या रुण्डित नदी कहते हैं।

**Benthos Community (तलवासी सागरीय समुदाय) :** सागरतटीय भाग से खुले सागर के जल के नीचे सागर की तली पर रहने वाले जीव समुदाय को बेन्थस समुदाय कहते हैं।

**Bergsehrund (वर्गश्रृण्ड) :** सर्क में गतिशील हिम की ऊपरी सतह में निर्मित गहरी तथा चौड़ी दरारों को वर्गश्रृण्ड कहते हैं।

**Bhabar (भाबर) :** हिमालय पर्वत की निचली तलहटी में पर्वत पदस्थली (foothill) के पास बोल्टर, कोबुल्स, पेबुल्स, बजरी (gravels) तथा रेत के जमाव से बने भूभाग को भाबर कहा जाता है तथा विस्तृत भाबर क्षेत्र को भाबर मैदान कहते हैं।

**Binary Hypothesis (द्वैतारक परिकल्पना) :** दो तारों के संयोग से ग्रहों तथा पृथ्वी की उत्पत्ति की संकल्पना को द्वैतारक परिकल्पना कहते हैं।

**Biochemical Weathering (जैवरासायनिक अपक्षय) :** जैविक पदार्थों (पौधों तथा जन्तुओं, दोनों के) द्वारा शैलों में विघटन एवं वियोजन अर्थात् रासायनिक अपक्षय को जैवरासायनिक अपक्षय कहते हैं।

**Biodiversity (जैव विविधता) :** किसी भी निश्चित क्षेत्र या प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में पौधों एवं जन्तुओं के प्रकार, उनकी विभिन्नता एवं परिवर्तनशीलता को जैव विविधता कहते हैं।

**Biodiversity Hotspots (जैव विविधता हॉटस्पॉट) :** उन क्षेत्रों को जैव विविधता हाटस्पॉट कहते हैं जो पौधों, जन्तुओं एवं सूक्ष्म जीवों के समृद्ध जीवीय समुदायों को धारण करते हैं तथा जिनमें स्थानिक प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

**Biogenic Sediments (जैवजनित अवसाद) :** सागरीय नितल पर जमा होने वाले विभिन्न सागरीय जीवों के अस्थिपंजरों से निर्मित अवसाद को जीवनिर्मित अवसाद कहते हैं।

**Biogeochemical Cycle (जैव भूरसायन चक्र) :** अजैविक तत्वों (रासायनिक) के जैविक प्रावस्था में परिवर्तन तथा इन जैविक तत्वों के अजैविक रूप में पुनरागमन की प्रक्रिया को जैव-भूरसायन चक्र कहते हैं।

**Biogeography (जीवभूगोल) :** जीवमण्डल के अध्ययन करने वाले विज्ञान को जीवभूगोल कहते हैं, जिसके अन्तर्गत भौतिक पर्यावरण, मृदा, जन्तुओं तथा वनस्पतियों का विधिवत अध्ययन किया जाता है।

**Biological Desert (जैविक मरुस्थल) :** अत्यधिक प्रदूषण के कारण जब पारिस्थितिक तंत्रों (यथा : नदी, झील आदि) की उत्पादकता अत्यधिक न्यून हो जाती है तथा उनमें जीवों का अस्तित्व लगभग समाप्त हो जाता है तो उन्हें जैविक मरुस्थल कहते हैं।

**Biomass (जैवपुंज - बायोमास) :** प्रति इकाई क्षेत्र में जीवित पदार्थों (पौधे, जन्तु तथा सूक्ष्म वियोजक जन्तु) के सकल भार या उनकी मात्रा को बायोमास कहते हैं।

**Biomass Pyramid (बायोमास पिरैमिड) :** पारिस्थितिक तंत्र में आहार श्रृंखला के सभी पोषण स्तरों पर भण्डारित समस्त जीवों के सकल भार के पिरैमिड को बायोमास पिरैमिड कहते हैं।

**Biome (जीवोम) :** समान पर्यावरण दशाओं वाले क्षेत्रों में भौतिक पर्यावरण (स्थल, जल, वायु, मृदा आदि) के साथ उसमें पाये जाने वाले समस्त पादप एवं जन्तु समुदाय के सम्यक अध्ययन के क्षेत्र को बायोम कहते हैं।

**Biosphere (जीवमण्डल) :** पृथ्वी के चारों तरफ व्याप्त 30 किमी० मोटी वायु, जल, स्थल, मिट्टी तथा शैल युक्त एक जीवनदायी परत होती है जिसके अन्तर्गत पौधों एवं जन्तुओं का जीवन सम्भव होता है।

**Bird-foot Delta (पंजाकार डेल्टा) :** नदियां जब वारीक अवसादों को अपने तेज प्रवाह वेग से सागर में दूर तक ले जाती हैं तथा कई शाखाओं में लम्बाई में इन अवसादों का निक्षेप करती हैं तो पक्षियों के पंजे के आकार के डेल्टा का निर्माण

होता है। इसे पंजा डेल्टा कहते हैं। उदाहरण . : मिसीसिपी का डेल्टा।

**Black Body (कृष्णिका) :** जो वस्तु अपनी ओर आने वाले सम्पूर्ण विकिरण का अवशोषण करती है तथा किसी भी तापमान पर अधिकतम ऊर्जा का विकिरण करती है उसे पूर्ण कृष्णिका कहते हैं।

**Blind Valley (अंधी घाटी) :** चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्र में धरातलीय सतह पर निर्मित सिंक होल (घोल रंध्र) से नदी के समस्त जल के भूमिगत हो जाने से नदी की घाटी को अंधी घाटी कहते हैं।

**Block Disintegration (ब्लाक विघटन) :** अत्यधिक तापमान के कारण चट्टानों के बड़े-बड़े ब्लाक (खण्ड) में विखण्डन की प्रक्रिया को ब्लाक विघटन कहते हैं।

**Block Fields (ब्लाकफील्ड्स) :** परिहिमानी क्षेत्रों के उच्च भागों पर, खासकर पर्वतों की चौरस सपाट चोटियों पर बड़े-बड़े शिलाखण्डों के समूह को ब्लाकफील्ड्स या ब्लाकमीर (blockmeer) कहते हैं।

**Block Mountain (ब्लाक पर्वत) :** दो सामान्य भ्रंशों के बीच ऊपर उठे भाग को ब्लाक पर्वत कहते हैं। इस ऊँचे उठे भाग को होस्ट भी कहा जाता है। दो सामान्य भ्रंश के बीच के भाग के नीचे धंस जाने से निर्मित रिफ्ट घाटी के किनारों पर उठे भागों को भी ब्लाक पर्वत या होस्ट कहते हैं।

**Blocked Delta (अवरोधित डेल्टा) :** जब डेल्टा की वृद्धि तथा विस्तार रुक जाती है तो उसे अवरोधित डेल्टा कहते हैं।

**Blome (बायोम) :** भौतिक (अजैविक) एवं जैविक संघटकों वाले वृहदस्तरीय पारिस्थितिक तंत्र को बायोम कहते हैं। इसके अन्तर्गत समस्त पौधों एवं जन्तुओं के समूहों तथा उनकी आपसी अन्तर्क्रियाओं को सम्मिलित करते हैं।

**Blood Rain (रक्त वृष्टि) :** दक्षिणी इटली में लाल रेत युक्त सिरोको वायु के साथ होने वाली वर्षा के साथ लाल रेत के नीचे गिरने को रक्त वृष्टि कहते हैं।

**Blow Hole (वात छिद्र) :** सागरीय तरंगों के अपरदन से जनित महराबों (arches) की छतों में छिद्र, जिनसे होकर सागरीय तरंगों के अतिक्रमण के समय सागरीय जल सीटी की आवाज करता ऊपर फौवारे के रूप में प्रकट होता है, को वात छिद्र या प्राकृतिक चिमनी कहते हैं।

**Boat Channel (बोट चैनल) :** प्रवाल भित्तियों एवं स्थलीय भाग के बीच खाली स्थान में निर्मित लैगून को बोट चैनल कहते हैं।

**Boyle's Gas Law (बॉयल गैस नियम) :** यह नियम वायुदाब, गैसों के आयतन एवं गैसों के घनत्व के बीच सम्बन्धों पर आधारित है।

**Braided river (गुम्फित सरिता) :** नदियों की मुख्य धारा डेल्टाई भाग में कई शाखाओं एवं प्रतिशाखाओं में विभाजित हो जाती है जिन्हें जल वितरिका (distributaries) कहते हैं। इस तरह विभिन्न जलवितरिकाओं में विभक्त सरिता को गुम्फित नदी कहते हैं।

**Brecia (ब्रेसिया) :** ज्वालामुखी के विस्फोटक उद्गार के समय निकले छोटे तथा बड़े कणों के मिश्रित भाग को ' ब्रेसिया या अग्लोमेरेट कहते हैं।

**Bulk Emplacement (थोक निक्षेप) :** अन्तः सागरीय ढालों पर गुरुत्व तरंगों द्वारा सागरीय अवसादों के सामूहिक परिवहन (स्लम्पिंग) तथा उनके इन ढालों के आधार पर निक्षेप को थोक अभिस्थापन कहते हैं।

**Burst of Monsoon (मानसून प्रस्फोट) :** भारतीय उपमहाद्वीप में जून में ६० प० मानसून के अचानक शक्तिशाली ढंग से आगमन को मानसून का प्रस्फोट कहते हैं।

**Butte (बुटी) :** अपरदन के कारण जब मेसा का चारों तरफ से क्षय हो जाता है तो उसका आकार अत्यन्त छोटा हो जाता है। इस छोटे आकार वाली मेसा को बुटी कहते हैं। carbonaceous rocks (कार्बन प्रधान शैल) : वनस्पतियों के अवशेषों के जमा होने तथा संगठित होने से निर्मित कार्बनिक तत्वों वाली अवसादी शैल को कार्बोनेसियस शैल कहते हैं। यथा : कोयला।

**Buys Ballot's Law (बायज़ बैलट का नियम) :** वायु एवं वायुदाब की दिशा से सम्बन्धित है : (1) जिस दिशा में हवा चल रही है, यदि उस दिशा में मुंह करके खड़ा हुआ जाय तो उत्तरी गोलार्द्ध में न्यून वायुदाब बांयी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दाहिनी ओर होगा। (2) 'उत्तरी गोलार्द्ध में न्यून वायुदाब जिओस्ट्राफिक पवन के बांयी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दांयी ओर होता है। उत्तरी गोलार्द्ध में उच्च वायुदाब जिओस्ट्राफिक पवन के दांयी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बांयी ओर होता है'।

**Calcareous Rock (चूना प्रधान शैल) :** जलीय भागों में चूना प्रधान जीवों के अस्थिपंजरों तथा वनस्पतियों के अवशेषों से निर्मित चूनेदार अवसादी शैल को कालकेरियस चट्टान कहते हैं। यथा : चूनापत्थर, डोलोमाइट, खारिया मिट्टी (chalk) आदि।

**Caldera (काल्डेरा) :** ज्वालामुखी शंकु के मुख पर निर्मित अत्यधिक विस्तृत क्रेटर को काल्डेरा कहते हैं। ज्वालामुखी शंकु के ऊपरी भाग के ध्वस्त हो जाने या धंस जाने के कारण निर्मित अत्यधिक विस्तृत गर्त को काल्डेरा कहते हैं।

**Cambering (कैम्बरिंग) :** ऊपरस्थित चट्टानी भार के हट जाने के कारण दबाव कम हो जाने से नीचे स्थित चट्टान में फैलाव होने से उसमें लम्बवत् संधियों के सहारे चटकने पड़ने की क्रिया को कैम्बरिंग कहते हैं।

**Cambrian Period (कैम्ब्रियन शक) :** यह पैल्योजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जिसका समय आज से 60 करोड़ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ तथा 50 करोड़ (500,000,000) वर्ष पूर्व समाप्त हो गया। इस काल का कुल समय 10 करोड़ वर्ष रहा। इस काल का नामकरण युनाइटेड किंगडम के वेल्स के कैम्ब्रिया स्थान के नाम पर किया गया है।

**Canyon (कैनियन) :** नदियों की अत्यन्त संकरी, गहरी एवं लम्बी घाटियों को कैनियन कहते हैं। कैनियन की दोनों दीवारों का खड़ा ढाल होता है। कैनियन गार्ज का ही विस्तृत रूप होता है। कोलोरैडो नदी (संयुक्त राज्य) का कैनियन विश्व विख्यात है। गढ़वाल हिमालय में भागीरथी तथा अलकनन्दा नदियों का कैनियन सैकड़ों किलोमीटर में विस्तृत है।

**Capillary Action (केशिका क्रिया) :** भूमिगत जल द्वारा घुले या निलम्बित पदार्थों के ऊपर आने की क्रिया को केशिका क्रिया कहते हैं।

**Carbonation (कार्बोनेशन) :** कार्बन डाइ आक्साइड गैस से युक्त जल के सम्पर्क में आने वाली कार्बोनेट शैलों (चूनापत्थर, डोलोमाइट आदि) के घुलने की क्रिया को कार्बोनेशन कहते हैं।

**Carboniferous Period (कार्बोनिफेरस शक) :** यह पैल्योजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जो आज से 35 करोड़ (350,000,000) पहले प्रारम्भ होकर 27 करोड़ (270,000,000) वर्ष पहले समाप्त हो गया। इस काल की कुल अवधि 8 करोड़ वर्ष रही। इसका नामकरण उस अवधि में अवसादी निक्षेपों में कार्बन की प्रधानता पर किया गया है।

**Catastrophism (प्रलयवाद / आकस्मिक वाद) :** जीवमण्डल के किसी भी भाग में भौतिक एवं जैविक संघटकों में अचानक एवं त्वरित आमूल-चूल परिवर्तन को प्रलयवाद कहा जाता है।

**Cave Pillar (कन्दरा स्तम्भ) :** कास्ट प्रदेशों में निर्मित कन्दराओं में स्टैलेक्टाइट एवं स्टैलेग्माइट के आपस में मिल जाने से निर्मित स्तम्भ को कन्दरा स्तम्भ कहते हैं।

**Centrepetal Drainage Pattern (अभिकेन्द्री अपरवाह तंत्र) :** जब आस-पास के उच्च भाग से नदियां निकलकर बीच में एक झील या गर्त में गिरती हैं तो नदियों के इस क्रम को अभिकेन्द्री या केन्द्रोन्मुखी अपवाह तंत्र कहते हैं।

**Chamaephytes (भूतलोदभिद् - कैमीफाइट) :** मृदा सतह के करीब आंखों (buds) वाली सदाबहार छोटी झाड़ियों (शाकीय या जड़ी-बूटी वाले पौधे) को कैमीफाइट या भूतलोदभिद् कहते हैं।

**Charle's Gas Law (चार्ल्स गैस नियम) :** यह नियम स्थिर गैस आयतन पर तापमान एवं वायुदाब के सम्बन्धों को दर्शाता है।

**Chemical Weathering (रासायनिक अपक्षय) :** वायुमण्डलीय कार्बन डाइ ऑक्साइड से युक्त जल एक सक्रिय घोलक हो जाता है। इसके सम्पर्क में आने वाली घुलनशील तत्वों वाली चट्टानों में होने वाले रासायनिक परिवर्तन को रासायनिक अपक्षय कहते हैं। उदाहरण : ऑक्सीडेशन, कार्बोनेशन, हाइड्रेशन आदि।

**Chemotrophs (रसायनपोषी) :** आक्सीकरण विधि से अजैविक तत्वों से आहार ऊर्जा प्राप्त करने वाले जीवों को रसायनपोषी कहते हैं (यथा : कुछ बैक्टीरिया तथा नीली- हरी शैवाल)।

**Cherry Blossoms (चेरी ब्लासम) :** शुष्क ग्रीष्म ऋतु (मध्य मार्च से मध्य जून) में होने वाली वर्षा को कर्नाटक में चेरी ब्लासम तथा दक्षिणी भारत एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में आम्र वर्षा (mango rain) कहते हैं।

**Chinook / Foehn (चिनूक/ फॉन) :** पर्वतों के पवनविमुखी ढालों पर प्रवाहित होने वाली गर्म एवं शुष्क स्थानीय हवाओं को संयुक्त राज्य में चिनूक तथा स्विट्जरलैण्ड में फॉन कहते हैं।

**Chlorinity (क्लोरीनता) :** सामान्यतया एक किलोग्राम सागरीय जल में क्लोराइड के भार को क्लोरीनता कहते हैं।

**Chromosphere (क्रोमोस्फीयर) :** सूर्य से लगभग एक मिलियन किलोमीटर दूर एवं सूर्य के प्रकाशमण्डल (फोटोस्फीयर) के चारों ओर जलती गैसों की पतली परत को वर्णमण्डल (क्रोमोस्फीयर) कहते हैं।

**Cinder Cone (सिण्डर या शख शंकु) :** ज्वालामुखी से निस्सृत धूल, राख तथा विखण्डित पदार्थों से निर्मित कम ऊँचाई तथा अवतल ढाल वाले ज्वालामुखी शंकु को सिण्डर (राख) शंकु कहते हैं।

**Circulation Gyre (संचरण जायर) :** चारों तरफ से सतहीय महासागरीय धाराओं से घिरे तंत्र को महासागरीय संचरण जायर कहते हैं जिसके मध्य में विस्तृत सागरीय क्षेत्र होता है।

**Circum Polar Whirl (परिध्रुवीय भंवर) :** ध्रुवों के ऊपर उसके चारों ओर क्षोभमण्डल के ऊपरी भाग में भूमध्य रेखा की ओर लहरनुमा पवन परिसंचरण को परिध्रुवीय भंवर कहते हैं। इसी से जेटस्ट्रीम एवं रासबी तरंगों का जनन होता है।

**Cirques (सर्क) :** हिमनद की घाटी के शीर्ष भाग पर निर्मित अर्द्धवृत्ताकार या कटोरे के आकार के विशाल गर्त को सर्क या हिमगह्वर या कोरी आदि कहते हैं।

**Climate (जनवायु) :** किसी भी स्थान या प्रदेश की दीर्घ अवधि (कई वर्षों) के दौरान मौसम सम्बन्धी दशाओं के साधारणीकरण को जलवायु कहते हैं।

**Climatic Climax (जलवायु चरम) :** किसी पारिस्थितिक तंत्र में जलवायु कारक के प्रभाव के कारण वनस्पतियों के चरम विकास को जलवायु चरम कहते हैं। इस दशा में उत्पन्न वनस्पति को जलवायु चरम वनस्पति कहते हैं।

**Climax Community (चरम समुदाय) :** किसी आवास में अपने विकास की विभिन्न अवस्थाओं

से गुजरने के बाद स्थिर दशा को प्राप्त सर्वाधिक विकसित पौधों या वनस्पतियों के समुदाय को चरम समुदाय कहते हैं। इसी तरह वनस्पति विकास के अन्तिम अनुक्रम को चरम अनुक्रम (climax succession) कहते हैं तथा इस दशा को प्राप्त वनस्पतियों को चरम वनस्पति कहते हैं।

**Coastal Cliff (तटीय क्लिफ) :** सागरीय तरंगों द्वारा खड़े तटीय भागों में अपरदन द्वारा उत्पन्न क्लिफ सागरीय दृश्यावली का महत्वपूर्ण स्थलरूप है, जिसका ढाल दीवाल जैसा खड़ा होता है, शीर्ष भाग सागर की ओर निकला रहता है जबकि आधार वाला भाग स्थल के अन्दर प्रविष्ट होता है।

**Cockpit (काकपिट) :** चूना पत्थर शैल वाले क्षेत्रों में घुलन द्वारा उत्पन्न तारे की आकृति वाले गर्त को काकपिट कहते हैं। इसके विपरीत दूसरे मतानुसार ऊपरी सतह के ध्वस्त हो जाने से निर्मित खड़ी दीवाल वाले गहरे गड्ढे को काकपिट कहते हैं।

**Cockpit Karst (काकपिट कार्स्ट) :** कार्स्ट प्रदेशों में घुलन क्रिया या ऊपरी सतह के ध्वस्त होने के कारण निर्मित गर्तों वाली स्थलाकृति को काकपिट कार्स्ट कहते हैं।

**Cold Air Mass (ठंडी वायुराशि) :** धरातलीय सतह के तापमान की अपेक्षा उसके ऊपर स्थित कम तापमान वाली वायुराशि को ठंडी वायुराशि कहते हैं।

**Cold Front (शीत वाताग्र) :** शीतोष्ण कटिबन्धी चक्रवातों में शीत वाताग्र वह ढलुआ सतह होता है जिसके सहारे शीत वायु आक्रामक होती है तथा गर्म वायु के क्षेत्र में बलात् प्रवेश करती है तथा गर्म हवा को जबरन ऊपर ठेल देती है तथा अपने आप धरातलीय सतह पर बनी रहती है।

**Cold Front Occlusion (शीत वाताग्र अधिधारण) :** शीत वाताग्र अधिधारण (occlusion) उस समय होता है जब कि शीत

वाताग्र के पीछे की शीत वायु उष्ण वाताग्र के आगे वाली शीत वायु से ठंडी होती है। इस स्थिति में शीत वाताग्र उष्ण वाताग्र का अभिलंघन (overtaking) करके उसे समाप्त कर देता है।

**Cold Point (शीत बिन्दु) :** जिस ऊँचाई पर (ट्रोपोपाज़ पर) ऊँचाई के साथ तापमान में वृद्धि रुक जाती है उसे शीत बिन्दु कहते हैं।

**Cold Wall (शीतल दीवाल) :** संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट तथा गल्फस्टीम के मध्य ठंडे जलमण्डल को शीतल दीवाल कहते हैं।

**Collapse Sink (ध्वस्त रंध्र) :** चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्रों में धरातलीय सतह के नीचे घुलन द्वारा निर्मित गर्त के ऊपर स्थित सतह के ध्वस्त हो जाने से निर्मित छिद्रों को ध्वस्त रंध्र कहते हैं।

**Combined Gas Law (संयुक्त गैस नियम) :** इस नियम के अनुसार दो ज्ञात विचरों (variables) के आधार पर किसी एक अज्ञात विचर का पता लगाया जा सकता है।

**Complex Mountain (जटिल पर्वत) :** पार्श्ववर्ती सम्पीडनात्मक बल (compressional force) के अत्यधिक प्रबल होने के कारण बलन की क्रिया अत्यधिक तीव्र होने के कारण वलित पर्वतों में ग्रीवाखण्ड (nappe) के निर्माण होने से जटिलता आ जाती है, परिणामस्वरूप परिवलित वलन (recumbent folds) बन जाते हैं। इस प्रकार के पर्वतों को जटिल पर्वत कहते हैं।

**Composite Cone (मिश्रित शंकु) :** विभिन्न प्रकार के ज्वालामुखी पदार्थों वाली विभिन्न परतों से निर्मित अत्यधिक ऊँचे शंकु को मिश्रित शंकु कहते हैं।

**Concentration of Thermal Efficiency (तापीय दक्षता का सान्द्रण) :** ग्रीष्मकाल के तीन महीनों में संचित संभाव्य वाष्पीकरण वाष्पोत्सर्जन (potential evapotranspiration) के औसत वार्षिक संभाव्य वाष्पीकरण

वाष्पोत्सर्जन के प्रतिशत को तापीय दक्षता का सान्द्रण कहते हैं। इसे प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है। इस सूचकांक का थार्थवेट ने अपनी जलवायु के वर्गीकरण की योजना में उपयोग किया था।

**Condensation (संघनन) :** जलवाष्प के तरल (जल) या ठोस (हिम) रूप में रूपान्तर की प्रक्रिया को संघनन कहते हैं।

**Conditional Instability (प्रतिबन्धी अस्थिरता) :** ऊपर उठती वायु के संघनन (condensation) के बाद भी ऊपर उठने पर उत्पन्न अस्थिरता को प्रतिबन्धी अस्थिरता कहते हैं।

**Conduction (परिचालन) :** किसी भी वस्तु में पदार्थों के अणुओं द्वारा ऊष्मा के स्थानान्तरण एवं गमन को परिचालन कहते हैं। इस क्रिया के अन्तर्गत एक अणु स्पर्श द्वारा दूसरे अणु को ऊष्मा प्रदान करता है।

**Cone Karst (कोन कार्स्ट) :** कार्स्ट प्रदेश में कई काकपिटों के मिल जाने से उनके मध्य में अवशिष्ट शंक्राकार कटकों (ridges) वाली स्थलाकृति को कोनकार्स्ट कहते हैं।

**Congelifluction (मृदासर्पण) :** मृदासर्पण परिहिमानी क्षेत्रों में पदार्थों के परिवहन का प्रक्रम (process) है जिसके अन्तर्गत जलमिश्रित मलवा (debris) पहाड़ी ढालों से गुरुत्व बल के कारण सामूहिक रूप से नीचे की ओर सरकता है।

**Congelifraction (तुषार अपक्षय) :** कांजेलीफ्रैक्शन या तुषार अपक्षय (frost weathering) परिहिमानी क्षेत्रों में चट्टानों की टूट-फूट तथा विघटन की एक सक्रिय प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत क्रमशः रात में शैलों के सुराखों में जल के जमने (freezing) तथा दिन में पिघलने (thawing) से चट्टानों में क्रमशः फैलाव तथा संकुचन होने से चट्टानों में टूटन की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

**Conjunction (युति) :** पृथ्वी के ओर सूर्य तथा चन्द्रमा की एक सीधी रेखा में स्थिति को युति कहते हैं।

**Connate Water (सहजात जल) :** सागर या झीलों में निक्षेपित अवसादी शैलों के सुराखों में स्थित जल को तलछट जल या सहजात जल कहते हैं।

**Consequent Stream (अनुवर्ती सरिता) :** ढाल के अनुरूप या ढाल का अनुसरण करती हुई प्रवाहित होने वाली सरिता को अनुवर्ती सरिता कहते हैं।

**Conservative Margin (संरक्षी किनारा) :** जब दो प्लेट एक दूसरे से अगल-बगल से गतिशील होते हैं तो रूपान्तर भ्रंश (transform fault) का निर्माण होता है। इसी कारण से प्लेटों के ऐसे किनारों को संरक्षी किनारा या संरक्षी सीमा कहते हैं।

**Conservative Plate Boundary (संरक्षी प्लेट सीमा) :** एक दूसरे के बगल से सरकने वाले दो प्लेटों के किनारों को संरक्षी सीमा इसलिए कहते हैं क्योंकि इनके सहारे न तो पदार्थों का क्षय होता है और न ही निर्माण होता है।

**Constructive Margin (रचनात्मक सीमा) :** मध्य महासागरीय कटकों (mid-oceanic ridges) के सहारे विपरीत दिशाओं में गतिशील होने, अर्थात् अपसारी प्लेटों (divergent plates) के पृष्ठ किनारों (trailing ends) को रचनात्मक प्लेट किनारा (सीमा) इसलिये कहते हैं क्योंकि इनके सहारे नयी बेसाल्ट की क्रस्ट का निर्माण होता है।

**Constructive Plate Boundary (रचनात्मक प्लेट सीमा) :** दो विपरीत दिशाओं में गतिशील प्लेटों की अपसारी (divergent) सीमाओं को रचनात्मक सीमा इसलिए कहते हैं क्योंकि इनके सहारे नयी बेसाल्ट का (नयी क्रस्ट) का निर्माण होता है। यह स्थिति मध्य महासागरीय कटकों के

सहारे होती है। इन्हें अपसारी प्लेट सीमा (divergent plate boundry) भी कहते हैं।

**Constructive Wave (रचनात्मक सागरीय तरंग) :** दीर्घ तरंगदैर्घ्य (long wavelength) एवं निम्न आवृत्ति (frequency) वाली सागरीय तरंगों को रचनात्मक तरंग कहते हैं क्योंकि जब ये शीघ्रता से सागरीय पुलिनों (beaches) पर पहुंचती हैं तो इनके आयतन एवं ऊर्जा में तेजी से क्षय होता है।

**Consumers (उपभोक्ता) :** जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र में परपोषित जन्तुओं को उपभोक्ता कहते हैं।

**Contact Metamorphism (संस्पर्शीय रूपान्तरण) :** तप्त एवं तरल मैग्मा के सम्पर्क में आने वाली शैल का जब अत्यधिक ऊष्मा के कारण रूपान्तरण हो जाता है तो उसे संस्पर्शीय या तापीय रूपान्तरण कहते हैं। यथा: चूनापत्थर शैल का संगमरमर में परिवर्तन।

**Contiguous Zone (अविच्छिन्न मण्डल) :** क्षेत्रीय सागर (territorial sea) से आगे वाले सागरीय भाग के कुछ दूरी तक सम्बद्ध भाग को अविच्छिन्न मण्डल कहते हैं।

**Continental Glacier (महाद्वीपीय हिमनद) :** जब किसी महाद्वीप के विशाल क्षेत्र में मोटी हिम की चादरें बिछ जाती हैं तो उनसे निर्मित हिमनद को महाद्वीपीय हिमनद कहते हैं।

**Convection (संवहन) :** पदार्थों के द्रव्यमान (mass) के संचलन (movement) द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में ऊष्मा के स्थानान्तरण को संवहन कहते हैं। संवहन की प्रक्रिया केवल तरल पदार्थों (जल) या गैसों (वायुमण्डल) में ही प्रभावी हो सकती है।

**Convective Instability (संवहनीय अस्थिरता) :** विभिन्न आर्द्रता वाली वायुराशि (ऊपरी नम परत तथा निचली शुष्क परत) के ऊपरी एवं निचले भागों के विभिन्न दरों से

शीतलन के कारण वायु की स्थिर दशा के अस्थिर दशा में परिवर्तन से जनित वायुमण्डलीय अस्थिरता को संवहनीय अस्थिरता या स्थितिज अस्थिरता (potential instability) कहते हैं। इस दशा के लिए वायु का चक्रवातीय वाताग्र द्वारा या पर्वतीय अवरोध द्वारा बलात् ऊपर उठाया जाना आवश्यक होता है।

**Convergent Circulation (अभिसारी परिसंचरण) :** जब सभी दिशाओं से वायु प्रवाहित होकर न्यूनतम वायुदाब वाले केन्द्र में आकर मिलती है तो वायु के ऐसे परिसंचरण को अभिसारी परिसंचरण कहते हैं।

**Coral Bleaching (प्रवाल विरंजन) :** प्रवाल पालिप (प्रवाल जन्तु) के शरीर के बाह्य भाग में रहने वाली जुक्सान्थलाई शैवाल (algae) के सागरीय जल के औसत तापमान में वृद्धि के कारण निष्कासन के फलस्वरूप प्रवालों के विविध रंगों के समाप्त हो जाने तथा उनके सफेद हो जाने की प्रक्रिया को प्रवाल विरंजन कहते हैं।

**Coral Reefs (प्रवाल भित्ति) :** सागरीय भागों में सागरीय जीव, प्रवाल (मूगों) (प्रवाल पालिप) के मृत हो जाने पर उनके अस्थिपंजरों के समेकन एवं संयोजन से निर्मित भित्तियों को प्रवाल भित्ति कहते हैं।

**Corals (प्रवाल) :** सागरीय जन्तुओं की श्रेणी के तथा जेलीफिश के सम्बन्धी जीवित जन्तु को प्रवाल या पालिप कहते हैं, जो प्रवाल भित्तियों का निर्माण भी करते हैं।

**Cordillera (कार्डिलरा या पर्वत समूह) :** विभिन्न युगों में भिन्न प्रकार से निर्मित पर्वत श्रेणियों (ranges), पर्वत तंत्रों (mountain chains) के सम्मिलित समूह को कार्डिलरा कहा जाता है। यथा : प्रशान्त कार्डिलरा (उत्तरी अमेरिका के प्रशान्त महासागर तटीय पर्वतीय भाग)।

**Core (अन्तरतम) :** पृथ्वी की धरातलीय सतह से 2900 किमी० से प्रारम्भ होकर पृथ्वी के केन्द्र

(6371 किमी०) तक के आन्तरिक भाग को पृथ्वी का क्रोड या अन्तरतम कहते हैं।

**Coriolls Force (कोरियालिस बल) :** क्षैतिज दिशा में प्रवाहित होने वाली हवाओं की दिशा को मोड़ने या विक्षेपित (deflection) करने वाले बल को विक्षेप बल (deflection force) या कोरियालिस बल कहते हैं। कोरियालिस बल अपने आप में कोई बल नहीं है बल्कि यह पृथ्वी की घूर्णन गति (rotational speed) का एक तरह का प्रभाव (effect) है। इसी कारण से कोरियालिस बल या विक्षेप बल को कोरियालिस प्रभाव भी कहते हैं। सर्वप्रथम जी०जी० कोरियालिस ने वायु की दिशा में पृथ्वी के घूर्णन द्वारा उत्पन्न विक्षेप की प्रक्रिया का अध्ययन किया, अतः इस विक्षेप बल को कोरियालिस बल या प्रभाव कहते हैं।

**Corona (कोरोना) :** सौर्यिक वायुमण्डल के सबसे बाहरी मण्डल, जो विरल किन्तु अति तप्त गैसों (एक से दो मिलियन डिग्री केल्विन तापमान) से युक्त होता है, को परिज्वालामण्डल (कोरोना) कहते हैं।

**Co-tidal Lines (समग्वार रेखा) :** एक ही समय पर आने वाले उच्च ज्वारों के स्थानों को मिलाने वाली रेखा को सम ज्वार रेखा कहते हैं।

**Counter-radiation (प्रतिलोम विकिरण) :** वायुमण्डल द्वारा पार्थिव विकिरण (terrestrial radiation) का धरातलीय सतह की ओर वापसी विकिरण की प्रक्रिया को प्रतिलोम विकिरण, पुनर्विकिरण (reradiation) या आकाशीय विकिरण (skyradiation) कहते हैं।

**Counter-radiation (प्रतिलोम विकिरण) :** वायुमण्डल से बादलों, कार्बन डाई आक्साइड, जलवाष्प द्वारा धरातलीय सतह की ओर ऊष्मा ऊर्जा के विकिरण को प्रतिलोम विकिरण या पुनः विकिरण (re-radiation) या आकाशीय विकिरण (sky radiation) कहते हैं।

**Cove (लघु निवेशिका) :** सागर तटीय भाग में सागरीय तरंगों द्वारा कोमल शैलों में अण्डाकार कटान से निर्मित लघु कन्दराओं को लघु निवेशिका या लघु खाड़ी कहते हैं।

**Crag and Tail (श्रृंग एवं पुच्छ) :** ऐसी अपरदित पहाड़ी, जिसका हिमनद के संचरण की दिशा वाला ढाल अधिक अपरदन होने से खड़े ढाल वाला होता है तथा पिछला भाग पूँछ के सामान होता है, को श्रृंग एवं पुच्छ स्थलरूप कहते हैं।

**Crater (क्रेटर) :** ज्वालामुखी के छिद्र के ऊपर स्थित गर्त को क्रेटर कहते हैं। क्रेटर प्रायः कीपाकार (funnel shaped) होता है। एक विस्तृत क्रेटर के अन्तर्गत निर्मित छोटे-छोटे क्रेटर वाली आकृति को घोंसलादार क्रेटर (nested crater) कहते हैं।

**Crater Lake (क्रेटर झील) :** ज्वालामुखी के क्रेटर में जल भर जाने से निर्मित झील को क्रेटर झील कहते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के ओरेगन प्रान्त की क्रेटर लेक इस तरह की झील का प्रमुख उदाहरण है।

**Cretaceous Period (क्रीटैसियस शक) :** यह मेसोजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जिसका समय आज से 13.5 करोड़ (135,000,000) वर्ष पूर्व से 7 करोड़ (70,000,000) वर्ष पहले (कुल अवधि 6.5 करोड़ वर्ष) तक था। इस काल का नामकरण इस अवधि के निक्षेपों में खरिया या चाक की प्रधानता के आधार पर किया गया है। क्रीटैसियस शब्द लैटिन भाषा के क्रीटा (creta) से लिया गया है जिसका अर्थ चाक (chalk, खारिया) होता है।  
**devonian period (डिवोनियन शक) :** यह पैल्योजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जिसका समय आज से 40 करोड़ वर्ष पूर्व प्रारम्भ होकर 35 करोड़ वर्ष पहले समाप्त हो गया (कुल अवधि = 5 करोड़ वर्ष)। इस शक का नामकरण युनाइटेड किंगडम के डिवोनशायर नामक स्थान तथा प्रदेश के आधार पर किया गया है।

**Crust (क्रस्ट) :** पृथ्वी की धरातलीय सतह से नीचे 30 किमी० (अधिकतम 100 किमी०) की गहराई वाले भाग को क्रस्ट कहा जाता है। इसका औसत घनत्व 2.8 से 3.0 होता है।

**Crustal Bending (भूपटलीय बंकन) :** पृथ्वी के अन्तर्जात क्षैतिज संचलन के आमने-सामने क्रियाशील होने के कारण धरातलीय चट्टानों में बंकन (मुड़ाव) को भूपटलीय बंकन कहते हैं। यह बंकन ऊपर की ओर हो सकता है। (इस स्थिति में वलन की अपनति बनती है) या नीचे की ओर हो सकता है (इस स्थिति में वलन की अभिनति का निर्माण होता है)।

**Cryoplain (हिम मैदान) :** परिहिमानी क्षेत्रों (periglacial areas) में तुषार अपक्षय एवं क्रायोप्लनेशन की क्रियाओं द्वारा निर्मित मैदान को क्रायोप्लेन या हिम मैदान कहते हैं।

**Cryoplanation (क्रायोप्लनेशन) :** जलीय अपरदन चक्र में पेनीप्लनेशन की प्रक्रिया के समान परिहिमानी क्षेत्रों में तुषार (frost) के कार्यों द्वारा समस्त धरातलीय भाग के समतलीकरण (planation) की क्रिया को तुषारसमतलीकरण कहते हैं।

**Cuesta (केस्ता) :** झुके हुए स्तरों (dipping beds) वाली शैलों के खड़े भाग का अपरदन होने से निर्मित असममित कटकों (asymmetrical ridges) को केस्ता कहते हैं, जिसका सामने वाला पार्श्व खड़े ढाल वाला (30° से अधिक) तथा विपरीत (पीछे वाला) पार्श्व मन्द ढाल वाला होता है।

**Cusp Beach (कस्प पुलिन) :** सागरीय तटों पर रेत, गोलाश्म (boulder) तथा बजरी (gravels) से निर्मित पतले-पतले कटकों (narrow ridges) से युक्त सागरीय पुलिन को कस्प पुलिन कहते हैं। वास्तव में इन पतले-पतले लम्बे कटकों को कस्प कहते हैं।

**Cutans (कुटान) :** पेड़ों (peds) या एकाकी मृदा कणों के चारों ओर विभिन्न पदार्थों का लेप (coating) होता है। इस तरह के लेपों से युक्त पेड़ों को कुटान कहते हैं। उदाहरण : मृत्तिका कुटान (clay cutan), लौह आक्साइड कुटान, मैंगनीज आक्साइड कुटान आदि।

**Cyclogenesis (चक्रवात जनन) :** वाताग्रों की उत्पत्ति द्वारा चक्रवातों की उत्पत्ति एवं विकास की प्रक्रिया को चक्रवात जनन कहते हैं।

**Cyclones (चक्रवात) :** सामान्य रूप में चक्रवात न्यून वायुदाब के केन्द्र होते हैं, जिनके चारों तरफ लगभग सकेन्द्री समदाब रेखायें विस्तृत होती हैं तथा केन्द्र से बाहर की ओर वायुदाब बढ़ता जाता है, परिणामस्वरूप परिधि से केन्द्र की ओर हवायें चलने लगती हैं, जिनकी दिशा उत्तरी गोलार्द्ध में घड़ी की सूइयों के विपरीत तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में अनुकूल होती है। चक्रवात इस तरह अभिसारी वायु परिसंचरण के तंत्र होते हैं।

**Damage Risk Zone (क्षति जोखिम मण्डल) :** भूकम्प द्वारा होने वाली क्षति के परिणाम के आधार पर निर्धारित विभिन्न मण्डलों को क्षति जोखिम मण्डल कहा जाता है। भारत को 5 भूकम्प क्षति जोखिम मण्डलों में विभाजित किया गया है।

**Decomposers (वियोजक) :** मृत पौधों, जन्तुओं तथा जैविक पदार्थों को वियोजित (सड़ाना-गलाना) करने वाले सूक्ष्म जन्तुओं (जैसे बैक्टीरिया) को वियोजक कहते हैं।

**Deep Focus Earthquake (अत्यधिक गहराई वाले भूकम्प) :** धरातलीय सतह से 250-700 किमी० की गहराई पर उत्पन्न होने वाले भूकम्पों को अत्यधिक गहराई वाले भूकम्प कहते हैं।

**Deep Ocean Currents (गहरे सागर की धारा) :** महासागरीय भागों में पाइक्नोक्लाइन परत के नीचे चलने वाली महासागरीय धाराओं को गहरे सागर की धारा कहते हैं।

**Deep Sea Fans (गहरे सागरीय पंख) :** अन्तः सागरीय कन्दराओं (submarine canyons) के मुहाने पर श्रेणीकृत (graded) अवसादों से निर्मित शंकाकार निक्षेप को सागरीय पंख कहते हैं।

**Deflation (उड़ाव) :** उष्ण शुष्क रेगिस्तानों से असंगठित एवं ढीले पदार्थों, खासकर रेत को वायु द्वारा उड़ाये जाने की प्रक्रिया को उड़ाव कहते हैं।

**Delta (डेल्टा) :** नदियों द्वारा अपने मुहानों पर ग्रीक अक्षर (Δ) के आकार में अवसादों के निक्षेप से निर्मित स्थलरूप को डेल्टा कहते हैं।

**Delta Lake (डेल्टा झील) :** डेल्टाई भागों में नदियाँ कई जल वितरकों (distributaries) से होकर प्रवाहित होती हैं। दो शाखाओं के मध्य निचले भागों में जल के अवरुद्ध हो जाने से निर्मित झील को डेल्टा झील कहते हैं।

**Delta Plain (डेल्टा मैदान) :** नदियों के द्वारा निक्षेप निर्मित डेल्टा प्रदेश को डेल्टा मैदान कहते हैं। भारत का गंगा डेल्टा मैदान प्रमुख उदाहरण है।

**Demoiselles (भूस्तम्भ) :** उष्ण शुष्क रेगिस्तानी भागों में कठोर एवं कोमल शैलों के लम्बवत रूप में होने से कठोर शैलों के बीच वाली कोमल शैल के अपरदन के कारण कठोर शैल वाले स्तम्भों का निर्माण हो जाता है जिन्हें भूस्तम्भ कहते हैं।

**Dendritic Drainage Pattern (वृक्षाकार / पादपाकार अपवाह तंत्र) :** किसी चौरस तथा सपाट धरातल वाले भाग में वृक्ष की शाखाओं के समान विकसित सरिताओं के क्रम को वृक्षाकार अपवाह तंत्र कहते हैं।

**Density Current (घनत्व तरंग) :** गुरुत्व बल द्वारा चालित अन्तः सागरीय धाराओं को घनत्व तरंग या घनत्व धारा कहते हैं, यथा : आविल धारा (turbidity current)।

**Denudation Chronology (अनाच्छादन कालानुक्रम)** : किसी भी प्रदेश में अनाच्छादन (अपक्षय एवं अपरदन) के ऐतिहासिक अनुक्रम को अनाच्छादन कालक्रम कहते हैं।

**Denudational Processes (अनाच्छादनात्मक प्रक्रम)** : स्थलरूपों को अपक्षय, अपरदन एवं निक्षेपण द्वारा निर्मित करने, प्रभावित करने एवं परिमार्जित करने वाले प्रक्रमों को सम्मिलित रूप से अनाच्छादन के प्रक्रम कहते हैं।

**Depositional Plain (निक्षेपजनित मैदान)** : अपरदन के विभिन्न प्रक्रमों या कारकों यथा : नदी, पवन, हिमनदी, हिमानी, सागरीय तरंग आदि द्वारा लाये गये अवसादों के निक्षेपण से निर्मित मैदानों को निक्षेपजनित मैदान कहते हैं। उदाहरण : जलोढ़ या बाढ़ मैदान (नदी द्वारा), मरु मैदान (वायु द्वारा), आउटवाश मैदान (हिमानी द्वारा), टिल मैदान (हिमानी द्वारा), तरंग निक्षेपित मैदान आदि।

**Desert Varnish (मरु वार्निश)** : उष्ण शुष्क मरुस्थली भागों की पथरीली सतह पर विखरे पड़े बोल्टर, पेबुल तथा अन्य प्रकार के शिलाखण्डों की वाह्य सतहों पर लौह आक्साइड, सिलिका आदि के गहरे लाल या काले रंग की कोटिंग को मरु वार्निश कहते हैं।

**Desilication (सिलिका का पृथक्करण)** : सिलिका - युक्त शैलों से सिलिका के अलग हो जाने की क्रिया को डीसिलिकेशन या सिलिका का पृथक्करण कहते हैं।

**Destructive Margin (विनाशी किनारा)** : दो अभिसारी प्लेटों (converging plates) के अग्रभागों को विनाशी प्लेट किनारा (सीमा) इसलिए कहते हैं कि प्लेटों के अभिसरण के कारण अपेक्षाकृत भारी प्लेट के अग्रभाग का अपेक्षाकृत कम भारी प्लेट के नीचे क्षेपण (subduction) हो जाने से प्लेट के अग्रभाग (क्रस्ट) की क्षति हो जाती है।

**Destructive Plateboundary (विनाशी प्लेट सीमा)** : आमने-सामने अभिसरित (converge) होने वाले प्लेटों के अग्रिम किनारों (leading edges) को विनाशी या अभिसारी (convergent) प्लेट सीमा कहते हैं। इस सीमा के सहारे अपेक्षाकृत भारी प्लेट के अग्रभाग का हल्के प्लेट के नीचे क्षेपण (subduction) भाग का क्षय हो जाता है। जिस कारण भारी प्लेट के क्षेपित (subducted) भाग का क्षय हो जाता है। इसी क्षय के कारण इसे विनाशी प्लेट किनारा कहते हैं।

**Destructive Sea Waves (विनाशी सागरीय तरंग)** : छोटी तरंगदैर्घ्य, ऊंचे शिखर एवं उच्च आवृत्ति वाली सागरीय तरंगों को विध्वंसक सागरीय तरंग कहते हैं क्योंकि जब ये तीव्र ढाल वाले सागरीय तटों से टकराती हैं तो अपरदन करती हैं एवं पुलिनो का विनाश करती हैं।

**Dew (ओस)** : धरातलीय सतह पर विकिरण शीतलन (radiation cooling) या सम्पर्कीय शीतलन (contact cooling) के द्वारा आर्द्र वायु के संघनन (हिमांक के ऊपर) के बाद बिना किसी आर्द्रता नाभिक के धरातलीय सतह पर किसी वस्तु (यथा-पौधों की पत्तियां) पर जलवाष्प के सीधे रूप में जमाव को ओस कहते हैं।

**Dew Point (ओसांक)** : जिस तापमान पर वायु संतृप्त हो जाती है, अर्थात् जिस तापमान पर एक निश्चित समय में निश्चित आयतन वाली वायु की आर्द्रता धारण करने की क्षमता तथा उसमें स्थित निरपेक्ष आर्द्रता बराबर हो जाय, उसे ओसांक कहते हैं।

**Diabatic Process (डायबेटिक प्रक्रिया)** : किसी भी वायु आयतन तथा उसकी नमी की मात्रा में बिना कोई परिवर्तन कि उसके तापमान परिवर्तन (तापमान में वृद्धि एवं कमी) की प्रक्रिया को डायबेटिक प्रक्रिया कहते हैं।

**Diastrophic Movement (पटलविरूपणी संचलन) :** धरातलीय सतह के नीचे आन्तरिक भाग से उत्पन्न होने वाली लम्बवत् एवं क्षैतिज दोनों गतियों को पटलविरूपणी संचलन इसलिए कहा जाता है कि इसके द्वारा धरातलीय सतह पर वृहदस्तरीय उच्चावच्चों के निर्माण के कारण विरूपण (deformation) हो जाता है।

**Diastrophic Plateau (पटलविरूपणी पठार) :** भूपटल में वृहदस्तरीय उत्थान के कारण निर्मित पठार को पटलविरूपणी पठार कहते हैं। विश्व के अधिकांश पठारों का निर्माण अन्तर्जात पटलविरूपणी बलों के लम्बवत् एवं क्षैतिज संचलन द्वारा हुआ है, यथा : अन्तरापर्वतीय पठार (तिब्बत का पठार), गिरिपद पठार आदि।

**Diatoms (डायाटम) :** डायाटम एक कोशिका वाले सूक्ष्म फाइटोप्लैंकटन (पादक प्लैंकटन) होते हैं जो सागरीय पर्यावरण में प्रमुख प्राथमिक उत्पादक हैं।

**Diffuse Blue Light (विसरित नीला प्रकाश) :** सौर्यिक विकिरण के प्रकीर्ण (scattered) एवं विसरित (diffused) अंश, जो पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाता है, को विसरित नीला प्रकाश या विसरित दिवा प्रकाश (diffuse day light) कहते हैं।

**Diffuse Reflection (विसरित प्रत्यावर्तन) :** धूलि एवं जलकणों द्वारा प्रवेशी सौर्यिक विकिरण तरंगों के प्रकीर्णन की प्रक्रिया, जबकि इन कणों की व्यास प्रवेशी सौर्यिक विकिरण की तरंगदैर्घ्य (wavelengths) से बड़ी होती है, को विसरित प्रत्यावर्तन कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा सौर्यिक विकिरण का कुछ अंश शून्य (space) में वापस लौट जाता है तथा कुछ अंश निचले वायुमण्डल में बना रहता है।

**Dip (नति या नमन) :** चट्टानों के स्तरों (beds) के क्षैतिज तल के सहारे कोणिक झुकाव को नति या नमन कहते हैं। इस तरह नति से दो बातें स्पष्ट होती हैं : (1) नति चट्टानों की परत तथा क्षैतिज

तल (horizontal plane) के बीच के ढाल के कोण को प्रदर्शित करती है, (2) नति स्तर के नीचे की आरे ढाल की दिशा को बताती है (यथा: नति  $60^\circ$  द०)।

**Diurnal Freeze-thaw Cycle (दैनिक हिमीकरण - मिहद्रवण चक्र) :** परिहिमानी क्षेत्रों में चट्टानों के सुराखों में जल के रात में जमने एवं दिन में तापमान में वृद्धि के कारण पिघलने की क्रिया की प्रतिदिन पुनरावृत्ति (repetition) के क्रम को दैनिक हिमीकरण-हिमद्रवण चक्र कहते हैं।

**Divergent Circulation (अपसारी परिसंचरण) :** उच्चतम वायुदाब वाले केन्द्र से बाहर की ओर वायु के चारों दिशाओं में परिसंचरण को अपसारी परिसंचरण कहते हैं।

**Doctor (डाक्टर) :** पश्चिमी सहारा में, मुख्यरूप से गायना के तटीय भाग में, गर्म एवं शुष्क हरमट्टान पवन को इसलिए डाक्टर कहते हैं कि हरमट्टान के आते ही मौसम सुहावना हो जाता है।

**Doldrum (डोलड्रम) :** भूमध्य रेखा के दोनों ओर  $5^\circ$  अक्षांशों के बीच स्थित विच्छिन्न (discontinuous) न्यून दाब की मेखला को, जिसे सामान्यतया भूमध्यरेखीय गर्त (equatorial trough) कहते हैं, को शान्त पेटी या डोलड्रम कहते हैं।

**Doline (डोलाइन) :** अत्यधिक विस्तृत विलयन छिद्रों (swallow holes) को डोलाइन कहते हैं। सर्बिया में डोलाइन को डोलिनास कहते हैं।

**Dome Mountain (गुम्बदाकार पर्वत) :** पृथ्वी के उपरिमुखी अन्तर्जात बल के कारण धरातलीय भाग में चाप (arch) के आकार में उभार होने से निर्मित पर्वत को गुम्बदनुमा पर्वत कहते हैं।

**Dome Plateau (गुम्बदाकार पठार) :** वलन की क्रिया द्वारा जब स्थलखण्ड में इस तरह उत्थान हो जाता है कि बीच का भाग ऊँचा होता है तथा किनारे वाले भाग गोलाकार होते हैं तो उसे

गुम्बदाकार पठार कहते हैं। ज्वालामुखी उद्गार के समय भी भूपटल में विस्तृत उभार के कारण गुम्बदाकार पठार का निर्माण होता है।

**Dominant Stratum (प्रभावी स्तर) :** वनस्पतियों की लम्बवत संरचना में सबसे ऊपरी स्तर को प्रधान स्तर कहते हैं।

**Dormant Volcano (प्रसुप्त ज्वालामुखी) :** उन ज्वालामुखियों को प्रसुप्त ज्वालामुखी कहते हैं जो उद्गार के बाद दीर्घ अवधि तक शांत पड़े रहते हैं परन्तु उनसे लम्बे अन्तराल के बाद अचानक उद्गार प्रारम्भ हो जाता है, अर्थात् वे पुनः जागृत हो जाते हैं।

**Downward Movement (अधोमुखी संचलन) :** जब अन्तर्जात क्षैतिज बलों (सम्पीडनात्मक बल) के कारण धरातलीय सतह का भाग नीचे झुक जाता है तो उसे अधोमुखी संचलन कहते हैं।

**Downwarp (अवसंवलन) :** अभिसारी (convergent) क्षैतिज संचलन के कारण धरातलीय सतह में इस तरह मुड़ाव (बंकन, bending) होता है कि बीच का भाग नीचे धंस जाता है तथा बेसिन का निर्माण होता है। इस तरह के भूपटलीय बंकन को अवसंवलन कहते हैं।

**Downwelling Ocean Currents (डाउनवेलिंग महासागरीय धारा) :** अधिक घनत्व वाले सागरीय जल के नीचे जाने (downwelling या sinking) से जनित महासागरीय धाराओं को डाउनवेलिंग सागरीय धारा कहते हैं।

**Drainage Pattern (अपवाह प्रतिरूप) :** किसी भी प्रदेश में या क्षेत्र में अपवाह तंत्र (drainage system) के ज्यामितीय आकार तथा सरिताओं की स्थानिक व्यवस्था (spatial arrangement) को अपवाह प्रतिरूप कहते हैं।

**Drainage System (अपवाह तंत्र) :** किसी भी प्रदेश या क्षेत्र में नदियों के स्वभाव, उनकी उत्पत्ति तथा समय के साथ उनके विकास के क्रम को अपवाह तंत्र कहा जाता है। वास्तव में

किसी प्रदेश की समस्त नदियों एवं उनकी सहायक जलधारों के तंत्र को अपवाह तंत्र कहते हैं। इसके अन्तर्गत नदियों के उद्भव एवं विकास का भी अध्ययन किया जाता है।

**Drapes (ड्रेप) :** कन्दरा की छत से लटकने वाले सूई के आकार वाले ड्रिपस्टोन के समूह को ड्रेप या कर्टेन कहते हैं।

**Drikanter (ड्राइ काण्टर) :** पथरीले उष्ण मरुस्थलों की नग्न सतह पर पवन द्वारा अपघर्षित 3 फलक (facets) वाले शिलाखण्डों को ड्राइकाण्टर कहते हैं।

**Drift (प्रवाह) :** तीव्र पवन वेग से प्रेरित होकर सागरीय सतह के जल के आगे बढ़ने को प्रवाह कहते हैं। उदाहरण : उत्तरी अटलाण्टिक प्रवाह, द० अटलाण्टिक प्रवाह आदि।

**Drumlin (ड्रमलिन) :** हिमनद के निक्षेप से निर्मित उल्टी नाव या उल्टे कटे अण्डे के आकार वाले स्थलरूप को ड्रमलिन कहते हैं।

**Dry Adiabatic Rate (शुष्क एडियाबेटिक दर) :** किसी भी ऊपर उठती वायु के ओसांक के पहले प्रति 1000 मीटर की ऊँचाई पर 10°C तापमान में कमी या नीचे उतरती वायु के 1000 मीटर पर 10°C तापमान में वृद्धि को शुष्क एडियाबेटिक दर कहते हैं।

**Dualistic Concept (द्वैतवादी संकल्पना) :** पृथ्वी सहित ग्रहों की दो या अधिक तारों के सहयोग से उत्पत्ति की संकल्पना को द्वैतवादी संकल्पना कहते हैं। यथा : जेम्स जीन्स की ज्वारीय परिकल्पना।

**Dust Bowls (अंधड़) :** धूल भरे तूफानों की अत्यधिक घटनाओं के कारण संयुक्त राज्य के कन्सस, टेक्सास तथा ओक्लाहामा प्रान्तों के विस्तृत भूभाग अंधड़ क्षेत्र कहे जाते हैं।

**Dyke (डाइक) :** ज्वालामुखी उद्गार के समय अवसादी शैलों में लम्ब रूप में प्रविष्ट मैग्मा जब शीतल होकर ठोस रूप धारण करता है तो दीवाल की तरह मैग्मा की आकृति को डाइक कहते हैं।

**Dynamic Cyclone (गतिक चक्रवात) :** वास्तविक सामान्य शीतोष्ण कटिबन्धी चक्रवातों को गतिक चक्रवात इसलिए कहते हैं क्योंकि इनका निर्माण गतिमान ठंडी ध्रुवीय वायुराशियों तथा गर्म एवं आर्द्र सागरीय उष्णकटिबन्धीय वायुराशियों के अभिसरण के कारण होता है।

**Dynamic Lifting (गतिक उत्थापन) :** सूर्याताप द्वारा धरातलीय सतह के गर्म होने से उसके सम्पर्क में आने वाली वायु के गर्म होकर ऊपर उठने की प्रक्रिया को गतिक उत्थापन या संवहनीय उत्थापन कहते हैं।

**Dynamic Metamorphism (गतिक रूपान्तरण) :** जब सम्पीडन (compression) के कारण तथा उससे जनित ऊष्मा द्वारा अवसादी शैलों का विस्तृत क्षेत्र में रूपान्तरण होता है तो उसे गतिक रूपान्तरण कहते हैं। पर्वत निर्माण के समय इस तरह का शैलों का रूपान्तरण होता है।

**Earthquake (भूकम्प) :** किसी ज्ञात अथवा अज्ञात वाह्य या अन्तर्जात कारणों से पृथ्वी के भूपटल में तीव्र गति से पैदा होने वाली कम्पन को भूकम्प कहते हैं।

**East Boundary Current (पूर्वी सीमा धारा) :** महासागरीय संचरण जायर की पूर्वी सीमा बनानी वाली तथा महासागरीय बेसिन के पूर्वी किनारे से चलने महासागरीय धाराओं को पूर्वी सीमा धारा कहते हैं।

**Ebb (भाटा) :** उच्च ज्वार के बाद सागरीय जल के तल में गिरावट होने तथा सागरीय जल के तट से पीछे हटने अर्थात् सागर की ओर वापस लौटने की स्थिति को भाटा कहते हैं।

**Ebb Currents (भाटा तरंग) :** पीछे लौटते अर्थात् सागर की ओर लौटते ज्वार के कारण उत्पन्न धारा को भाटा धारा (तरंग) कहते हैं।

**Ebb Tides (भाटा ज्वार) :** ज्वारीय उभार के सागरीय जल के सागर की ओर लौटने को भाटा ज्वार कहते हैं।

**Ecessis (आस्थापन) :** किसी क्षेत्र या स्थान में वनस्पतियों के विकास की कड़ी में पौधों के बीजों के जमीन पर स्थापित होने तथा उनसे पौधों के जनन की अवस्था को आस्थापन कहते हैं।

**Ecological Productivity (पारिस्थितिकीय उत्पादकता) :** प्रतिक्षेत्र इकाई एवं प्रति समय इकाई में प्राथमिक उत्पादक हरे पौधों द्वारा जैविक उत्पादन की दर को पारिस्थितिकीय या प्राथमिक उत्पादकता कहते हैं।

**Ecology (पारिस्थितिकी) :** पारिस्थितिकी वह विज्ञान है जिसके अन्तर्गत किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र में एक तरफ अजैविक एवं जैविक संघटकों के मध्य, तथा दूसरी तरफ जैविक संघटकों के मध्य अन्तर्क्रियाओं एवं अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं।

**Ecosystem (पारिस्थितिक तंत्र) :** पारिस्थितिक तंत्र एक कार्यशील क्षेत्रीय इकाई होता है जिसके भौतिक, ऊर्जा तथा जैविक संघटकों के मध्य अन्तर्क्रियाएँ होती रहती है।

**Ecosystem Biodiversity (पारिस्थितिक तंत्र जैव विविधता) :** विभिन्न पर्यावरणीय दशाओं वाले विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों में पौधों एवं जन्तुओं की प्रजातियों की विभिन्नता को पारिस्थितिक तंत्र जैव विविधता कहते हैं।  
**ecotourism (पारिस्थितिकी पर्यटन) :** प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों में दृश्यावलोकन, पक्षियों तथा जन्तुओं के अवलोकन हेतु किये जाने वाले पर्यटन को पारिस्थितिकी पर्यटन कहते हैं।

**Edaphons (इडैफन) :** मिट्टियों में रहने वाले जीवों को इडैफन कहते हैं। इनका आकार 20 सेण्टीमीटर से 20 माइक्रोमीटर तक होता है।

**Effective Radiation (प्रभावी विकिरण) :** पृथ्वी की सतह से वायुमण्डल में होने वाले दीर्घतरंग विकिरण को प्रभावी विकिरण कहते हैं क्योंकि यह निचले वायुमण्डल को गरम करने में सहायता करता है।

**Ekman Spiral (एकमैन स्पाइरल) :** कोरियालिस विक्षेप बल द्वारा जनित सर्पिलाकार धाराओं को एकमैन महोदय के नाम पर एकमैन स्पाइरल कहते हैं।

**Ekman Spirals (एकमैन स्पाइरल) :** एकमैन स्पाइरल आरेख द्वारा समान कोणिक स्पाइरल (equi-angle spirals) के माध्यम से हवाओं में ऊँचाई के साथ उनकी दिशा में परिवर्तन को दर्शाया जाता है।

**Ekman Transport (एकमैन परिवहन) :** पवन दिशा के दाहिनी ओर जल के सामूहिक परिवहन को एकमैन परिवहन कहते हैं।

**El Nino (एल निनो) :** एल निनो मौसम की एक महत्वपूर्ण परिघटना (phenomenon या event) है जो सक्रिय होने पर उष्ण कटिबन्धी प्रशान्त महासागर में, मुख्य रूप से दक्षिणी प्रशान्त महासागर में सामान्य जल प्रवाह एवं सामान्य पवन परिसंचरण की स्थिति एवं दिशा को उलट देती है। एल निनो को एक विपरीत धारा (counter current) के रूप में भी जाना जाता है जो दक्षिणी अमेरिका के पेरू एवं चिली तट के पश्चिम में तट से 180 किमी० दूर 3° द० से 36° द० अक्षांशों के बीच उत्तर से दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती है।

**Elastic Rebound Theory (प्रत्यास्थ पुनश्चलन सिद्धान्त) :** यह यच० एफ० रीड द्वारा प्रतिपादित भूकम्प आने का एक सिद्धान्त है जो भूपटल की शैलों की लोचकता (elasticity) तथा भूपटलीय भ्रंशन (crustal faulting) पर आधारित है

**Elbow of Capture (अपहरण की कुहनी) :** जहां पर सरिता के ऊपरी भाग का अपहरण होता है, वहां पर अपहृत नदी अपहरण करने वाली नदी में समकोण बनाकर मुड़कर मिल जाती है। इस समकोण वाले मोड़ या घुमाव को अपहरण की कुहनी कहते हैं।

**Eluviation (अपवहन) :** मृदा मण्डल के ऊपरी संस्तर से पदार्थों के नीचे जाने की क्रिया को अपवहन या अपक्षालन (leaching) कहते हैं। अपवहन की क्रिया जल के अधोगमन (infiltration) द्वारा होता है।

**Eluviation Zone (अपवहन मण्डल) :** मृदा परिच्छेदिका के A, संस्तर से सिलिकेट, मृत्तिका, लौह आक्साइड, अल्यूमिनियम आदि खनिजों का नीचे की ओर अपवहन (eluviation) होता है, जिस कारण A, संस्तर को अपवहन मण्डल कहते हैं।

**Empirical Classification (आनुभविक वर्गीकरण) :** पर्यवेक्षित जलवायु के आंकड़ों तथा वनस्पति, मृदा, मृदाजनन प्रक्रिया, शैल अपक्षय, कृषि फसलों, मानव आदि पर जलवायु के प्रभावों के आधार पर विश्व के जलवायु के वर्गीकरण को आनुभविक वर्गीकरण कहते हैं।

**Endangered Species (संकटापन्न प्रजाति) :** पौधों एवं जन्तुओं की उन प्रजातियों को संकटापन्न प्रजाति कहते हैं जिनके 70 प्रतिशत सदस्यों (population) का विगत 10 वर्षों में क्षय हो चुका हो।

**Endogenous Force (अन्तर्जात बल) :** पृथ्वी के आन्तरिक भाग से तापीय विषमता के कारण उत्पन्न होने वाले लम्बवत् एवं क्षैतिज बलों को अन्तर्जात बल कहते हैं।

**Energy Pyramid (ऊर्जा पिरैमिड) :** किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र में आहार जाल के प्रत्येक पोषण स्तर पर प्रति क्षेत्र इकाई (वर्ग मीटर) में प्रति समय इकाई (एक वर्ष) में उपयोग की गयी ऊर्जा की कुल मात्रा को प्रदर्शित करने वाले पिरैमिड को ऊर्जा पिरैमिड कहते हैं।

**Environmental Lapse Rate (पर्यावरणीय पतन दर) :** प्रति 1000 मीटर की ऊँचाई पर ऊपर उठती वायु के तापमान में 65°C की दर से कमी को पर्यावरणीय पतन दर या सामान्य पतन दर कहते हैं।

**Eocene Period (इयोसीन शक) :** यह सेनोजोशक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जो आज से 7 करोड़ वर्ष प्रारम्भ होकर 4 करोड़ वर्ष पूर्व समाप्त हो गया (कुल अवधि = 3 करोड़ वर्ष)। इस शक का नामकरण 'इयोस' के आधार पर किया गया है, जिसका अर्थ होता है 'दिन की शुरूआत' (day break)।

**Epeirogenetic Movement (महादेशीय संचलन) :** पृथ्वी के अन्तर्जात बलों द्वारा महाद्वीपों में वृहद्स्तरीय उत्थान तथा अबतलन, एवं निर्गमन (emergence) तथा निमज्जन (submergence) की घटनायें होती रहती हैं। इन क्रियाओं को सक्रिय करने वाली गतियों, जिनके द्वारा महाद्वीपों के विस्तृत क्षेत्र प्रभावित होते हैं, को महादेशीय संचलन कहते हैं। epeirogenetic ग्रीक भाषा के दो शब्दों से बना है : 'एपीरोज' (epiros) जिसका शाब्दिक अर्थ महाद्वीप होता है तथा 'जेनेसिस' (genesis), जिसका अर्थ 'उत्पत्ति' (जनन) होता है।

**Epicenter (भूकम्प अधिकेन्द्र) :** धरातलीय सतह के उस भाग या स्थान को भूकम्प अधिकेन्द्र कहा जाता है जहाँ पर भूकम्पीय लहरों को सबसे पहले अनुभव किया जाता है।

**Epicentre (भूकम्प अभिकेन्द्र) :** भूकम्प मूल के ठीक ऊपर धरातलीय सतह के ऊपर स्थित उस केन्द्र को भूकम्प अभिकेन्द्र कहते हैं जहाँ भूकम्पीय लहरों का ज्ञान सबसे पहले होता है।

**Epiphytes (उपरिवासी पौधे) :** उष्णकटिबन्धी क्षेत्रों में वृक्षों के तनों, शाखाओं, टहनियों तथा पत्तियों एवं झाड़ियों पर उगने वाली लताओं को उपरिवासी कहते हैं क्योंकि इनकी जड़ें भूमि में स्थापित नहीं होती हैं।

**Eiplanation (समतलीकरण) :** परिहिमानी क्षेत्रों में विभिन्न उच्चावच्चों वाले धरातलीय भाग के समतलीकरण की प्रक्रिया के लिए डी० डी० केर्न्स (Cairnes) ने सन् 1912 में इक्वीप्लनेशन नामावली का उपयोग किया। यह प्रक्रिया क्रायोप्लनेशन के ही समान होती है।

**Equatorial Westerlies (विषुवतरेखीय पछुवा हवा) :** डोलड्रम की पेटी में या अन्तरा उष्ण कटिबन्धी अभिसरण की पेटी (ITC, inter-tropical convergence belt) में पश्चिम से पूर्व दिशा में प्रवाहित होने वाली हवाओं को विषुवतरेखीय पछुवा पवन कहते हैं।

**Erg (अर्ग) :** गतिशील रेत वाले उष्ण मरुस्थलों को रेग कहते हैं। एक औसत आकार वाले रेग का क्षेत्रफल 1,88,000 वर्ग किमी० होता है जबकि विश्व का सर्वाधिक विस्तृत अर्ग अरब का रबखाली अर्ग है जिसका क्षेत्रफल 5,60,000 वर्ग किमी० है।

**Erosional Plain (अपरदनजनित मैदान) :** विभिन्न भ्वाकृतिक प्रक्रमों (processes, कारकों) द्वारा अपरदन के कारण उत्पन्न मैदानों को अपरदनजनित मैदान कहते हैं। उदाहरण : समप्राय मैदान (peneplain- नदी द्वारा), पेडीप्लेन (वायु एवं जल द्वारा), एचप्लेन (अपक्षय द्वारा), क्रायोप्लेन (परिहिमानी द्वारा), हिमानी मैदान आदि।

**Esker (एस्कर) :** हिमनद की हिम के पिघलने से बनी जलधाराओं द्वारा वारीक मलवा (अवसाद) के निक्षेपण से निर्मित लम्बे, पतले तथा घुमावदार कटक (ridges) को एस्कर कहते हैं।

**Estuarine Delta (ज्वारनदमुखी डेल्टा) :** नदियों के एस्चुअरी के अवसादों से भर जाने के कारण निर्मित लम्बे तथा संकरे (पतले) डेल्टा को ज्वारनदमुखी डेल्टा कहते हैं।

**Etchplain (एचप्लेन) :** अफ्रीका के अर्द्ध शुष्क सवाना प्रदेश में अधिक गहराई तक चट्टानों के रासायनिक अपक्षय से जनित सतह वाले मैदान को एचप्लेन कहा गया है।

**Eugeosyncline (केन्द्रीय भूसन्नति) :** सागरीय किनारों पर स्थित ऐसी भूसन्नति को केन्द्रीय भूसन्नति कहते हैं जिसमें ज्वालामुखी पदार्थ तथा क्लास्टिक अवसादों का मोटा निक्षेप पाया जाता है।

**Evaporation (वाष्पीकरण) :** तरल (जल) के ऊष्मा की ऊर्जा के विनियोग से गैसीय रूप (जलवाष्प) में परिवर्तन की प्रक्रिया को वाष्पीकरण कहते हैं।

**Evapotranspiration (वाष्पन-वाष्पोत्सर्जन) :** मिट्टियों से जल के वाष्पीकरण द्वारा क्षय, पौधों की पत्तियों की सतहों से जल के वाष्पीकरण द्वारा क्षय, एवं पौधों की पत्तियों से जल के वाष्पोत्सर्जन द्वारा क्षय की सभी प्रक्रियाओं को सम्मिलित रूप से वाष्पन-वाष्पोत्सर्जन कहते हैं।

**Exclusive Economic Zone (विशिष्ट आर्थिक मण्डल) :** आधार रेखा से सागर की ओर 200 नौटिकल मील तक की दूरी वाले भाग को विशिष्ट आर्थिक मण्डल (EEZ) कहते हैं। इस क्षेत्र पर तटवर्ती देश का पूर्ण अधिकार होता है।

**Exfoliation (अपदलन) :** अपरदन द्वारा ऊपरी चट्टानों के अपरदित हो जाने के बाद नीचे दबी ग्रेनाइट चट्टानों के बाहर आ जाने पर दाबमुक्ति एवं तापमान के कारण ऐसी चट्टानों से पतली-पतली परतें उधड़ने लगती हैं। इस क्रिया को अपदलन या प्याज अपक्षय (onion weathering) कहते हैं।

**Exfoliation Dome (एक्सफोलिएशन गुम्बद) :** आग्नेय शैल के अपदलन (exfoliation) या प्याज अपक्षय (onion weathering) के कारण शैल समूह की ऊपरी पतली-पतली परतों के उधड़ जाने के कारण निर्मित गुम्बदाकार आकृति को अपदलन गुम्बद कहते हैं।

**Exogenetic Force (वहिर्जात बल) :** वायुमण्डल से आर्द्रता एवं तापमान में विषमताओं से उत्पन्न होने वाले अनाच्छादन (denudation अपरदन + अपक्षय) के प्रक्रमों (processes, यथा : नदी, हिमानी, वायु, सागरीय तरंग, भूमिगत जल, परिहिमानी आदि) को बहिर्जात बल या प्रक्रम कहते हैं। ये प्रक्रम अन्तर्जात बलों द्वारा उत्पन्न धरातलीय असमानताओं (विभिन्न प्रकार के समतलीकरण (planation or gradation) करते हैं।

**Extinct Volcano (विलुप्त या शान्त ज्वालामुखी) :** जब ज्वालामुखी का उद्गार पूर्णतया समाप्त हो जाता है तथा उसके क्रेटर में जल भर जाने से झीलें बन जाती हैं तथा उससे पुनः उद्गार की सम्भावना नहीं होती है तो उसे शान्त ज्वालामुखी कहते हैं।

**Extinctspecies (विलुप्त प्रजाति) :** पौधों एवं जन्तुओं की उन प्रजातियों को विलुप्त प्रजाति कहते हैं जिनका प्राकृतिक वन्य क्षेत्रों तथा प्रबन्धित क्षेत्रों (यथा : फसलों के क्षेत्र) से पूर्णतया सफाया हो गया हो।

**Faculae (फैकुला) :** सूर्य के प्रकाशमण्डल (फोटोस्फीयर) में शीत एवं तप्त चमकने वाले भाग को अतिभा या फैकुला कहते हैं।

**Fan Fold (पंखावलन) :** विस्तृत समपनति (anticlinorium) के अन्दर निर्मित छोटी-छोटी कई अपनतियों वाले वृहदाकार वलन को पंखा वलन कहते हैं।

**Faros (फरोस) :** छिछली लैगूनों वाले लघु एटालों की शृंखला को फरोस कहते हैं।

**Fault (भ्रंश) :** तनावमूलक संचलन (tensional movement) की तीव्रता के कारण जब भूपटल में एक तल (plane) के सहारे चट्टानों का स्थानान्तरण हो जाता है, तो उत्पन्न संरचना को भ्रंश कहते हैं।

**Fault Dip (भ्रंश नति) :** भ्रंश तथा क्षैतिज तल के बीच के झुकाव के कोण की 'विभंग तल की नति' कहा जाता है।

**Fault Plane (भ्रंश तल या विभंग तल) :** ' भ्रंश या विभंग तल' वह सतह होती है जिसके सहारे संचलन होने से चट्टानों का स्थानान्तरण होता है। यह भ्रंश तल लम्बवत्, क्षैतिज, झुका हुआ, वक्राकार या किसी भी प्रकार का हो सकता है।

**Fault Scarp (भ्रंश कगार) :** भ्रंश के कारण स्थलीय सतह पर निर्मित खड़े ढाल वाले किनारे को 'भ्रंश कगार' कहते हैं।

**Felsic Lava (फेल्सिक लावा) :** हल्के रंग के खनिजों (क्वार्ट्ज तथा फेल्सपार) वाले एवं अधिक सिलिकायुक्त लावा को फेल्सिक लावा (felsic = fel (s) = feldspar, + ic) कहते हैं।

**Ferrel Cell (फेरेल कोशिका) :** उष्ण कटिबन्धी हैडिली कोशिका एवं ध्रुवीय कोशिका के मध्य, अर्थात् दोनों गोलार्द्ध में 30°-60° अक्षांशों के मध्य स्थित पवन परिसंचरण की तापीय अप्रत्यक्ष (अर्थात् गतिजन्य) कोशिका को फेरेल महोदय के नाम पर फेरेल कोशिका कहते हैं।

**Ferrel's Law (फेरल का नियम) :** फेरल का नियम हवाओं के विक्षेपण (deflection) से सम्बन्धित है। हवाओं की दिशा के सन्दर्भ में इस नियम के अनुसार, 'जिस दिशा में पवन प्रवाहित हो रही हो उस दिशा में मुंह करके खड़ा हुआ जाये (अथवा जिस दिशा से हवा आ रही हो उस ओर पीठ करके खड़ा हुआ जाये) तो हवायें उत्तरी गोलार्द्ध में दाहिनी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बांयी ओर मुड़ जाती हैं।'

**Fetch (फेच) :** महासागरीय भागों में जिस जलीय सतह से होकर लहरें अग्रसर होती हैं उसे फेच कहते हैं।

**Field Capacity Stage (भूमि क्षमता अवस्था) :** जब मृदा के समस्त रिक्त स्थानों के 50 प्रतिशत भाग में जल तथा शेष 50 प्रतिशत भाग में वायु रहती है तो मृदा की इस अवस्था को भूमि क्षमता अवस्था कहते हैं।

**Filament (फिलामेण्ट) :** सिगार की आकृति वाले पदार्थों के समूह को फिलामेण्ट कहते हैं। फिलामेण्ट का यह अर्थ यहाँ पर सूर्य से निकले पदार्थों से है।

**Fiord (फियोर्ड) :** उच्च अक्षांशों में सागरीय जल में डूबी हिमानीकृत गहरी घाटियों को फियोर्ड कहते हैं।

**Fire Ring of Pacific (प्रशान्त महासागर का ज्वालावृत्त) :** प्रशान्त महासागर के चारों ओर

महाद्वीपीय किनारों, द्वीप चापों (island arcs) एवं सागरीय द्वीपों के सहारे सक्रिय ज्वालामुखियों की प्रधानता के कारण इसे प्रशान्त महासागर का ज्वालावृत्त कहते हैं।

**First Preliminary Tremor (प्राथमिक/आरम्भिक कम्पन) :** जब भूकम्प आता है तो भूकम्प अधिकेन्द्र पर सीस्मोग्राफ की सहायता से भूकम्पीय लहरों का अंकन किया जाता है। सर्वप्रथम कमजोर तथा लघु कम्पन होता है। इसे प्राथमिक कम्पन कहते हैं।

**Flaking (फ्लेकिंग) :** अत्यधिक तापमान के कारण गुम्बदनुमा आग्नेय शैलों की ऊपरी एवं निचली परतों में विभिन्न दरों से फैलाव एवं सिकुड़न होने से चट्टानों से पतले-पतले छिलके उतरने की क्रिया को फ्लेकिंग कहते हैं।

**Flood Plain (बाढ़ मैदान) :** नदियों द्वारा बाढ़ के समय विस्तृत क्षेत्रों में कांप या जलोढ़ के निरन्तर जमाव से निर्मित मैदान को बाढ़ मैदान कहा जाता है।

**Flood Tides (बाढ़ ज्वार) :** सागरीय तट की ओर बढ़ते सामान्य ज्वार को बाढ़ ज्वार कहते हैं क्योंकि इसके आगमन पर निम्नतटीय भाग जलमग्न हो जाता है। high tide water (उच्च ज्वार) : ज्वार आने के समय सागरीय जल के उभार को उच्च ज्वार जल कहते हैं

**Focus (भूकम्पमूल) :** धरातलीय सतह के नीचे जिस भाग में भूकम्प उत्पन्न होता है उस स्थान को भूकम्प का उत्पत्ति केन्द्र या भूकम्प मूल (seismic focus) कहते हैं।

**Folded Mountains (वलित पर्वत) :** असिभसारी क्षैतिज संचलन के कारण उत्पन्न पार्श्ववर्ती सम्पीडन (lateral compression) होने से अवसादी चट्टानों के वलित होने से अपनति (anticlines) एवं अभिनति (synclines) से युक्त पर्वत को वलित पर्वत कहते हैं।

**Folds (वलन) :** पृथ्वी के अन्तर्जात बलों द्वारा उत्पन्न क्षैतिज संचलन द्वारा जब भूपटलीय चट्टानों में सम्पीडन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो चट्टानों में लहरनुमा मोड़ पड़ जाता है। इस तरह के मोड़ों को वलन कहा जाता है।

**Foliation (फोलिएशन) :** रूपान्तरित शैलों में परत के रूप में कणों (crystals या grain) की समान्तर व्यवस्था को फोलिशन कहते हैं। स्लेट, सिस्ट तथा नीस रूपान्तरित शैलों में फोलिएशन पाया जाता है।

**Food Chain (आहार श्रृंखला) :** किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न पोषण स्तरों से आहार ऊर्जा के एक जीव से दूसरे जीव में स्थानान्तरण के क्रम को आहार श्रृंखला कहते हैं।

**Foraminifera (फोरामिनीफेरा) :** फोरामिनीफेरा सागरीय प्रोटाजोवा जीव हैं जिनमें कैलसियम कार्बोनेट निर्मित चोल (test) होती है तथा ऊपर छिद्रदार कड़ी खोल रहती हैं।

**Forced Dispersal (बलात् विसरण) :** आकस्मिक तथा प्रलयकारी घटनाओं तथा प्रतिकूल पर्यावरणीय दशाओं के कारण जन्तुओं के बाध्य होकर अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्यन अनुकूल क्षेत्रों में गमन को बलात् विसरण कहते हैं।

**Foreland (अग्रदेश) :** कोबर के अनुसार भूसन्नति के अपने स्थान पर स्थिर रहने वाले भाग को अग्रदेश कहा जाता है।

**Foreshore (अग्रिम किनारा) :** सागरीय जल जहां पर सदैव रहता है उसे अग्रिम किनारा कहते हैं।

**Freezing Rain (जमती वर्षा) :** जब हिमांक (0°C) के नीचे फुहार या हल्की वर्षा होती है तो वह धरातलीय सतह पर पहुंचने से पहले ही हिमीकृत हो जाती है। अतः इन्हें जमती फुहार (freezing drizzles) या जमती वर्षा कहते हैं।

**Freshwater Lake (ताजे जल की झील) :** स्थलीय स्रोत से निकले जल से निर्मित झील को

ताजे या मीठे जल की झील कहते हैं। इनका निर्माण प्रायः हिमद्रवित जल की आपूर्ति से होता है।

**Friction Layer (घर्षण परत) :** निचले वायुमण्डल के उस भाग को (सागर तल से 500 से 1000 मीटर) जहां पर घर्षण बल प्रभावी होता है, घर्षण परत कहते हैं।

**Frictional Force (घर्षण बल) :** किसी भी गतिमान वस्तु के विपरीत किसी वस्तु की सतह से प्रतिरोध (resistance) के कारण उत्पन्न बल को घर्षण बल कहते हैं। वायुमण्डल के सन्दर्भ में वायु गतिमान वस्तु होती है तथा धरातलीय सतह (स्थलीय तथा जलीय, दोनों प्रकार की सतह) से प्रतिरोध होने से घर्षण बल उत्पन्न होता है जो वायु के प्रवाह वेग को कम करता है।

**Fringing Reef (तटीय प्रवाल भित्ति) :** महाद्वीपीय किनारे या द्वीपों के किनारे निर्मित होने वाली प्रवाल भित्तियों को तटीय प्रवाल भित्ति कहते हैं।

**Front (वाताग्र) :** वाताग्र वह ढलुआ सतह होता है जो विपरीत भौतिक गुणों (तापमान, वायुदाब, घनत्व, आर्द्रता तथा दिशा सम्बन्धी) वाली दो वायुराशियों को अलग करता है।

**Frontal Lifting (वाताग्री उत्थापन) :** गर्म एवं ठंडी वायुराशि के अभिसरण से उत्पन्न वाताग्रों के सहारे ठंडी वायुराशि द्वारा गर्म वायुराशि को ऊपर उठाने की प्रक्रिया को वाताग्री या चक्रवातीय उत्थापन कहते हैं।

**Frontal Theory (वाताग्र सिद्धान्त) :** वाताग्र जनन के आधार पर शीतोष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों की उत्पत्ति तथा विकास की व्याख्या करने वाले सिद्धान्त को वाताग्र सिद्धान्त कहते हैं।

**Frontal Zone (वाताग्री प्रदेश) :** वाताग्रों के निर्माण वाले क्षेत्रों, अर्थात् वाताग्र जनन के क्षेत्रों को वाताग्री प्रदेश कहते हैं।

**Frontogenesis (वाताग्र जनन) :** किसी नये वाताग्र के निर्माण की प्रक्रियाओं, या पुराने या नष्टप्राय वाताग्रों के पुनर्जनन की प्रक्रियाओं को वाताग्र जनन कहते हैं। Frontolysis (वाताग्र विनाश) : वाताग्रों के क्षय या विनाश की प्रक्रिया को वाताग्र विनाश या वाताग्र क्षय कहते हैं। यह वाताग्र जनन के विपरीत प्रक्रिया होती है।

**Frost (तुषार या पाला) :** ऊर्ध्वपातन (sublimation) की प्रक्रिया द्वारा जलवाष्प के सीधे तौर पर धरातलीय सतह पर हिमकणों के रूप में रूपान्तरण को पाला पड़ना कहते हैं। पाला उस समय पड़ता है जब संघनन हिमांक के नीचे होता है। पाला के अन्तर्गत वनस्पतियों में तथा मिट्टियों में स्थित नमी का भी हिमीकरण हो जाता है (यदि जल सीमित मात्रा में हो)।

**Frost Heaving (तुषार उत्क्षेपण) :** परिहिमानी क्षेत्रों में परमाक्रास्ट की ऊपरी सक्रिय सतह में हिमीकरण के फलस्वरूप धरातलीय सतह में उभार (bulging) होने की क्रिया को तुषार उत्क्षेपण कहते हैं।

**Frost Point (तुषार बिन्दु) :** जिस तापमान पर संघनन ठोस रूप में होता है (सदैव  $0^{\circ}\text{C}$  से कम) उसे तुषार बिन्दु या तुषार बिन्दु तापमान कहते हैं।

**Fumaroles (धुंआरे) :** ज्वालामुखी क्रिया के समय विभिन्न छिद्रों से निकलने वाले धुँएँ वाले उद्गार को धुंआरे कहते हैं। यह शब्द लैटिन भाषा के (fumarole) शब्द से बना है जिसका तात्पर्य ऐसे छिद्र से होता है जिससे गैस तथा वाष्प निकलती रहती है। दूर से देखने से ऐसा लगता है मानो जोरों से धुंआ ही धुंआ निकल रहा है।

**Fynbos (फिनबस) :** दक्षिण अफ्रीकी रूमसागरीय जलवायु प्रदेश में मोटी पत्तियों वाली झाड़ियों को स्थानीय स्तर पर फिनबस कहते हैं।

**Garden of Lakes (झील वाटिका) :** जहाँ पर हिमानी निर्मित छोटी-छोटी झीलें सैकड़ों की संख्या में समूह में पायी जाती हैं उसे झील

वाटिका कहते हैं। फिनलैण्ड में कई झील वाटिकायें पायी जाती हैं।

**Genetic Biodiversity (जननिक जैव विविधता) :** किसी भी पारिस्थितिक तंत्र में पौधों एवं जन्तुओं की प्रजातियों के जीन (genes) के स्तरों पर विविधता को जननिक जैव विविधता कहते हैं।

**Genetic Classification (जननिक वर्गीकरण) :** जलवायु की विभिन्नताओं के कारणों, विभिन्न प्रकार की जलवायु की उत्पत्ति की प्रक्रियाओं तथा उनकी व्याख्या के आधार पर विश्व की जलवायु के वर्गीकरण को जननिक वर्गीकरण कहते हैं।

**Geo (ज्यो) :** सागरीय कन्दराओं के छत के ध्वस्त होकर गिर जाने से निर्मित संकरी तथा छोटी-छोटी खाड़ियों को निवेशिका (inlet) तथा स्काटलैण्ड में ज्यो कहते हैं।

**Geoclimate (भूजलवायु) :** अत्यधिक विस्तृत क्षेत्र की जलवायु सम्बन्धी दशाओं को भूजलवायु, भौगोलिक जलवायु या वृहदस्तरीय जलवायु कहते हैं। ऐसे क्षेत्रों का क्षेत्रीय विस्तार 20 किलोमीटर से अधिक होता है।

**Geostasy (भूसन्तुलन) :** अपनी अक्ष पर परिभ्रमण करती हुई पृथ्वी के ऊपर स्थित विभिन्न भागों (पर्वत, पठार, मैदान आदि) एवं गहराई में स्थित भागों (झील, सागर आदि) में भौतिक अथवा यांत्रिक स्थिरता की दशा को ही सन्तुलन या भूसन्तुलन की दशा कहे हैं।

**Geostrophic Wind (जियोस्ट्राफिक पवन) :** सागर तल से 500 से 1000 मीटर की ऊँचाई के बीच सीधे मार्ग से समदाब रेखाओं के समानान्तर परन्तु दाबप्रवणता के समकोण पर प्रवाहित होने वाली हवा को जियोस्ट्राफिक पवन कहते हैं।

**Geosyncline (भूसन्नति) :** धरातलीय सतह पर लम्बे, संकरे, उथले तथा अवसादीकरण (sedimentation) वाले जलीय भाग को भूसन्नति कहते हैं।

**Geysir (गेसर या गीज़र) :** गेसर एक प्रकार का गर्म जल का सोता (spring) होता है जिससे समय-समय पर गर्म जल तथा वाष्प निकला करती है। गेसर शब्द आइसलैण्ड की भाषा के गेसिर शब्द (geysir) से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ 'तेज़ी से उछलता हुआ' (gusher) अथवा 'फुहार छोड़ने वाला' (spouter) होता है। गेसर में गर्म जल एवं वाष्प लगातार नहीं निकलती है वरन् निश्चित समय अन्तराल के बाद ही गेसर सक्रिय होता है।

**Glacial Drift (हिमानी ड्रिफ्ट) :** हिमनद द्वारा परिवहन किए जाने वाले शिलाखण्ड, कंकड़-पत्थर, रेत कण, मिट्टी आदि से युक्त मिश्रित पदार्थों को हिमानी ड्रिफ्ट कहते हैं।

**Glacial Lake (हिमानीकृत झील) :** हिमानी द्वारा अपरदन से निर्मित छोटी-छोटी बेसिनों तथा हिमानी निक्षेपों के बीच वाले स्थानों में जल भर जाने से निर्मित झील को हिमानीकृत झील कहते हैं। उत्तरी अमेरिका की ग्रेटलेक्स (सुपीरियर, मिशिगन, ओण्टारियो, ईरी तथा ह्यरन) का निर्माण प्लीस्टोसीन हिमानीकरण के फलस्वरूप हुआ है।

**Glacial Plateau (हिमानीकृत पठार) :** विस्तृत हिमानी पवतीय भागों को अपने अपरदन कार्य द्वारा घिस कर सपाट कर देते हैं। इस तरह सपाट सतह वाले उच्च भाग को हिमानी पठार कहते हैं। अण्टार्कटिका तथा ग्रीनलैण्ड में हिमानी पठार मिलते हैं। छिब्बर महोदय के अनुसार गढ़वाल पठार हिमानी अपरदन द्वारा बना है। जर्मनी का प्रशिया का पठार हिमानी निक्षेप द्वारा बना है।

**Glacial Stairway (हिम सोपान) :** पहाड़ी क्षेत्रों में हिमनदों द्वारा असमान कठोरता वाली शैलों पर अपरदन द्वारा निर्मित वृहदाकार सीढ़ीदार संरचना को हिम सोपान कहते हैं। इन्हें दैत्याकार सोपान या साइक्लोपियन सोपान भी कहते हैं।

**Glaciated Plain (हिमअपरदित मैदान) :** हिमानी अपरदन द्वारा असमान उच्च भाग को घिसकर सपाट बना देता है परन्तु कम ऊँचाई वाले उच्चवच्च अवश्य रहते हैं। इस तरह हिमानी द्वारा घर्षित सपाट भाग को हिमअपरदित मैदान कहते हैं।

**Glaciation (हिमानीकरण) :** हिमानी द्वारा विस्तृत क्षेत्रों में अपरदन एवं निक्षेपण की क्रियाओं को सम्मिलित रूप में हिमानीकरण या गलेश्वरीकरण कहते हैं।

**Glacio-fluvial Landforms (हिम- जलीय स्थलरूप) :** हिमनदों के अवसान (ablation) या पिघलने के बाद उनके अग्रभाग (snouts) में हिमानी तथा हिमद्रवित जल के द्वारा निर्मित स्थलरूपों (यथा : एस्कर, केम, केटिल, हिमनद अवक्षेप आदि) को हिम - जलीय स्थलाकृति कहते हैं।

**Glassy Basalt (ग्लासी बेसाल्ट) :** कणविहीन या अत्यन्त सूक्ष्म रवों (grains, crystals) वाली बेसाल्ट आग्नेय शैल को ग्लासी बेसाल्ट कहते हैं। यथा : आब्सीडियन, पिचस्टोन, प्यूमिस तथा परलाइट।

**Gliptogenesis (लिप्टोजेनेसिस या विकास की अवस्था) :** भूसन्नतियों से वलित पर्वतों के निर्माण के बाद उनके अपरदन द्वारा अवनयन तथा सन्तुलन का स्थापना हेतु उनके पुनः ऊपर उठने की समस्त प्रक्रियाओं की अवस्था को पर्वत विकास की अवस्था कहते हैं।

**Globulite (ग्लोबुलाइट) :** स्टैलेक्टाइट के पास विकसित गोलाकार हेलेक्टाइट को ग्लोबुलाइट कहते हैं।

**Gorge (गार्ज) :** अत्यधिक गहरी, संकरी तथा खड़े ढाल वाली नदी घाटी को गार्ज या कन्दरा कहते हैं।

**Graben (ग्राबेन) :** किसी स्थान पर जब दो सामान्य भ्रंश कई किलोमीटर की लम्बाई में इस तरह पड़ती हैं कि उनके बीच का भाग नीचे धंस

जाता है और एक बेसिन या घाटी का निर्माण हो जाता है तो उसे 'रिफ्ट घाटी' या 'ग्राबेन' कहते हैं। जर्मनी की राइन नदी की घाटी इसका प्रमुख उदाहरण है।

**Gradient Wind (प्रवणता पवन) :** प्रवणता पवन, जियोस्ट्राफिक पवन का बदला रूप है, जो वक्राकार या वृत्ताकार समदाब रेखाओं के समानान्तर वक्राकार या वृत्ताकार मार्ग से प्रवाहित होती है।

**Gradual Dispersal (क्रमशः विसरण) :** दीर्घकालिक मन्दगति से होने वाले जन्तुओं के अन्य क्षेत्रों में गमन करने को क्रमशः विसरण कहते हैं।

**Gradual Speciation (क्रमशः प्रजाति उद्भव) :** अनुकूलन (adaptation) तथा प्राकृतिक चयन (natural selection) द्वारा प्रजातियों के मंद गति से क्रमशः विभिन्न अनुक्रमों (sequences) में उद्भव एवं विकास को क्रमशः प्रजाति उद्भव कहते हैं।

**Granular Disintegration (चट्टानों का बारीक कणों में विघटन) :** गर्म शुष्क भागों में दैनिक तापान्तर अधिक होने से चट्टानों की ऊपरी परतों में क्रमशः फैलाव (दिन में) तथा सिकुड़न (रात में) होने से चट्टानें चटक जाती हैं जिसके कारण ऊपरी सतह छोटे कणों में 'टूटकर बिखर जाती हैं। इस तरह चट्टानों के तापमान के कारण छोटे-छोटे भागों में बिखराव (विघटन) को ग्रैनुलर विघटन कहते हैं।

**Grass Savanna (घास सवाना) :** वृक्षों एवं झाड़ियों के न होने पर जिन सवाना क्षेत्रों में कई प्रजातियों की घासों का घना आवरण फैला होता है उन्हें घास सवाना कहते हैं।

**Gravels (बजरी) :** मोटे कणों वाले भूमिज (terrigenous) पदार्थों को ग्रैवेल कहते हैं। आकार की दृष्टि से इनमें बोल्डर, कोबुल, पेबुल तथा ग्रैनुल को सम्मिलित करते हैं।

**Gross Primary Production (सकल प्राथमिक उत्पादन) :** किसी पारिस्थितिक तंत्र में प्रकाश संश्लेषी प्राथमिक उत्पादक हरे पौधों द्वारा उत्पादित सकल जैविक पदार्थों के भार को सकल प्राथमिक उत्पादन कहते हैं।

**Ground Moraines (तलस्थ हिमोढ़) :** हिमनदों की तलियों में निक्षेपित हिमोढ़ को तलस्थ हिमोढ़ कहते हैं।

**Ground Radiation (धरातलीय विकिरण) :** धरातलीय सतह से दीर्घ तरंग के रूप में ऊष्मा के वायुमण्डल में विकिरण को धरातलीय विकिरण कहते हैं।

**Guttenberg Discontinuity (गुटेनबर्ग असम्बद्धता) :** मैण्टिल एवं अन्तरतम (वाह्य क्रोड) की सीमा (2900 किमी० की गहराई पर) को विद्वान गुटेनबर्ग के नाम पर गुटेनबर्ग असम्बद्धता इसलिए कहते हैं कि इस सीमा से नीचे घनत्व में अचानक वृद्धि (5.0 से बढ़कर 10.0) हो जाती है। इसी तरह P लहर की गति में अचानक वृद्धि हो जाती है (13.6 किमी० प्रति सेकण्ड)। इस असम्बद्धता को विचर्ट असम्बद्धता भी कहते हैं।

**Gyre (जायर) :** महासागरों में धाराओं के प्रवाह के बन्द संचरण प्रतिरूप को जायर या महासागरीय जायर कहते हैं।

**Hadley Cell (हैडिली कोशिका) :** दोनों गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा से 30° अक्षांशों के बीच तापीय प्रत्यक्ष (अर्थात् तापजन्य) उष्ण कटिबन्धी संवहनीय कोशिका को जार्ज हैडिली महोदय के नाम, जिन्होंने इस कोशिका का 1735 में अभिनिर्धारण किया था, के आधार पर हैडिली कोशिका (पवन परिसंचरण की हैडिली कोशिका) कहते हैं।

**Hail (ओला) :** 5 से 50 मिलीमीटर व्यास वाले छोटी गेंद के समान गोलाकार हिम या बड़े आकार वाली हिम गुटिका (ice pellets) को ओला कहते हैं। इनका निर्माण हिमांक के नीचे

संघनन होने पर होता है। जब ये ओले अधिक संख्या में धरातलीय सतह पर अचानक गिरने लगते हैं तो इस प्रकार की ठोस हिम गुटिकाओं की वर्षा को उपलवृष्टि या ओलापात (hailstorm) कहते हैं।

**Halo (प्रभामण्डल)** : रात्रि में चन्द्रमा के चारों ओर पक्षाभ एवं पक्षाभस्तरी (cirrus एवं cirrostratus) बादलों के प्रतिबिम्बन से बने श्वेत दूधिया रंग के छल्ले को प्रभामण्डल कहते हैं।

**Halocline (हैलोकलाइन)** : उष्ण एवं उपोष्ण कटिबन्धीय महासागरों में 300-1000 मीटर की गहराई वाले भाग, जिसमें सागरीय लवणता में तेजी से परिवर्तन (हास) होता है, को हैलोकलाइन कहते हैं।

**Hanging Valley (लटकती घाटी)** : मुख्य घाटी हिमनद से ऊंचाई से आकर मिलने वाले सहायक हिमनद की घाटी को लटकती घाटी कहते हैं। वास्तव में इन्हें हिमानी लटकती घाटी कहना चाहिए क्योंकि जलवाली मुख्य नदी में उससे अधिक ऊंचाई से मिलने वाली सहायक नदी की घाटी को भी लटकती (जलीय) घाटी कहते हैं।

**Headland (शीर्ष स्थल)** : सागरीय तट से सागर में निकले पतले-पतले तथा नुकीले स्थलीय भागों को शीर्ष स्थल कहते हैं।

**Heat Island (ऊष्मा द्वीप)** : नगर के केन्द्र में उच्च तापमान को नगरी ऊष्मा द्वीप या मात्र ऊष्मा द्वीप कहते हैं।

**Hekistotherm (हेकिस्टोथर्म)** : ऐसे पादप समूह जो टुण्ड्रा की हिमाच्छादित सतह पर पनप सकते हैं, को हेकिस्टोथर्म कहते हैं।

**Helectite (हेलेक्टाइट)** : कार्स्ट प्रदेश में कन्दराओं की छत से लटकती स्टैलेक्टाइट के आस-पास निर्मित ड्रिप स्टोन को हेलेक्टाइट कहते हैं।

**Helegmite (हेलेग्माइट)** : कन्दराओं की फर्श पर निर्मित स्टैलेग्माइट के आस-पास निक्षेपित ड्रिपस्टोन को हेलेग्माइट कहते हैं।

**Herring Bone Drainage Pattern (हरिंग अस्थि अपवाह प्रतिरूप)** : मछलियों की हड्डियों के ढांचे या मनुष्यों की पसलियों के समान मुख्य सरिता एवं उसकी सहायक नदियों के तंत्र को हरिंग अस्थि अपवाह प्रतिरूप कहते हैं। इसका उद्भव एवं विकास तेज ढाल वाली पर्वत श्रेणियों के मध्य विस्तृत चौड़ी घाटियों में होता है।

**Heterotrophic Component (परपोषित संघटक)** : जीवमण्डल के जैव संघटक के अन्तर्गत उत्पादक हरे पौधों पर निर्भर रहने वाले परपोषित जन्तुओं को सम्मिलित करते हैं।

**High Sea (उच्च सागर)** : विशिष्ट आर्थिक मण्डल के आगे स्थित सागरीय क्षेत्र को उच्च सागर कहा जाता है। इस विस्तृत सागरीय क्षेत्र में सभी देशों को समान अधिकार होता है।

**Hoar Frost (धवल तुषार या पाला)** : जब ऊर्ध्वपातन (sublimation) की प्रक्रिया द्वारा जलवाष्प का सीधे तौर पर हिम में रूपान्तरण हो जाता है तथा उस हिम का मकानों की छतों, पौधों तथा अन्य वस्तुओं पर जमाव हो जाता है तो उसे धवल तुषार या धवल पाला कहते हैं। धवल तुषार में हिमकणों का रंग चांदी जैसा श्वेत धवल होता है जो सुन्दर आभूषण जैसे लगते हैं तथा अत्यधिक आकर्षक होते हैं।

**Hogback (शूकर कटक)** : अपरदन के बाद निर्मित अवरोधी शैलों वाली लम्बी, पतली तथा खड़े ढाल वाली श्रेणियों (ranges, ridges) को हागबैक या शूकर कटक कहते हैं। स्मरणीय रहे कि हागबैक का डिप तथा ढाल दोनों खड़े होते हैं जबकि क्रेस्टा का डिप एवं ढाल खड़ा न होकर झुका होता है।

**Holocene Period (होलोसीन शक)** : यह नूतन महाकल्प (neozoic) के क्वाटरनरी युग का अद्यतन भूगर्भिक काल है, यह शक आज से

10 हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ तथा अभी चल रहा है। होलो (holo) का अर्थ है सम्पूर्ण या अभिनव।

**Holozonic (प्राणिसमभोजी) :** अपने आहार को अपने मुख से ग्रहण करने वाले जन्तुओं को प्राणिसमभोजी कहते हैं। जैसे : हाथी, गाय, बकरी, हिरण आदि।

**Homeostatic Mechansm (स्वतः नियामक प्रक्रिया) :** प्रकृति में ऐसी अन्तर्निहित प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा प्राकृतिक कारणों से प्राकृतिक पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन की अन्य परिवर्तन द्वारा भरपाई हो जाती है और पर्यावरण सन्तुलन की स्थिति में बना रहता है। इस तरह की प्राकृतिक प्रक्रिया को होमियोस्टेटिक प्रक्रिया कहते हैं।

**Horn (हार्न) :** किसी पहाड़ी के चारों ओर स्थित सर्क के लगातार पीछे हटते जाने से बनी पिरामिड के आकार वाली नुकीली चोटी को हार्न या गिरिश्रृंग कहते हैं।

**Horse Latitude (अश्व अक्षांश) :** दोनों गोलार्द्धों में 30°-35° अक्षांशों के मध्य स्थित न्यून वायुदाब की पेट्टी को अश्व अक्षांश इसलिए कहते हैं कि इन अक्षांशों में पवन संचरण इतना मन्द होता है कि प्राचीन काल में व्यापारियों को अपने जलयान को हल्का करने के लिए कुछ घोड़ों को समुद्र में फेंकना पड़ता था।

**Horst (होर्स्ट) :** दो सामान्य भ्रंश के बीच ऊपर उठे भाग या रिफ्ट घाटी के ऊँचे उठे किनारे वाले भागों को होर्स्ट कहते हैं।

**Hummock (गिरिका) :** परिहिमानी क्षेत्रों में धरातलीय सतह पर ऊपर उठे लघ्वाकार टीलों को गिरिका कहते हैं। नग्न ऊपरी भाग वाली गिरिका को भूगिरिका (earth hum-mock) तथा वनस्पति (खासकर घास) के आवरण से युक्त गिरिका को सतृण गिरिका (turf hummock) कहते हैं।

**Hydration (हाइड्रेशन या जलयोजन) :** जब चट्टानें जल सोखकर फूलती हैं तो उनके आयतन में विस्तार होने तथा जल के सूख जाने पर सिकुड़ने होने से उनमें चटकनें पड़ जाती हैं। इस क्रिया को हाइड्रेशन कहते हैं।

**Hydraulic Action (जलगति क्रिया) :** नदियों एवं सांगरीय तरंगों द्वारा जलीय भार तथा दबाव द्वारा चट्टानों के अपरदित होने की प्रक्रिया को जलगति क्रिया कहते हैं। इसमें अन्य अवसादों का योगदान नहीं होता है।

**Hydrogenous Sediments (जलजात अवसाद) :** घुले पदार्थों के सांगरीय जल में अवक्षेप (precipitation) से प्राप्त अवसादों को जलजात अवसाद कहते हैं, उदाहरण : फासफोराइट्स, कैलसियम कार्बोनेट या ऊलाइट, ध्वात्विक सल्फाइड, जिप्सम, नमक आदि।

**Hydrological Cycle (जलीय चक्र) :** महासागरीय सतह से वायुमण्डल में, वायुमण्डल से महाद्वीपीय सतह तथा महाद्वीपीय सतह से सागरीय सतह में जल के विनिमय के चक्र को भूमण्डलीय जलीय चक्र कहते हैं।

**Hydrometamorphism (जलीय रूपान्तरण) :** बड़े-बड़े जल भण्डारों के अत्यधिक भार के कारण निचली चट्टानों में होने वाले रूपान्तरण को जलीय रूपान्तरण कहते हैं।

**Hydrosere (जलक्रमक) :** तर क्षेत्रों (wet areas, यथा दलदल, झील का किनारा आदि) वाले आवासों में विकसित होने वाली वनस्पतियों के अनुक्रम को जलक्रमक कहते हैं।

**Iceberg (प्लावी हिम) :** सागरीय जल में तैरते बड़े-बड़े हिमखण्ड को प्लावी हिम कहते हैं।

**Igneous Rock (आग्नेय शैल) :** तप्त एवं तरल मैग्मा तथा लावा के शीतल होने पर ठोस होने से बनी शैल को आग्नेय शैल कहते हैं। आग्नेय (igneous) शब्द लैटिन भाषा के 'इग्निस्' (ignis) शब्द से लिया गया है, जिसको शाब्दिक अर्थ अग्नि होता है।

**Ignimbrite (इग्निमब्राइट) :** ज्वालामुखी उद्गार के समय निस्सृत बारोक पदार्थों (धूल के आकार के), छोटे शिलाखण्ड (splintes) एवं मृत्पात्र खण्डों (shards) के उद्गार स्थल से दूर निक्षेप को इग्निमब्राइट कहते हैं।

**Illuviation (विनिक्षेपण) :** मृदा परिच्छेदिका के ऊपरी A संस्तर से विभिन्न पदार्थों के नीचे जाकर B संस्तर में निक्षेपण को विनिक्षेपण कहते हैं।

**Illuviation Zone (विनिक्षेपणमण्डल) :** मृदा परिच्छेदिका के B, संस्तर (horizon) को विनिक्षेपण मण्डल कहते हैं क्योंकि इस संस्तर में मृत्तिका खनिजों या सेस्क्रीआक्साइड्स तथा जैविक पदार्थों का सर्वाधिक जमाव होता है।

**Incised Meander (अधः कर्तित विसर्प) :** नदियों के अपरदन के आधार तल के नीचा होने से नवोन्मेष के कारण नदियों द्वारा पूर्व निर्मित चौड़े विसर्पों में निम्नवर्ती अपरदन द्वारा निर्मित गहरे एवं संकरे विसर्पों को अधः कर्तित विसर्प कहते हैं।

**Indeterminant Drainage Pattern (अनिश्चित अपवाह प्रतिरूप) :** जब किसी क्षेत्र विशेष में नदियां एवं उनकी सहायक दर सहायक सरितायें एक दूसरे से इतनी गुथी होती हैं कि उनके प्रवाह मार्ग या अपवाह प्रतिरूप का निर्धारण करना कठिन हो जाता है तो उस अपवाह तंत्र को अनिश्चित या जटिल या मिश्र अपवाह तंत्र कहते हैं। फिनलैण्ड का अधिकांश अपवाह तंत्र इस श्रेणी में आता है।

**Index Cycle (सूचकांक चक्र) :** जेट स्ट्रीम के सीधे प्रवाह मार्ग से लहरनुमा प्रवाह (meandering flow) मार्ग के बनने की अवधि को सूचकांक चक्र या जेट स्ट्रीम का विकास चक्र कहते हैं, जो चार अवस्थाओं में पूर्ण होता है।

**Inner Core (आन्तरिक क्रोड) :** पृथ्वी की सतह से नीचे 5150 किमी० से 6371 किमी० (केन्द्र तक) तक वाले आन्तरिक भाग को आन्तरिक क्रोड कहते हैं। यह ठोस अवस्था में है तथा

इसका घनत्व 13.6 है एवं इसमें P लहर की गति 11.23 किमी० प्रति सेकेण्ड होती है।

**Inner Planets (आन्तरिक ग्रह) :** सूर्य के पास से चार लघु आकार वाले ग्रहों को आन्तरिक ग्रह कहते हैं। इसके अनतर्गत क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी एवं मंगल ग्रहों को सम्मिलित किया जाता है।

**Inselberg (इन्सेलबर्ग) :** मरुस्थली क्षेत्रों में अपरदन चक्र के अन्त में मरुस्थली सतह पर अपरदन से बची छोटी-छोटी पहाड़ियों तथा टीलों को इनसेलबर्ग कहते हैं। इन्हें बोर्नहाईट नामक विद्वान के नाम पर बोर्नहाईट भी कहते हैं। साधारणतया इन्सेलबर्ग ग्रेनाइट एवं नीश शैल के खुले गुम्बद के समान होते हैं।

**Insequent Drainage System (अक्रमवर्ती अपवाह तंत्र) :** जो नदियां प्रादेशिक ढाल की विपरीत दिशा में तथा उच्चावच्च एवं संरचना के आर-पार प्रवाहित होती हैं उन्हें अक्रमवर्ती सरिता कहते हैं। इस तरह की सरिताओं के जाल को अक्रमवर्ती अपवाहतंत्र कहते हैं। उदाहरण : पूर्ववर्ती तथा अध्यारोपित सरितायें।

**Insolation (सूर्यातप) :** पृथ्वी की सतह तथा वायुमण्डल द्वारा सूर्य की वाह्य सतह यानी फोटोस्फीयर से प्राप्त विकीर्ण ऊर्जा (radiant energy) को सूर्यातप कहते हैं।

**Insolation Cyclone (सूर्यातप चक्रवात) :** मध्य अक्षांशों में तापीय कारणों से उत्पन्न शीतोष्ण चक्रवातों को सूर्यातप चक्रवात कहते हैं। ऐसे चक्रवात अपने उत्पत्ति वाले स्थानों पर स्थायी रहते हैं तथा इनमें विभिन्न वाताग्रों का भलीभांति विकास नहीं हो पाता है।

**Intermontane Plateau (अन्तरापर्वतीय पठार) :** चारों तरफ से पर्वतों से घिरे उच्च पठारों को अन्तरापर्वतीय पठार कहते हैं, यथा: तिब्बत का पठार, बोलिविया तथा पेरू पठार, कोलम्बिया का पठार, मेक्सिको का पठार आदि प्रमुख उदाहरण हैं।

**Internal Water (आन्तरिक जल) :** स्थलीय भाग एवं आधार रेखा के मध्य स्थित सागरीय जल को आन्तरिक जल कहते हैं।

**Interspecific Interaction (अन्तर्जातीय पारस्परिक क्रिया) :** किसी भी आवास में एक ही प्रजाति के जन्तुओं के मध्य होने वाली अन्तर्क्रियाओं को अन्तर्जातीय पारस्परिक क्रिया कहते हैं।

**Inter-Tropical Convergence (ITC, अन्तरा-उष्णकटिबन्धी अभिसरण) :** भूमध्य रेखीय मण्डल में भूमध्यरेखा के सहारे ३० पू० एवं ६० पू० व्यापारिक हवाओं के अभिसरण को अन्तरा उष्णकटिबन्धी अभिसरण कहते हैं। इसकी उत्तरी एवं दक्षिणी सीमाओं को क्रमशः उत्तरी अन्तरा उष्णकटिबन्धी अभिसरण (NITC) तथा दक्षिणी अन्तरा उष्णकटिबन्धी अभिसरण (SITC) कहते हैं।

**Intraspecific Interaction (जात्यन्तर पारस्परिक क्रिया) :** किसी आवास में विभिन्न प्रजातियों के जन्तुओं के मध्य होने वाली अन्तर्क्रियाओं को जात्यन्तर पारस्परिक क्रिया कहते हैं।

**Inversion of Relief (उच्चावच प्रतिलोमन) :** वलित पर्वतों पर दीर्घ काल तक अपरदन के दौरान अभिनतियों की अपेक्षा अपनतियों का अधिक अपरदन होने से अपनतियां अपरदित होकर अपनतीय घाटियों में बदल जाती हैं तथा अभिनतियां कटक (ridge) के रूप में ऊपर उठी रहती हैं। इस तरह वलित पर्वतों में अपनतियों के स्थान पर अपनतीय घाटी (anticlinal valleys) तथा अभिनतियों के स्थान पर अभिनतीय कटक (synclinal ridges) के निर्माण के कारण प्रारम्भिक उच्चावच में उलट-पुलट होने को उच्चावचा प्रतिलोमन कहते हैं।

**Inversion of Temperature (तापीय प्रतिलोमन) :** क्षोभमण्डल में ऊँचाई के साथ तापमान में वृद्धि की प्रक्रिया को तापमान का

प्रतिलोमन कहते हैं। इसे ऋणात्मक पतन दर (negative lapse rate) भी कहते हैं।

**Involution (अन्तर्वलन) :** परिहिमानी क्षेत्रों के परमाफ्रास्ट वाले भाग में सतह के नीचे असंगठित पदार्थों वाले स्तरीकृत जमाव में हिमीकरण (freezing) के फलस्वरूप आकुंचन या मरोड़ उत्पन्न होने से एक जमाव परत का दूसरी जमाव परत में प्रवेश हो जाने से उत्पन्न विकृत भाग को अन्तर्वलन कहते हैं।

**Isanomalous Temperature (समविसंगत तापमान) :** कई स्थानों के समान तापीय विसंगति (thermal anomaly) को समविसंगत तापमान तथा विश्व मानचित्र पर समान तापीय विसंगति वाले क्षेत्रों को मिलाने वाली समान मान वाली रेखा को सम विसंगत रेखा (isanomals) कहते हैं।

**Isobars (समदाब रेखा) :** मानचित्र में सागर तल पर परिकलित समान वायुदाब के स्थानों को मिलाने वाली कल्पित रेखाओं को समदाब रेखायें कहते हैं। इन रेखाओं का वर्ग अन्तराल (class interval) बराबर मान वाला होता है।

**Isochrones (समकालिक रेखा) :** सागरीय नितल में स्थित प्राचीन चुम्बक की समान तिथियों को मिलाने वाली रेखा को समकालिक रेखा कहते हैं।

**Isoseismal Lines (भूकम्प समाघात रेखायें) :** भूकम्पीय लहरों द्वारा उत्पन्न समान परिमाण या आघात वाले क्षेत्रों (places of equal intensity) को मिलाने वाली (मानचित्र पर) कल्पित रेखाओं को भूकम्पीय समाघात रेखायें कहते हैं।

**Isotherms (समताप रेखा) :** विश्व मानचित्र पर सागर तल पर समान तापमान वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा को समताप रेखा कहते हैं।

**Jurassic Period (जुरैसिक शक) :** यह मेसोजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है, जो आज से 18 करोड़ वर्ष पहले प्रारम्भ होकर

13.5 करोड़ वर्ष पूर्व समाप्त हो गया। कुल अवधि = 4.5 करोड़ वर्ष। इस शक का नामकरण स्विटजरलैण्ड के जूरा पर्वत के आधार पर किया गया है।

**Kame (केम) :** हिमनद के अग्रभाग पर हिम के पिघलने से हिमानी मलवा के निक्षेपण से निर्मित छोटे-छोटे टीलों को केम कहते हैं।

**Karst Lake (कार्स्ट झील) :** कार्स्ट प्रदेश में डोलाइन में जल भर जाने से बनी लघु आकार वाली झील को कार्स्ट झील कहते हैं।

**Karst Plain (कार्स्ट मैदान) :** चूनापत्थर शैल वाले पठारी एवं पहाड़ी भागों में भूमिगत जल द्वारा अपरदन होने से कार्स्ट अपरदन चक्र की अन्तिम अवस्था (जीर्णवस्था) में निर्मित उबड़-खाबड़ सतह वाले विस्तृत भूभाग को कार्स्ट मैदान कहते हैं।

**Karst Topography (कार्स्ट स्थलाकृति) :** विश्व के चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्रों में भूमिगत जल के घुलन कार्य द्वारा निर्मित स्थलाकृति को पूर्ववर्ती योगोस्लाविया के कार्स्ट प्रदेश में विकसित स्थलाकृति के आधार पर कार्स्ट स्थलाकृति कहते हैं।

**Karstwindow (कार्स्ट खिड़की) :** विलयन छिद्र (swallow holes) तथा डोलाइन की ऊपरी छत के ढह जाने से डोलाइन का ऊपरी भाग खुल जाता है जिससे निचला भाग दिखाई देने लगता है। इसे कार्स्ट खिड़की कहते हैं।

**Kettle (केटिल) :** हिमनद के पिघल जाने पर जल के अपरदन द्वारा छोटे गड्ढों को केटिल कहते हैं। केटिल के मध्य छोटे टीलों को हमाक कहते हैं।

**Knob and Basin Topography (नाब एवं बेसिन स्थलाकृति) :** अनियमित अन्तिम हिमोढ़ (terminal moraine) वाले भागों में निर्मित अनेक टीलों (knobs) तथा बेसिनों वाली स्थलाकृति को नाब एवं बेसिन स्थलाकृति कहते हैं।

**Kratogen (क्रेटोजेन) :** कोबर महोदय ने भूसन्नति के किनारों पर स्थित दृढ़ भूखण्डों को क्रेटोजेन (foreland) नाम दिया है।

**Lacolith (लैकोलिथ) :** धरातलीय सतह के नीचे उत्तल ढाल वाला मैगमा से निर्मित एक वृहद् आकार होता है। इसका निर्माण खासकर परतदार शैलों की परतों के बीच मैगमा के प्रवेश के कारण होता है।

**Lacustrine Plain (झीलकृत मैदान) :** झीलों में लगातार अवसादीकरण (sedimentation) के फलस्वरूप उनके भर जाने से विभिन्न विस्तार वाले मैदानों का निर्माण होता है, जिन्हें झील निर्मित मैदान कहते हैं। ऐसे मैदानों का विस्तार झील या झीलों के आकार (size) पर निर्भर करता है।

**Lag of Temperature (तापमान की शिथिलता) :** किसी स्थान या क्षेत्र में अधिकतम सूर्यातप एवं उच्चतम तापमान के समय तथा न्यूनतम सूर्यातप एवं न्यूनतम तापमान के समय में जो अन्तराल होता है उसे तापमान की शिथिलता कहते हैं।

**Lake-effect Snow (झील-प्रभाव हिम) :** संयुक्त राज्य में ग्रेट लेक्स के दक्षिणी किनारों पर शीतकाल में महाद्वीपीय ध्रुवीय वायुराशियों द्वारा भारी हिमवर्षा को स्थानीय स्तर पर 'झील - प्रभाव हिम' कहते हैं।

**Land Hemisphere (स्थल गोलार्द्ध) :** स्थलीय भागों के आधिक्य के कारण उत्तरी गोलार्द्ध को स्थल गोलार्द्ध कहा जाता है।

**Landslide Dammed Lake (भूस्खलन अवरोधित झील) :** पहाड़ी क्षेत्रों में भूमिस्खलन के कारण जनित अपार मलवाराशि के नदियों के मार्ग में आ जाने के कारण नदियों का जल अवरुद्ध हो जाता है जिस कारण अस्थायी झीलों का निर्माण हो जाता है।

**Lapies (लैपीज़) :** चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्र में जल के घुलन कार्य द्वारा निर्मित ऊबड़-खाबड़ सतह वाली स्थलाकृति को लैपीज़ कहते हैं जिसमें असंख्य नुकीली सूई जैसी शिखरिकायें (pinnacles) तथा विदर (clefts) होते हैं। ऐसी असमान सतह पर नंगे पांव नहीं चला जा सकता है। लैपीज़ को इंग्लैण्ड में क्लिंट, जर्मनी में कैरेन तथा सर्बिया में बोंगाज़ कहते हैं।

**Lapili (लैपिली) :** ज्वालामुखी के केन्द्रीय विस्फोटक उद्गार के समय निकले मटर के दाने के बराबर आकार वाले चट्टानी टुकड़ों को लैपिली कहते हैं।

**Lapse Rate (पतन दर) :** वायुमण्डल में ऊँचाई के साथ प्रति 1000 मीटर पर  $6.5^{\circ}\text{C}$  की दर से तापमान में गिरावट को सामान्य पतन दर कहते हैं। इसका परिकलन धरातलीय सतह के औसत तापमान  $15^{\circ}\text{C}$  तथा 11 किमी० की ऊँचाई पर औसत  $-59^{\circ}\text{C}$  तापमान के आधार पर किया जाता है। 11 किमी० पर तापमान का कुल हास  $15+59 = 74^{\circ}\text{C}$ । अतः एक किलोमीटर पर तापमान में हास  $74^{\circ}\text{C}/11 \text{ किमी०} = 6.7^{\circ}\text{C} = 6.5^{\circ}\text{C}$ ।

**Latent Heat (गुप्त ऊष्मा) :** जल के वाष्पीकरण तथा उसके जलवाष्प में परिवर्तित होने की प्रक्रिया के दौरान खर्च ऊष्मा की ऊर्जा को गुप्त ऊष्मा कहते हैं।

**Latent Heat of Condensation (संघनन की गुप्त ऊष्मा) :** जलवाष्प के संघनन के बाद विमोचित (विमुक्त, released) ऊष्मा को संघनन की गुप्त ऊष्मा कहते हैं। यह 540-607 cal/gram होती है।

**Latent Heat of Fusion (संगलन की गुप्त ऊष्मा) :** एक ग्राम हिम को जल में परिवर्तित करने के लिए वांछित ऊष्मा की मात्रा को संगलन की गुप्त ऊष्मा कहते हैं जो 79-80 cal/gram है।

**Latent Heat of Sublimation (ऊर्ध्वपातन की गुप्त ऊष्मा) :** एक ग्राम हिम को सीधे जलवाष्प में परिवर्तित करने के लिए वांछित ऊष्मा की मात्रा को ऊर्ध्वपातन की गुप्त ऊष्मा कहते हैं, यह 680 cal/gram होती है।

**Latent Heat of Vaporization (वाष्पन की गुप्त ऊष्मा) :** एक ग्राम जल के गैसीय रूप (जलवाष्प) में परिवर्तित करने के लिए वांछित ऊष्मा की मात्रा को वाष्पन की गुप्त ऊष्मा कहते हैं, यह 540-607 cal/gram होती है।

**Lateral Abrasion (पार्श्ववर्ती अपघर्षण) :** नदियों द्वारा अपनी घाटियों की दीवारों अर्थात् पार्श्वभागों के अपघर्षण की क्रिया को पार्श्ववर्ती अपघर्षण कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा नदियों की घाटियां चौड़ी होती हैं।

**Lateral Consequent (पार्श्ववर्ती अनुवर्ती) :** अपनतियों के पार्श्व भागों पर विकसित होकर अभिनतीय प्रमुख अनुवर्ती सरिता में मिलने वाली नदियों को पार्श्ववर्ती अनुवर्ती कहते हैं।

**Lateral Fault (पार्श्व भ्रंश) :** क्षैतिज दिशा में संचलन (गति) होने से जब भ्रंश तल के सहारे क्षैतिज गति होती है तो उससे उत्पन्न भ्रंश को पार्श्व भ्रंश या नतिलम्बी भ्रंश (strike-slip fault) कहते हैं।

**Lateral Moraines (पार्श्विक हिमोढ़) :** हिमनद के किनारों पर हिमानी ड्रिफ्ट के जमाव को पार्श्ववर्ती हिमोढ़ कहते हैं।

**Lateral Morainic Ridges (पार्श्ववर्ती हिमोढ़ कटक) :** हिमनदों के किनारों पर हिमोढ़ के जमाव से निर्मित लम्बी किन्तु पतली श्रेणियों को पार्श्ववर्ती हिमोढ़ कटक (ridge) कहते हैं।

**Lava (लावा) :** जब ज्वालामुखी के उद्ग्रेदन के समय तप्त एवं तरल पदार्थों का धरातल के ऊपर प्रसार होता है तो उसे लावा कहते हैं।

**Lava Dammed Lake (लावा बांध झील) :** नदी के अपवाह क्षेत्र में ज्वालामुखी का उद्भेदन होने से नदी के प्रवाह मार्ग में लावा के शीतल होकर ठोस होने से प्राकृतिक बांध बन जाता है, जिस कारण नदी का जल अवरुद्ध हो जाता है तथा झील का निर्माण हो जाता है।

**Lava Dome (लावा गुम्बद) :** ज्वालामुखी छिद्र के चारों ओर लावा के जमाव से निर्मित ऊँचे एवं तेज ढाल वाली आकृति को लावा गुम्बद कहते हैं।

**Lava Flow (लावा प्रवाह) :** जब एक लम्बी दरार के सहारे छोटे-छोटे सुराखों से मैग्मा लावा के रूप में धीरे-धीरे धरातलीय सतह पर फैल जाता है तो इस तरह के प्रवाह को लावा प्रवाह कहते हैं।

**Lava Plain (लावा मैदान) :** दरारी ज्वालामुखी उद्भेदन के समय निस्सृत लावा की पतली चादरों के जमा होने से निर्मित मैदान को लावा मैदान कहते हैं।

**Lava Plug (लावा डाट या प्लग) :** मिश्रित शंकु वाले ज्वालामुखी के शान्त पड़ जाने पर उसकी नली तथा मुख के लावा से भर जाने से निर्मित आकृति को लावा प्लग कहते हैं। समूचे शंकु के अपरदित हो जाने पर ज्वालामुखी नली का लावा प्लग दीवाल के समान एक स्तम्भ के रूप में दृष्टिगत होता है। इसे ज्वालामुखी ग्रीवा (volcanic neck) कहते हैं।

**Law of Conservation of Angular Momentum (कोणीय आवेग की स्थिरता का नियम) :** इस नियम के अनुसार किसी विलग सिस्टम का सकल कोणीय आवेग स्थिर रहता है।

**Law of Floatation (तैराव का नियम) :** तरल भाग में किसी भी वस्तु के तैरने के लिए उसका 9 भाग तरल में तथा 1 भाग तरल भाग (जल) के ऊपर होना चाहिए। इसी को तैराव का नियम या तैराव का सिद्धान्त कहते हैं। सर जार्ज एयरी ने

भूसंतुलन के सन्दर्भ में इसी सिद्धान्त का परोक्ष रूप से उपयोग किया था।

**Law of Scattering (प्रकीर्णन का नियम) :** प्रकीर्णन के नियम के अनुसार प्रकीर्णन की मात्रा तरंगदैर्घ्य (wave-length) की चौथी शक्ति के विलोम समानुपातिक होती है। अर्थात् किसी निश्चित दशा में लघुतरंग विकिरण का दीर्घतरंग विकिरण की अपेक्षा अधिक प्रकीर्णन होगा। उदाहरण के लिए यदि किसी विकिरण तरंग की तरंगदैर्घ्य 04 माइक्रोमीटर है तथा दूसरी विकिरण तरंग की तरंगदैर्घ्य 08 माइक्रोमीटर है तो बड़ी तरंगदैर्घ्य (0.8 माइक्रोमीटर) द्वारा प्रकीर्णन की मात्रा छोटी तरंगदैर्घ्य (0.4 माइक्रोमीटर) द्वारा प्रकीर्णन की मात्रा का सोलहवां भाग होगी।

**Level of Compensation (क्षतिपूर्ति तल) :** धरातलीय सतह के नीचे जिस तल पर ऊँचे उठे भागों तथा नीचे धंसे भागों का भार बराबर होता है उसे क्षतिपूर्ति तल इसलिए कहा जाता है कि ऊँचे उठे भागों का कम घनत्व होने तथा निचले भाग का अधिक घनत्व होने से उनके भार में अन्तर की पूर्ति हो जाती है, अर्थात् सबका भार बराबर हो जाता है। इस क्षतिपूर्ति तल को समदबाव तल (level of uniform pressure) या समतोल तल (isostatic level) भी कहते हैं।

**Level of No Strain (तनावहीन स्तर) :** जेफ्रीज महोदय ने पर्वत - निर्माण के सन्दर्भ में प्रतिपादित अपने 'तापीय संकुचन सिद्धान्त' में शीतल होकर सिकुड़ चुकी ऊपरी परत एवं शीतल होती एवं सिकुड़ती निचली परत के मध्य वाले भाग को तनावहीन स्तर कहा है।

**Lianas (लियानास) :** उष्णकटिबन्धी क्षेत्रों की लकड़ी वाली लम्बी लताओं को विषुवतरेखीय वर्षा वनों में लियाना कहते हैं। लियानास वर्षावनों के पांचों स्तरों तक फैली रहती हैं।

**Life Layer (जीवन परत) :** पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त जीवधारियों के अस्तित्व को बनाये रखने वाले मण्डल को जीवन परत कहते हैं। इस जीवन परत का विस्तार वायुमण्डल, जलमण्डल तथा स्थलमण्डल में उस सीमा तक होता है जहां तक जीवधारियों के जीवित रहने के लिए आवश्यक तत्व सुलभ हो जाते हैं।

**Lithogenesis (भूसन्नति अवस्था) :** भूसन्नति एवं पर्वत निर्माण की प्रारम्भिक अवस्था को भूसन्नति अवस्था कहते हैं जिसके अन्तर्गत धरातलीय सतह पर विभिन्न कारणों से भूसन्नति का निर्माण होता है, पार्श्ववर्ती दृढ़ भूखण्डों के अपरदन से प्राप्त अवसादों का उसमें निक्षेप होता है जिसके भार के कारण भूसन्नति की तली में धंसाव होता है।

**Lithogenous Sediments (शैलजात अवसाद) :** स्थल स्थित या सागर स्थित चट्टानों के अपक्षय तथा अपरदन से प्राप्त अवसादों को शैलजात अवसाद कहते हैं।

**Lithosere (स्थलक्रमक) :** वाष्पीकरण की अधिकता से शुष्क पर्यावरण वाली नग्न शैलों पर विकसित वनस्पति के अनुक्रम को स्थलक्रमक कहते हैं।

**Lithosphere (स्थलमण्डल) :** पृथ्वी की क्रस्ट के ऊपर उठे जो स्थल को प्रदर्शित करता है, को स्थलमण्डल भाग, कहते हैं। साधारण अर्थ में स्थलमण्डल का तात्पर्य 'चट्टान मण्डल' होता है क्योंकि 'lithos' का अर्थ चट्टान होता है।

**Littoral Current (वेलांचली धारा) :** महासागरीय तटों के समानान्तर चलने वाली सागरीय लहरों को वेलांचली धारा कहते हैं।

**Littoral Zone (वेलांचल) :** उच्च एवं निम्न ज्वार तलों के मध्य सागरों के नितल मण्डल (benthos zone) को वेलांचल या लिटोरल मण्डल कहते हैं।

**Local Winds (स्थानीय पवन) :** सामान्य तौर पर लघु क्षेत्र में सीमित, तथा स्थानीय दशाओं से उद्भूत हवाओं को स्थानीय पवन कहते हैं, यथा : चिन्कूक।

**Loess (लॉयस) :** पवन द्वारा उड़ाये गये बारीक अवसादों के निक्षेप से निर्मित परतविहीन ढीले जमाव को लॉयस कहते हैं।

**Longitudinal Consequent (अनुदैर्घ्य अनुवर्ती) :** वलित पर्वतीय भागों में अभिनतियों में प्रवाहित होने वाली अनुवर्ती नदियों को अनुदैर्घ्य अनुवर्ती या अभिनतीय अनुवर्ती कहते हैं।

**Longitudinal Dunes (अनुदैर्घ्य बालुकास्तूप) :** पवन की दिशा में उसके समानान्तर निर्मित लम्बे-लम्बे बालुकास्तूपों को पवनानुवर्ती या अनुदैर्घ्य बालुकास्तूप कहते हैं।

**Lopolith (लोपोलिथ) :** लोपोलिथ मैग्मा के जमाव वाली एक विशिष्ट आकृति है जिसका निर्माण धरातल के नीचे अवतल आकार वाली छिछली बेसिन में मैग्मा के तस्तीरनुमा आकार में जमाव के कारण होता है। लोपोलिथ जर्मन भाषा के 'lopas' से लिया गया है जिसका अर्थ छिछली बेसिन होता है।

**Low Tide Water (निम्न ज्वार जल) :** ज्वार के सागर की ओर वापस लौटते समय सागरीय जल की गिरावट (fall of seawater) को निम्न ज्वार जल कहते हैं।

**Lunar Tidal Bulge (चन्द्र ज्वारीय उभार) :** चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा पृथ्वी के जलीय सतह में उत्पन्न ज्वारीय उभार को चन्द्र ज्वारीय उभार कहते हैं।

**Lunet (लुनेट) :** रेगिस्तानों की लघु गर्तों के पीछे निर्मित नवचन्द्राकार बालुकास्तूपों को लुनेट कहते हैं।

**Lussac's Gas Law (लुसक गैस नियम) :** यह नियम वायुदाब, गैसों के आयतन एवं तापमान के बीच सम्बन्धों को प्रदर्शित करता है।

**Mafic Lava (मैफिक लावा) :** ज्वालामुखी के उद्गार के समय निस्सृत गहरे रंग के खनिजों (पाइरोक्सीन्स, अम्फीबोल्स तथा आलविन) वाले मैग्नेसियम तथा लोहे की प्रधानता वाले लावा को मैफिक लावा कहते हैं (mafic = ma, magnesium + f, ferrus लोहा + ic)।

**Magma (मैगमा) :** धरातलीय सतह के नीचे शैलों के तप्त एवं तरल रूप को मैगमा कहते हैं।

**Mainshock (मुख्यकम्पन) :** भूकम्प के आने पर प्राथमिक एवं द्वितीयक कम्पन (tremor) के बाद आने वाले कम्पन को मुख्य कम्पन कहते हैं। यह लम्बी अवधि वाला होता है।

**Mantle (मैण्टिल) :** पृथ्वी की क्रस्ट के नीचे से 2900 किमी० की मोटाई वाला पृथ्वी का आन्तरिक भाग मैण्टिल कहा जाता है। इस परत के 2 भाग होते हैं, (1) ऊपरी मैण्टिल (क्रस्ट की निचली सीमा से 700 किमी० तक की गड्ढाई वाला भाग। क्रस्ट एवं ऊपरी मैण्टिल की विभाजक सीमा को मोहो असम्बद्धता (Mohodiscontinuity) कहते हैं। इसका नामकरण A. Mohorovicic के नाम पर किया गया है। इस असम्बद्धता के सहारे घनत्व एवं भूकम्पीय लहरों की गति (7.9 से 8.1 किमी० प्रति सेकण्ड) में अचानक वृद्धि होती है। (2) 700 किमी० से 2900 किमी० वाले भाग को निचली मैण्टिल कहते हैं।

**Manufactured Water (निर्मित जल) :** तकनीकी विधियों से खारे सागरीय जल को शोधन करके पीने योग्य ताजा जल बनाया जाता है। इस तरह शोधित (refined) सागरीय जल को निर्मित जल कहा जाता है।

**Mariculture (सागर कृषि) :** सागरीय क्षेत्रों में मनुष्य द्वारा कुछ खास विधियों द्वारा मछलियों को कैदी बनाकर तथा उन्हें पुष्टाहार का सेवन कराके उनके प्रजनन तथा उत्पादन में वृद्धि करके बाजार में बेचने तक समस्त प्रक्रिया को सागर कृषि कहते हैं।

**Marine Belt (सागरीय मेखला) :** क्षेत्रीय सागर को सागरीय मेखला या सीमान्त सागर कहते हैं।

**Marine Pasture (सागरीय चरागाह) :** स्वपोषी एवं प्रकाशसंश्लेषी फाइटोप्लैकटन की भरमार वाले सागरीय भागों के ऊपरी 200 मीटर वाले प्रकाशित मण्डल वाले भाग को सागरीय चरागाह कहते हैं।

**Marine Snowfall (सागरीय हिमपात) :** महासागरों में जल के अन्दर सूक्ष्म आकार के छोटे-छोटे अवसादों के सागरीय तली पर लगातार गिरते रहने को सागरीय हिमपात कहते हैं। यह स्थलीय भागों पर गिरने वाले हिमतूल (snow flakes) जैसे लगता है।

**Mature Plateau (प्रौढ़ पठार) :** अपरदन द्वारा उबड़-खाबड़ सतह एवं नुकीली चोटियों से युक्त सतह वाले पठार को प्रौढ़ पठार कहते हैं। अप्लेशियन पठार प्रौढ़ पठार का उदाहरण है।

**Mechanical Air Mass Modifications (वायुराशियों यांत्रिक रूपान्तर) :** किसी भी वायुराशि के भौतिक गुणों (मुख्यरूप से तापमान तथा आर्द्रता सम्बन्धी) में वायु के लम्बवत् संचलन (उपरिमुखी तथा अधोमुखी संचलन) तथा अभिवहनीय संचलन (advective movement) द्वारा परिवर्तन को यांत्रिक रूपान्तर या गतिक रूपान्तर कहते हैं।

**Mechanical Lifting (यांत्रिक उत्थापन) :** पर्वतीय अवरोध के कारण वायु के बलात् ऊपर उठने की प्रक्रिया को यांत्रिक या पर्वतीय उत्थापन कहते हैं।

**Mechanical Weathering (यांत्रिक अपक्षय) :** सूर्यातप, तुषार (पाला - frost) तथा वायु द्वारा चट्टानों के विघटित होने की क्रिया को यांत्रिक अपक्षय कहते हैं।

**Medial Moraines (मध्यस्थ हिमोढ़) :** दो हिमनदों के मिलने पर उनके भीतरी किनारों पर हिमानी ड्रिफ्ट के जमाव को मध्यस्थ हिमोढ़ कहते हैं।

**Median Mass (मध्य पिण्ड) :** भूसन्नतियों के किनारे वाले भागों का क्षैतिज सम्पीडन के कारण वलन होने से सीमान्त श्रेणियों के निर्माण के बाद भूसन्नतियों के वलन से अप्रभावित मध्यवर्ती भाग को मध्य पिण्ड कहते हैं। यथा: हिमालय एवं कुनलुन - ल्यानशान पर्वतों के बीच तिब्बत का पठार, जेग्रोस एवं एलबुर्ज पर्वतों के बीच इरान का पठार मध्य पिण्ड हैं।

**Megatherms (मेगाथर्म) :** मेगाथर्म ऐसे पौधों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो वर्ष भर उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता तथा वर्षा वाली दशाओं में विकसित होते हैं। विषुवतरेखीय वर्षा वन इसके अन्तर्गत आते हैं।

**Mesa (मेसा) :** घाटियों के बीच अपरदन से बची छोटी- छोटी पहाड़ियों के चौरस शिखर पर सपाट सतह वाली बेसाल्ट आवरण (lava-capped) वाली आकृति को मेसा कहते हैं। इसका शीर्ष सपाट तथा किनारे खड़े कगार वाले होते हैं। मेसा का निर्माण निचली शैल पर लावा की मोटी परत के जमाव तथा आस-पास के भाग के अपरदित हो जाने के कारण होता है।

**Mesopause (मेसोपाज़) :** मध्य मण्डल या मेसोस्फीयर की ऊपरी सीमा (80 किमी०) को मेसोपाज़ कहते हैं।

**Mesotherms (मेसोथर्म) :** सामान्य तापमान एवं वर्षा वाली दशाओं में विकसित होने वाले पौधों को मेसोथर्म कहते हैं (मध्यतापीय पादप समूह)। रूम सागरीय जलवायु के पौधे इसके अन्तर्गत आते हैं।

**Metamorphic Rock (रूपान्तरित शैल) :** अन्य चट्टानों के रूप में विभिन्न प्रक्रियाओं से परिवर्तन होने से बनी शैल को रूपान्तरित शैल कहते हैं। यथा : चूनापत्थर का संगमरमर में, बालुका पत्थर का क्वार्ट्जाइट में, शैल का स्लेट में, ग्रेनाइट का नीस में परिवर्तन आदि।

**Meteoric Water (आकाशी जल) :** हिम के पिघलने तथा जलवर्षा से धरातलीय सतह पर प्राप्त जल को आकाशी जल कहते हैं।

**Meteorology (मौसम/ऋतु विज्ञान) :** निचले वायुमण्डल की भौतिक दशाओं के अध्ययन करने वाले विज्ञान को मौसम या ऋतु विज्ञान कहते हैं।

**Microtherms (माइक्रोथर्म) : सूक्ष्म तापीय पौधे) :** ऐसी जलवायु, जिसमें सबसे ठंडे महीने का तापमान  $-3^{\circ}$  से० से कम परन्तु सबसे गर्म महीने का औसत तापमान  $10^{\circ}$  से० से अधिक परन्तु  $22^{\circ}$  से० से कम रहता है, में विकसित होने वाले पौधों को सूक्ष्मतापीय पौधे कहते हैं। उत्तरी (boreal) पतझड़ वन तथा स्टेपी वनस्पति इनके उदाहरण हैं।

**Migration (प्रवास) :** किसी आवास में वनस्पतियों के विकास के द्वितीय चरण में अन्य क्षेत्रों से पौधों के बीजों के आगमन के चरण (अवस्था) को प्रवास कहते हैं।

**Mineral Horizon (खनिज संस्तर) :** मृदा परिच्छेदिका के सबसे ऊपरी जैविक संस्तर के नीचे स्थित संस्तर को खनिज संस्तर कहते हैं। इस भाग में 3 उपसंस्तर (A, B तथा C संस्तर) होते हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के खनिज पाये जाते हैं।

**Miocene Period (मायोसीन शक) :** यह सेनोजाइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जो आज से 2.5 करोड़ वर्ष पूर्व प्रारम्भ होकर 1 करोड़ 10 लाख वर्ष पूर्व समाप्त हो गया (कुल अवधि 1.4 करोड़ वर्ष)। इस शक का नामकरण जर्मन भाषा के मियोन (meion) शब्द, जिसका अर्थ लघु होता है, के आधार पर किया गया है।

**Misfit Valley (वेमेल घाटी) :** सरिता अपहरण के कारण मुख्य नदी के ऊपरी भाग के अपहृत हो जाने के कारण निचले भाग में जल की आपूर्ति कम हो जाने में शीर्षकटी नदी (beheaded

stream) की जलधारा संकुचित हो जाती है। अतः इस शीर्षकटी नदी की घाटी पहली घाटी से कम चौड़ी होने के कारण उसमें फिट नहीं हो पाती है जिस कारण उसे बेमेल घाटी कहते हैं।

**Moist Adiabatic Rate (आर्द्र एडियाबेटिक दर) :** संघनन के बाद ऊपर उठती आर्द्र वायु के 5°C प्रति 1000 मीटर की दर से तापमान में कमी को आर्द्र एडियाबेटिक दर या मंदित एडियाबेटिक दर (retarded adiabatic rate) कहते हैं।

**Moisture Index (आर्द्रता सूचकांक) :** किसी भी क्षेत्र में आर्द्रता की अल्पता (deficit) या आधिक्य (surplus) को आर्द्रता सूचकांक कहते हैं।

**Monistic Concept (अद्वैतवादी संकल्पना) :** ग्रहों एवं पृथ्वी की उत्पत्ति के सन्दर्भ में एकल तारे से इनकी उत्पत्ति की संकल्पना। यथा : काण्ट एवं लाप्लास की निहारिका परिकल्पना।

**Monogeosyncline (एकल भूसन्नति) :** अपने विकास की एक ही चक्र वाली अत्यधिक लम्बी तथा संकरी भूसन्नतियों को एकल भूसन्नति कहते हैं।

**Monsoon (मानसून) :** किसी वृहद् प्रदेश में साल में दो बार दिशा-परिवर्तन करने वाली हवाओं को मानसून कहते हैं।

**Moraines (हिमोढ़) :** हिमनदों द्वारा विभिन्न प्रकार के हिमानी पदार्थों के निक्षेप को हिमोढ़ कहते हैं। यह निक्षेप हिमानी के विभिन्न भागों में होता है, जैसे कि पार्श्ववर्ती हिमोढ़, मध्यस्थ हिमोढ़, तलस्थ हिमोढ़ (ground moraines) एवं अन्तिम या अग्रान्तस्थ हिमोढ़ (terminal moraines)।

**Mountain Chain (पर्वत श्रृंखला) :** विभिन्न युगों में भिन्न-भिन्न प्रकार से निर्मित समानान्तर पर्वत श्रेणियों के समूह को पर्वत श्रृंखला या पर्वत माला कहते हैं।

**Mountain Glacier (पर्वतीय हिमनद) :** उच्च पर्वतीय भागों में पहाड़ी ढालों के सहारे निर्मित

(हिम के जमाव से) हिमनदों को पर्वतीय हिमनद कहते हैं। चूंकि ये हिमनद गहरी घाटियों से होकर गतिशील होते हैं, अतः इन्हें घाटी हिमनद भी कहते हैं।

**Mountain Group (पर्वत वर्ग) :** बिना किसी निश्चित क्रम में पाये जाने वाले उच्च पर्वतों के समूह को पर्वत वर्ग या पर्वत समुदाय कहते हैं। पर्वत वर्ग में सामान्यतया कटक (ridges) एवं श्रेणियाँ गोलाकार रूप में पायी जाती हैं।

**Mountain of Accumulation (संग्रहीत पर्वत) :** धरातल पर मिट्टी, मलवा, लावा आदि के निरन्तर जमा होते रहने से निर्मित पर्वतों को संग्रहीत पर्वत कहते हैं। ज्वालामुखी पर्वत (शंकु) सर्वप्रमुख उदाहरण है।

**Mountain Range (पर्वत श्रेणी) :** पर्वतों तथा पहाड़ियों के क्रम को पर्वत श्रेणी कहते हैं जिनमें कई कटक (ridges), शिखर तथा घाटियाँ सम्मिलित होती हैं। पर्वत श्रेणियाँ एक संकरी पट्टी में एक रेखा के रूप में फैली होती हैं। इन सभी का निर्माण एक ही काल में हुआ रहता है।

**Mountain Ridge (पर्वत कटक) :** कम चौड़ी एवं ऊँची पहाड़ियों के क्रम (सिलसिले) को पर्वत कटक कहते हैं जो आकार में लम्बे तथा संकरे होते हैं।

**Mountain System (पर्वत तंत्र) :** एक ही युग में निर्मित विभिन्न पर्वत श्रेणियों के समूह को पर्वत तंत्र कहते हैं। यह अधिक लम्बाई में विस्तृत पर्वत समूह होता है जिसमें अनेक एकाकी पर्वत या पर्वत श्रेणियाँ या दोनों साथ-साथ पायी जाती हैं।

**Mushroom Rock (छत्रक शैल) :** उष्ण मरुस्थली भागों में छतरीनुमा या कुक्कुरमुत्ते के आकार वाली शिला को छत्रक शैल या पेडस्टल शैल या पिट्जफिलसेन कहते हैं। इनका ऊपरी भाग वायु द्वारा न्यूनतम अपघर्षण होने से बाहर चारों तरफ निकला रहता है जबकि निचला भाग अधिकतम अपघर्षण के कारण पतला हो जाता है।

**Nadir Lunar Bulge (नादिर चन्द्र उभार) :** चन्द्रमा एवं पृथ्वी के घूर्णन (rotation) से सम्बन्धित गुरुत्वाकर्षण प्रभाव से चन्द्रमा के सामने पृथ्वी के जल में उभार को नादिर चन्द्र उभार कहते हैं।

**Nappe (ग्रीवाखण्ड) :** क्षैतिज संचलन द्वारा अत्यधिक सम्पीडन (compression) होने से परिवलन वलन (recumbent folds) की दोनों भुजायें समानान्तर तथा क्षैतिज होती हैं और अधिक सम्पीडन होने से परिवलन मोड़ का एक खण्ड टूटकर सैकड़ों किमी० दूर दूसरे खण्ड पर सवार (चढ़) हो जाता है। इस तरह की संरचना को ग्रीवाखण्ड कहते हैं।

**Natural Bioparadise (प्राकृतिक जैव स्वर्ग) :** मनुष्य द्वारा न्यूनतम प्रभावित पर्यावरण वाले वन्य क्षेत्रों (wild areas) को प्राकृतिक जैव स्वर्ग कहते हैं।

**Natural Bridge (प्राकृतिक पुल) :** चूना पत्थर शैल में निर्मित वृहद् कन्दरा की छत के ढह (ध्वस्त) जाने पर उसके अवशिष्ट भाग, जो कन्दरा के दोनों पार्श्वों को जोड़ता है, को प्राकृतिक पुल कहते हैं।

**Nebkha (नेबखा) :** झाड़ियों के पीछे रेत के जमा होने से निर्मित बालुकास्तूपों को नेबखा कहते हैं।

**Nebula (निहारिका) :** ब्रह्माण्ड में तारों से निस्सृत गैस एवं धूल की राशि के पिण्ड को निहारिका कहते हैं।

**Necton Community (तैराक समुदाय) :** सागरीय जल की विभिन्न गहराइयों में तैरने वाले जन्तुओं के समूह को नेक्टन समुदाय कहते हैं।

**Neep Tide (लघु ज्वार) :** चन्द्रमा, पृथ्वी तथा सूर्य की समकोणिक स्थिति में उत्पन्न ज्वार को लघु ज्वार कहते हैं।

**Neritic Sediments (नेरेटिक अवसाद) :** सागरीय तली पर जमा होने वाले सागरीय अवसादों को नेरेटिक अवसाद कहते हैं।

**Nested Crater (घोंसलादार क्रैटर) :** एक अति विस्फोटक ज्वालामुखी के उद्गार से निर्मित वृहदाकार क्रैटर के अन्दर बाद में साधारण उद्गार के कारण छोटे-छोटे कई क्रैटर बन जाते हैं। इस तरह कई लघु क्रैटर से युक्त वृहदाकार क्रैटर को घोंसलादार क्रैटर कहते हैं।

**Net Primary Production (शुद्ध प्राथमिक उत्पादन) :** जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र में पोषण स्तर एक में श्वसन (respiration) द्वारा खर्च ऊर्जा के बाद संचित (भण्डारित) ऊर्जा को नेट (शुद्ध) प्राथमिक उत्पादन। कहते हैं।

**Net Radiation (शुद्ध विकिरण) :** सकल प्रवेशी सौर्यिक विकिरण की मात्रा एवं सकल बहिर्गामी पार्थिव विकिरण की मात्रा के अन्तर को शुद्ध विकिरण कहते हैं।

**Nife (निफे) :** पृथ्वी की सबसे निचली आन्तरिक परत का स्वेस ने इसकी खनिजीय रचना के आधार पर निफे (निकल + फेरियम) नामकरण किया है। इस परत में लोहे की उपस्थिति से पता चलता है कि पृथ्वी के क्रोड में चुम्बकीय शक्ति है। इसकी व्यास 6880 किमी० है।

**Nivation (नाइवेशन) :** परिहिमानी क्षेत्रों के पर्वतीय भागों में पहाड़ी ढालों पर स्थित छिट-पुट कोटरों (hollows) में स्थित हिमखण्डों (snowpatches) के प्राकृतिक कार्यों को नाइवेशन कहते हैं। यह एक परिहिमानी भ्वाकृतिक प्रक्रम (geomorphic process) है।

**Nivation Hollows (नाइवेशन कोटर) :** परिहिमानी क्षेत्रों के पर्वतीय ढालों पर हिमखण्डों (snow patches) या नाइवेशन द्वारा अपरदन कार्यों से उत्पन्न कोटरों को नाइवेशन कोटर कहते हैं जो 3 प्रकार के होते हैं : अनुप्रस्थ कोटर, अनुदैर्घ्य कोटर तथा वृत्ताकार कोटर।

**Noctiluscent Cloud (नाक्टीलुसेण्ट बादल) :** मध्यमण्डल (मेसोस्फीयर) में ध्रुवों के ऊपर ग्रीष्मकाल में उत्का धूल एवं संवहनीय प्रक्रिया

द्वारा ऊपर लायी गयी आर्द्रता के सहयोग से संघनन (condensation) होने से निर्मित बादलों को नाक्टीलुसेण्ट बादल (निशादीप्त बादल) कहते हैं।

**Nodal Line (नोडल रेखा) :** किसी जलीय भाग में जिस रेखा के सहारे एक सिरे से दूसरे सिरे तक जल गतिशील होता है उसे नोडल रेखा कहते हैं।

**Nodal Point (नोडल विन्दु) :** किसी भी जलीय भाग की सतह के उस विन्दु को नोडल केन्द्र कहते हैं जहां पर जल स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

**Non-periodic Wind (असामयिक पवन) :** किसी सीमित क्षेत्र में वर्ष के किसी खास समय में चलने वाली हवा को असामयिक पवन कहते हैं। यह अल्प अवधि वाली होती है, यथा : उत्तर भारत में लू।

**Normal Fault (सामान्य भ्रंश) :** अपसारी (divergent) क्षैजित संचलन के कारण उत्पन्न तनावमूलक बल के कारण चट्टानों में दरार पड़ जाने से जब दोनों खण्ड विपरीत दिशाओं में सरक जाते हैं तो इस तरह की भ्रंश को सामान्य भ्रंश कहते हैं।

**Nudation (विवस्त्रीकरण) :** किसी भी आवास में सर्वप्रथम किसी भी प्रकार की वनस्पति से रहित नग्न क्षेत्र का विभिन्न विधियों तथा कारकों के निर्माण के चरण को विवस्त्रीकरण कहते हैं।

**Number Pyramid (संख्या पिरैमिड) :** जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र में आहार श्रृंखला के विभिन्न पोषण स्तरों (trophic levels) पर जीवों की संख्या के पिरैमिड को संख्या पिरैमिड कहते हैं।

**Nunatak (नुनाटक) :** विस्तृत हिमक्षेत्रों या हिमनदियों के बीच ऊँचे उठे चट्टानी टीलों को नुनाटक कहते हैं। चारों तरफ से हिम से घिरे होने के कारण नुनाटक को हिमानी द्वीप (glacial islands) भी कहते हैं।

**Nutrient Reservoir (पोषक तत्व भण्डार) :** जीवों के लिए आवश्यक तत्वों से भरपूर मिट्टी संघटक को पोषक तत्व भण्डार या जैविक कारखाना कहते हैं।

**Obsequent Stream (प्रत्यनुवर्ती सरिता) :** प्रधान अनुवर्ती नदी के प्रवाह की विपरीत दिशा में प्रवाहित होने वाली सरिता को प्रतिअनुवर्ती कहते हैं।

**Occluded Front (अधिविष्ट वाताग्र) :** शीत वाताग्र द्वारा उष्ण वाताग्र के अभिलंघन (overtaking) करने तथा धरातलीय सतह से गर्म वायु के पूर्ण विलोपन के कारण उत्पन्न वाताग्र को अधिविष्ट वाताग्र कहते हैं।

**Occlusion (अधिधारण) :** शीत वाताग्र द्वारा उष्ण वाताग्र के अभिलंघन (overtaking) को वाताग्र का अधिधारण कहते हैं।

**Ocean Current (महासागरीय धारा) :** जब महासागर का जल एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत निश्चित दिशा की ओर तीव्र गति से अग्रसर होता है तो उसे महासागरीय धारा कहते हैं।

**Ocean Deposits (महासागरीय निक्षेप) :** महासागरीय तली पर अवसादी परतों के रूप में संगठित अवसादों के निक्षेप को महासागरीय निक्षेप कहते हैं।

**Ocean Ranching (सागर जन्तु सम्बर्द्धन) :** सागरीय स्तनधारी जन्तुओं (यथा : सूंस, डालफिन, ह्वेल आदि) के पालन एवं प्रशिक्षण को सागर पशुपालन या सागर जन्तु सम्बर्द्धन कहते हैं।

**Oligocene (ओलिगोसीन) :** यह सेनोजोइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जिसकी अवधि आज से 4 करोड़ वर्ष पूर्व से 2.5 करोड़ वर्ष पूर्व तक थी (कुल अवधि 1.5 करोड़ वर्ष)। इस शक का नामकरण जर्मन भाषा के ओलिगोस शब्द, जिसका अर्थ अल्प होता है, के आधार पर किया गया है।

**Opposition (वियुति) :** जब पृथ्वी, सूर्य एवं चन्द्रमा के बीच सीधी रेखा में होती है तो उसे वियुति कहते हैं।

**Ordovician Period (आर्डोविसियन शक) :** यह पैल्योजोइक महाकल्प का एक भूगार्भिक काल है जिसका समय आज से 50 करोड़ वर्ष पूर्व से 44 करोड़ वर्ष पूर्व तक था (कुल अवधि, 6 करोड़ वर्ष)। इस शक का नामकरण युनाइटेड किंगडम के उत्तरी वेल्स की आर्डोविसस नामक जनजाति के आधार पर किया गया है।

**Organic Horizon (जैविक संस्तर) :** मृदा परिच्छेदिका के सबसे ऊपरी संस्तर को जैविक (O संस्तर) कहते हैं जिसमें जीवित तथा मृत जैविक पदार्थों की बहुलता होती है।

**Orogen (ओरोजेन) :** कोबर ने गतिशील जलीय क्षेत्रों अर्थात् भूसन्नतियों का जर्मन भाषा में नामकरण ओरोजेन किया है। इन्हीं से पर्वत-निर्माण (orogenesis) होता है।

**Orogenesis (पर्वतीकरण) :** भूसन्नतियों से पर्वतों के निर्माण की प्रक्रिया को पर्वतीकरण कहते हैं।

**Orogenetic Movement (पर्वतीय संचलन) :** ओरोजेनेटिक शब्द ग्रीक भाषा के 'ओरोज' (oros), जिसका अर्थ पर्वत है तथा 'जेनेसिस', जिसका अर्थ उत्पत्ति है, दो शब्दों से मिलकर बना है। इसे संक्षेप में पर्वतन बल या मात्र पर्वतन कहते हैं। पर्वतन बल क्षैतिज संचलन के कारण जनित सम्पीडनात्मक बल (compressional force) के कारण उत्पन्न होता है। इस बल द्वारा वलित पर्वतों का निर्माण होता है।

**Orthogeosyncline (संयुक्त भूसन्नति) :** स्टील महोदय ने अत्यन्त विस्तृत तथा लम्बे भूगार्भिक इतिहास वाली भूसन्नतियों को संयुक्त भूसन्नति कहा है।

**Outer Core (वाह्य क्रोड) :** वाह्य अन्तरतम (क्रोड) का विस्तार पृथ्वी के आन्तरिक भाग में 2900 किमी० (निचली क्रस्ट तथा वाह्य क्रोड

सीमा, गुटेनबर्ग असम्बद्धता) से 5150 किमी० की गहराई तक पाया जाता है। इस मण्डल से होकर S भूकम्पीय लहर नहीं गुजर पाती है, जिससे प्रमाणित होता है कि वाह्य क्रोड तरलावस्था में है।

**Outer Planets (वाह्य ग्रह) :** सौरमण्डल के वाह्य भाग में स्थित वृहदाकार 4 ग्रहों (वृहस्पति, शनि, अरूण, वरुण) को वाह्य ग्रह कहते हैं। यद्यपि कुबेर (प्लूटो) बाहरी भाग का अन्तिम सदस्य है परन्तु आकार में यह छोटा है।

**Outwash Plain (अवक्षेप मैदान) :** हिमनद के अवसान (ablation) या हिमनद के पिघलने से प्राप्त जल सरिता के रूप में प्रवाहित होकर अन्तिम हिमोढ़ के सामने हिमानी निक्षेपण द्वारा मैदान का निर्माण करता है। इस तरह निर्मित मैदान को हिमानी अवक्षेप मैदान कहते हैं।

**Oxbow Lake (गोखुर झील) :** नदियां मैदानी भागों में बड़े-बड़े विसर्पो (meanders) का निर्माण करती हैं। जब विसर्प अत्यधिक विस्तृत हो जाते हैं तो नदियाँ उन्हें छोड़कर अपना मार्ग सीधा कर लेती हैं। परित्यक्त विसर्पो के जलीय भाग को चापाकार या गोखुर झील कहते हैं।

**Oxidation (आक्सीकरण) :** वायुमण्डलीय आक्सीजन से मिले जल के सम्पर्क में लौह खनिज युक्त शैलों के आने के कारण उनमें होने वाली विघटन (rusting) की क्रिया को आक्सीकरण कहते हैं।

**Pahoehoe Lava (पहोयहोय लावा) :** अत्यधिक तरल तथा विस्तृत क्षेत्र में पतली चादर के रूप में फैलने वाले लावा को हवाईलैण्ड की भाषा में पहोयहोय लावा कहते हैं। इसे रोपीलावा (ropy lava) भी कहते हैं।

**Palaeomagnetism (पुराचुम्बकत्व) :** पृथ्वी के विभिन्न भूगार्भिक कालों में निर्मित शैलों में संरक्षित चुम्बकीय गुणों (अवशेषों) को पुराचुम्बकत्व कहते हैं।

**Palsa (पल्सा) :** परिहिमानी क्षेत्रों के दलदली क्षेत्रों में पीट से निर्मित विशिष्ट प्रकार के टीले (mounds) या गिरिका (hummock) को पल्सा कहते हैं। इसका निर्माण तुषार उत्क्षेपण से होता है।

**Pampas (पम्पास) :** दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी भाग, खासकर अर्जन्टीना तथा युरुग्वे में विस्तृत शीतोष्ण घास के मैदान को पम्पाज़ कहते हैं।

**Parallel Drainage Pattern (समानान्तर अपवाह तंत्र) :** जहां पर ढाल के अनुसार कई नदियां समान्तर रूप में प्रवाहित होती हैं तो इस तरह के प्रतिरूप को समानान्तर अपवाह प्रतिरूप कहते हैं। इस तरह का प्रतिरूप समान ढलुआ सागर तटीय मैदानों में विकसित होता है।

**Parasite Cone (परपोषित शंकु) :** एक वृहद् ज्वालामुखी शंकु के पार्श्व पर निर्मित छोटे-छोटे शंकुओं को परपोषित शंकु इसलिए कहते हैं कि इनके निर्माण में आवश्यक ज्वालामुखी पदार्थों की आपूर्ति ज्वालामुखी की मुख्य नली से निकली छोटी-छोटी गौण नलियों से होती है।

**Parasites (परपोषी) :** अपने आहार की आपूर्ति के लिए दूसरे जीवित जीवों पर निर्भर करने वाले जन्तुओं को परजीवी कहते हैं।

**Parent Materials (मूल पदार्थ) :** मृदा परिच्छेदिका के नीचे ठोस शैल के पदार्थों को मूल पदार्थ कहते हैं क्योंकि उसके ऊपर स्थित मृदा का निर्माण आधार शैल (basal or parent rock) के अपक्षय से उत्पन्न पदार्थों से ही होता है।

**Passive Dispersal (निष्क्रिय विसरण) :** किसी वाहक (यथा : वायु, जलतरंग, सागरीय धारा, विभिन्न जीव तथा मानव) के माध्यम से होने वाले जनतुओं के विसरण को निष्क्रिय विसरण कहते हैं।

**Patterned Ground (पैटर्न्स भूतल) :** परिहिमानी क्षेत्रों में धरातलीय सतह पर स्वतः निर्मित ज्यामितीय आकार (बहुभुज, वृत्त, जाल - net, पट्टी तथा माला) वाले स्थलरूपों से युक्त

धरातल को पैटर्न्स भूतल कहते हैं। 2°- 6° ढाल वाले धरातल पर चट्टानी टुकड़ों तथा कंकड़ों के स्वतः एकत्रित होने से बहुभुज, वृत्त या मुद्रिका तथा जाल का निर्माण होता है, 6° से 30° की ढलुआ सतह पर प्रस्तर पट्टियों तथा प्रस्तर मालाओं का निर्माण होता है, परन्तु 30° से अधिक ढाल होने पर कोई ज्यामितीय आकार नहीं बन पाता है।

**Patternoster Lakes (पैटरनास्टर झील) :** हिमनदों द्वारा निर्मित दैत्याकार हिमसोपानों में प्रत्येक सोपान के आधार पर निर्मित गर्तों में जल एकत्र होने से निर्मित झील को पैटरनास्टर झील कहते हैं तथा ऊपर से नीचे आने पर लगता है झीलों की माला बन गयी हो। इस तरह की झीलों के क्रम को मालाकार झील (beaded lakes) कहते हैं।

**Ped (पेड) :** मिट्टियों के कणों के समूहन से प्राकृतिक रूप से बने पिण्ड को पेड कहते हैं। मिट्टियों की जुताई होने पर ये पेड टूट कर छोटे पिण्डों में विभक्त हो जाते हैं। इन्हें क्लाड या ढेला कहते हैं।

**Pediment (पेडीमेण्ट) :** उष्ण शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क मरुस्थली भागों में पर्वतों के अग्रभाग में जलीय अपरदन से निर्मित सामान्य ढाल वाले तथा नग्न शैल सतह वाले स्थलरूप को पेडीमेण्ट कहते हैं।

**Pediplain (पेडीप्लेन) :** गर्म शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क प्रदेशों में जल द्वारा अपरदन से जनित कई पेडीमेण्ट के मिल जाने से निर्मित विस्तृत उर्मिल धरातल (rolling surface) वाले मैदान को पेडीप्लेन कहते हैं।

**Pegmatitic Igneous Rock (पेग्मैटिटिक आग्नेय शैल) :** बहुत बड़े कणों (रवों-grains या crystal) वाली आभ्यान्तरिक आग्नेय शैल को पेग्मैटिटिक शैल कहते हैं। (यथा: पेग्मैटिटिक ग्रेनाइट, पेग्मैटिटिक डायोराइट, पेग्मैटिटिक साइनाइट आदि।

**Pelagic Matter (पेलैजिक पदार्थ)** : गहरी महासागरीय तलियों पर मन्द गति से निक्षेपित होने वाले पदार्थों को पेलैजिक पदार्थ कहते हैं।

**Penplain (समप्राय मैदान)** : जलीय अपरदन चक्र के अन्त में क्षैतिज अपरदन द्वारा निर्मित कम उच्चावच वाले तथा मोनाडनाक से युक्त अपरदन जनित स्थलाकृति को पेनीप्लेन कहते हैं। समप्राय मैदान की सतह पर कम ऊँचाई तथा उत्तल - अवतल ढाल वाली अवशिष्ट पहाड़ियाँ पायी जाती हैं, जिन्हें मोनाडनाक कहते हैं।

**Perched Water Table (लटकता भीमजलस्तर)** : धरातलीय सतह के नीचे जब दो जलभण्डारों (जलभरों-aquifers) का बीच में स्थित अपारगम्य मण्डल (अक्वीक्लूड) द्वारा अलगाव हो जाता है तो ऊपर स्थित जलभण्डार के जलस्तर को लटकता भीम-जलस्तर कहते हैं।

**Perigean Tide (उपभू ज्वार)** : जब चन्द्रमा पृथ्वी से निकटतम दूरी पर होता है तो उस समय उत्पन्न ज्वार को उपभू ज्वार कहते हैं, जो सामान्य ज्वार से 15 से 20 प्रतिशत ऊंचा होता है।

**Periglacial Climate (परिहिमानी जलवायु)** : परिहिमानी जलवायु उसे कहते हैं जहां पर तापमान इतना नीचा (औसत वार्षिक तापमान 1° सेण्टीग्रेड से -50° सेण्टीग्रेड, औसत वार्षिक वर्षा 120 मिमी० से 1400 मिमी०, अधिकांश हिम रूप में) होता है कि हिमपात तो होता है परन्तु उससे हिमागार (snow fields) तथा हिमानी (glaciers) का आविर्भाव नहीं हो पाता है परन्तु धरातलीय सतह के नीचे भूपदार्थों में स्थित जल सदा हिमीकृत अवस्था में रहता है (परमाफ्रास्ट के रूप में)। इस प्रकार की परिहिमानी जलवायु वाले क्षेत्रों को परिहिमानी क्षेत्र तथा उसके भौतिक पर्यावरण को परिहिमानी पर्यावरण कहते हैं।

**Periodic Wind (सामयिक पवन)** : किसी सीमित क्षेत्र में चौबीस घण्टे में दो बार दिशा-

परिवर्तन करने वाली हवाओं को सामयिक पवन कहते हैं, जैसे स्थलीय एवं सागरीय समीर, पर्वत एवं घाटी समीर।

**Permafrost (परमाफ्रास्ट)** : परिहिमानी क्षेत्रों में धरातल में मिट्टियों में एवं चट्टानों में जल या नमी हिमीकृत अवस्था में होती है। इस तरह सतत हिमीकृत धरातल को परमाफ्रास्ट (permanently frozen) कहते हैं। परमाफ्रास्ट वर्तमान समय में ग्लोब के 20 प्रतिशत भाग पर व्याप्त है। ब्रायन महोदय ने परमाफ्रास्ट के लिए परेजेलीसोल नामावली का उपयोग किया है।

**Permanent Winds (स्थायी पवन)** : भूमण्डल पर वृहद् स्तरीय उन हवाओं को स्थायी या ग्रहीय हवायें कहते हैं जिनका विस्तार विस्तृत धरातलीय सतह पर होता है, जिनकी दिशा वर्ष भर लगभग यथावत् रहती है, यद्यपि उनके क्षेत्रों में मौसम के अनुसार थोड़ा बहुत परिवर्तन होता रहता है।

**Permian Period (पर्मियन शक)** : यह पैल्योजाइक महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जिसकी अवधि आज से 27 करोड़ वर्ष पूर्व प्रारम्भ होकर 22.5 करोड़ वर्ष पूर्व तक थी। कुल अवधि, 4.5 करोड़ वर्ष। इस शक का नामकरण पूर्व सोवियत रूस के पर्म नामक प्रान्त के आधार पर किया गया है।

**Phacolith (फैकोलिथ)** : ज्वालामुखी उद्गार के समय वलित पर्वतों की अपनतियों (anticlines) तथा अभिनतियों (synclines) में मैगमा के जमाव से बनी आकृति को फैकोलिथ कहते हैं।

**Photons (फोटान)** : सूर्य की 300 किलोमीटर मोटी बाहरी सतह (फोटोस्फीयर) से निकलने वाली जलती गैसों की ऊर्जा को फोटान कहते हैं।

**Photosphere (प्रकाशमण्डल)** : फोटान के प्रभुत्व के कारण सूर्य की बाहरी चमकीली/प्रकाशित सतह को प्रकाशमण्डल कहते हैं।

**Phototrophs (प्रकाशसंश्लेषी) :** जीवमण्डलीय पारिस्थित तंत्र में आहार श्रृंखला के पोषण स्तर एक के प्रकाशसंश्लेषण (photosyntheses) विधि द्वारा अपना आहार (food) बनाने वाले प्राथमिक उत्पादक हरे पौधों को प्रकाशसंश्लेषी कहते हैं।

**Phytoplanktons (फाइटोप्लैंकटन) :** सागरों के ऊपरी 200 मीटर तक के प्रकाशित मण्डल में प्रकाशसंश्लेषी अति सूक्ष्म आकार के अत्यधिक प्रजनन करने वाले सागरीय पौधों को फाइटोप्लैंकटन या पादप प्लैंकटन कहते हैं। ये सागरीय जल की सतह पर उतराते (float) रहते हैं।

**Piedmont Alluvial Plain (गिरिपद जलोढ़ मैदान) :** पर्वतों की पदस्थली (foothills) के पास जलोढ़ शंकुओं एवं जलोढ़ पंखों के द्वारा निर्मित मैदानों को गिरिपद जलोढ़ मैदान कहते हैं, यथा : भाबर मैदान।

**Piedmont Glacier (गिरिपाद हिमनद) :** जब पर्वतीय भाग से कई हिमनदियां नीचे उतरकर पर्वत के आधार (base) या तली (foot) पर आपस में मिलकर एक विस्तृत हिमनद का निर्माण करती हैं तो उसे गिरिपद हिमनदी कहते हैं।

**Piedmont Plateau (गिरिपद पठार) :** पर्वतों के आधार (base) पर निर्मित पठारों को गिरिपद पठार कहते हैं। इस तरह के पठार के एक ओर उच्च पर्वत होता है तथा दूसरी ओर सपाट मैदान होता है।

**Pillow Lava (पिलो या शिरोधन लावा) :** तकिया या बोरे (sacks) के आकार में जमकर धीरे-धीरे गतिशील होने वाले लावा को पिलो लावा कहते हैं।

**Pingo (पिंगो) :** यह एक एस्किमो भाषा का शब्द है। परिहिमानी क्षेत्रों में तुषार उत्क्षेपण द्वारा निर्मित विखरी गुम्बदाकार छोटी-छोटी पहाड़ियों तथा टीलों को पिंगो कहते हैं। इनकी ऊंचाई कुछ

सेण्टीमीटर से 60 मीटर तक तथा व्यास 30 मीटर तक होती है। जब तक पिंगो का शिखर गोलाकार बना रहता है तो उसे बन्द पिंगो (closed pingo) कहते हैं, परन्तु जब उनका शीर्ष धंस (collapse) जाता है तो उसे खुला पिंगो (open pingo) कहते हैं।

**Pinnate Drainage Pattern (पंखनुमा / परनुमा अपवाह प्रतिरूप) :** पक्षियों के पर यानी पंख के आकार के (परनुमा) अपवाह प्रतिरूप का विकास खड़े ढाल वाली पर्वत श्रेणियों से घिरी संकरी अनुदैर्घ्य घाटियों वाले भागों में होता है। पार्श्ववर्ती समानान्तर पर्वत श्रेणियों के तीव्र ढालों से सरितायें निकलकर मुख्य नदी से न्यून कोण पर मिलती हैं।

**Pipcracker (पिपक्रेकर) :** परमाफ्रास्ट में सूई की तरह हिम को सूचिका हिम या पिपक्रेकर कहते हैं।

**Planeticimals (ग्रहाणु) :** चैम्बरलिन ने सूर्य के धरातल से पास आते तारे की आकर्षण शक्ति से निकले असंख्य छोटे-छोटे कणों को ग्रहाणु या प्लानेटेसिमल नाम दिया।

**Planktons (प्लैंकटन) :** सागरों के ऊपरी 200 मीटर तक के प्रकाशित मण्डल में सूक्ष्म आकार के उतराने वाले सागरीय पौधों एवं जन्तुओं के समुदाय को प्लैंकटन कहते हैं।

**Plant Community (पादप समुदाय) :** पादप प्रजातियों के सामाजिक समूह को पादप समुदाय कहते हैं।

**Plant Dispersal (पादप विसरण) :** विभिन्न कारकों एवं कारणों के फलस्वरूप अपने उत्पत्ति केन्द्रों से पौधों के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसरण (spreading), फैलाव तथा प्रव्रजन (migration) को पादप विसरण कहते हैं।

**Plate (प्लेट) :** पृथ्वी के दृढ़ भूखण्ड अथवा क्रस्ट को प्लेट कहते हैं। इस तरह प्लेट 2 प्रकार के होते हैं : (1) महाद्वीपीय प्लेट, तथा (2) महासागरीय (महासागरीय नितल) प्लेट।

**Plate Tectonics (प्लेट विवर्तनिकी) :** पृथ्वी के विभिन्न प्लेटों के स्वभाव, उनकी गतिशीलता तथा उनसे सम्बन्धित सभी विवर्तनिक (tectonic) क्रियाओं के अध्ययन को प्लेट विवर्तनिकी कहते हैं।

**Playa (प्लाय़ा) :** उष्ण मरुस्थली भागों में चारों तरफ से पर्वतों से घिरी बेसिनों को प्लाय़ा कहते हैं। इन्हें बालसन भी कहते हैं। प्लाय़ा को अरब के रेगिस्तान में खबारी या ममलाहा कहते हैं।

**Pleistocene Period (प्लीस्टोसीन शक) :** यह नूतन महाकल्प का एक भूगर्भिक काल है जो आज से 10 लाख वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ तथा 10 हजार वर्ष पहले समाप्त हो गया।

**Pliocene Period (प्लायोसीन शक) :** यह सेनाजाइक महाकल्प का अन्तिम भूगर्भिक काल था जो आज से 1.1 करोड़ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ तथा 10 लाख वर्ष पहले समाप्त हो गया। इस शक का नामकरण जर्मन भाषा के प्लीआन (pleion) जिसका अर्थ होता है दीर्घ (greater), के आधार पर किया गया है

**Plunge Line (प्रतोड़न रेखा) :** सागरीय तट से जिस दूरी पर समान ऊंचाई वाली तरंगों के शिखर टूटते हैं तथा सर्फ के रूप में बदलते हैं उस दूरी से यदि तट के समानान्तर रेखा खींची जाय तो उसे प्रतोड़न रेखा कहते हैं।

**Plunge Pool Lake (अवनमन कुण्ड झील) :** नदियों के मार्ग में बड़े-बड़े जलप्रपातों के निचले भाग में निर्मित गहरे गड्ढों (potholes) को अवनमन कुण्ड कहते हैं। इन कुण्डों में जल भर जाने से अवनमन कुण्ड झील का निर्माण होता है।

**Plunging Breaker (प्लंजिंग ब्रेकर) :** प्लंजिंग ब्रेकर में तरंग शीर्ष पर सागरीय जल टूटकर सीधा लम्बवत रूप में नीचे गिरता है तथा तेजी से तट की ओर गतिशील होता है।

**Plutonic Earthquake (पातालीय या प्लूटानिक भूकम्प) :** धरातलीय सतह से अत्यधिक गहराई पर उत्पन्न होने वाले भूकम्पों को प्लूटानिक भूकम्प (यह नामकरण पाताल देवता 'प्लूटो' के नाम पर किया गया है) भी कहते हैं।

**Polar Cell (ध्रुवीय कोशिका) :** दोनों गोलार्द्धों में 60°- 90° अक्षांशों के मध्य तापीय प्रत्यक्ष (अर्थात् तापजन्य) ध्रुवीय उच्च वायुदाब की मेखला से तापीय अप्रत्यक्ष (अर्थात् गतिजन्य) उपध्रुवीय न्यून वायुदाब की मेखला (60°- 65°) की ओर धरातलीय हवाओं के परिसंचरण एवं ऊपरी वायुमण्डल में इसके विपरीत दिशा में पवन संचरण की कोशिका को ध्रुवीय कोशिका कहते हैं।

**Polar Front (ध्रुवीय वाताग्र) :** ठंडी एवं भारी ध्रुवीय वायुराशि तथा गर्म एवं हल्की उष्णकटिबन्धी वायुराशि के अभिसरण से उत्पन्न अस्थिर लहरनुमा वाताग्र को ध्रुवीय वाताग्र कहते हैं।

**Polje (पोल्जे) :** चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्र में सर्वाधिक विस्तृत गर्त को पोल्जे कहते हैं। पोल्जे युवाला से बड़ा होता है क्योंकि युवाला का क्षेत्रफल कुछ एकड़ तक ही होता है जबकि पोल्जे का क्षेत्रफल कई वर्ग किलोमीटर तक होता है।

**Polygeosyncline (बहुल भूसन्नति) :** अत्यधिक चौड़ी, विस्तृत तथा जटिल भूगर्भिक इतिहास वाली एवं धरातल पर अत्यधिक दीर्घ अवधि वाली भूसन्नतियों को बहुल भूसन्नति कहते हैं।

**Polygonal Karst (बहुभुजीय कार्स्ट) :** कई डोलाइन के आपस में मिल जाने पर निर्मित विस्तृत गर्त का आकार गोल न होकर कई भुजाओं वाला हो जाता है। इस तरह बहुभुज की आकृति वाली स्थलाकृति को बहुभुजीय कार्स्ट कहते हैं।

**Ponors (पोनर) :** कार्स्ट क्षेत्र में सतह पर निर्मित विलयन छिद्र (swallow holes) एवं सतह के नीचे कन्दरा को जोड़ने वाली नली को पोनर कहते हैं।

**Porphyritic Ingeous Rock (मिश्रित कणों वाली आग्नेय शैल) :** महीन कणों तथा बड़े कणों के मिश्रण से बनी आग्नेय शैल को पोरफाइटिक आग्नेय शैल कहते हैं।

**Pot Hole (जलगर्तिका) :** नदियों द्वारा अपनी तलियों में जलगर्तन (pothole drilling) द्वारा निर्मित गड्ढों को जलगर्तिका कहते हैं। जलगर्तिकाओं का निर्माण नदियों की तरुणावस्था में होता है।

**Potential Evapotranspiration (स्थितिज वाष्पन- वाष्पोत्सर्जन) :** वाष्पन - वाष्पोत्सर्जन तापीय दक्षता (thermal efficiency) तथा जल के क्षय (water loss) का सूचकांक होता है क्योंकि यह मिट्टियों तथा वनस्पतियों से वायुमण्डल में स्थानान्तरित होने वाली नमी तथा ऊष्मा की मात्रा को दर्शाता है तथा सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का प्रतिफल है।

**Prairies (प्रेयरी) :** उत्तरी अमेरिका में विस्तृत समतल या उर्मिल पृष्ठ (ढलुआ) वाले उपजाऊ विस्तृत मैदानों, जो पहले ऊंची-ऊंची शीतोष्ण घासों से अच्छादित थे (अब कृषि क्षेत्रों में बदल दिए गये हैं), को प्रेयरी कहते हैं। ये रूस के स्टेपीज़ तथा अर्जन्टीना के पम्पाज़ के समकक्ष हैं।

**Precipitation Effectiveness (वर्षण प्रभाविता) :** किसी भी क्षेत्र की सकल वार्षिक वर्षा के उस भाग को, जो वास्तविक रूप में वनस्पतियों की वृद्धि के लिए सुलभ होता है, वर्षण प्रभाविता या वर्षण दक्षता (precipitation efficiency) कहते हैं।

**Pressure Gradient (दाबप्रवणता) :** दो स्थानों के वायुदाब के अन्तर को दाबप्रवणता कहते हैं।

वास्तव में दाब प्रवणता दो स्थानों के बीच उच्च वायुदाब से न्यून वायुदाब की दिशा में दाब (pressure) के घटने को प्रदर्शित करती है। इसे बैरोमिट्रिक ढाल भी कहते हैं।

**Pressure Gradient Force (दाबप्रवणता बल) :** दो स्थानों के बीच वायुदाब प्रवणता द्वारा उत्पन्न बल को दाबप्रवणता बल कहते हैं। यह बल किसी भी पवन के संचार (गति, movement) के लिए गतिवर्द्ध बल (accelerating force) का कार्य करता है। यह बल सदा उच्च वायुदाब से न्यून वायुदाब की दिशा में कार्य करता है।

**Primary Consumers (प्राथमिक उपभोक्ता) :** जीवमण्डल में अपने आहार के लिए स्वपोषी एवं प्रकाशसंश्लेषी प्राथमिक उत्पादक हरे पौधों पर निर्भर करने वाले शाकाहारी जन्तुओं को प्राथमिक उत्पादक कहते हैं।

**Primary Producers (प्राथमिक उत्पादक) :** जीवमण्डल में प्रकाशसंश्लेषण द्वारा अपना आहार स्वयं बनाने वाले हरे पौधों को प्राथमिक उत्पादक कहते हैं।

**Primary Production (प्राथमिक उत्पादन) :** जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र में पोषण स्तर एक के हरे पौधों द्वारा आहार ऊर्जा के उत्पादन को प्राथमिक उत्पादन कहते हैं।

**Primary Succession (प्राथमिक अनुक्रम) :** किसी भी वनस्पति विहीन आवास में पहली बार विभिन्न चरणों (sere) या अनुक्रमों (sequences) से होकर वनस्पति समुदाय के चरम विकास को प्राथमिक अनुक्रम कहते हैं।

**Primary Waves (प्राथमिक या प्रधान लहर) :** भूकम्प द्वारा सबसे पहले उत्पन्न होने वाली भूकम्पीय तरंगों को प्राथमिक लहर कहते हैं जो ध्वनि तरंग के समान होती हैं। इसे अनुदैर्घ्य लहर (longitudinal waves) तथा दबाव वाली लहर (compressional waves) भी कहते हैं।

**Primary Waves (प्राथमिक लहर) :** प्राथमिक या अनुदैर्घ्य (longitudinal) लहरें वे भूकम्पीय लहरें हैं जो ध्वनि तरंग के समान होती हैं तथा इनमें कणों (अणुओं) की गति तरंग की रेखा की सीध में होती है। इन्हें सम्पीडनात्मक लहर (compressional waves) भी कहते हैं। ये सबसे अधिक गति से ठोस तथा तरल भाग दोनों में चलती हैं इन्हें P वर्ण से दर्शाते हैं।

**Principle of Constant Proportion (स्थिर समानुपात का नियम) :** स्थिर समानुपात के नियम के अनुसार सागरीय लवणता के सभी संघटक लवणता से प्रभावित न होकर महासागरों में हर जगह एक ही समानुपात में मिलते हैं।

**Pustaz (पुस्ताज) :** हंगरी में बिखरे स्टेपी घास क्षेत्रों को स्थानीय स्तर पर पुस्ताज कहते हैं।

**Pycnocline (पाइक्नोक्लाइन) :** उष्ण एवं उपोष्ण कटिबन्धीय महासागरों में 300 से 1000 मीटर गहराई वाले भाग, जिसमें सागरीय जल के घनत्व में तेजी से परिवर्तन (वृद्धि) होता है, को पाइक्नोक्लाइन कहते हैं।

**Pycnocline Layer (पाइक्नोक्लाइन परत) :** महासागरों में 300 से से 1000 मीटर गहराई वाले भाग को, जिसमें गहराई के साथ सागरीय जल के घनत्व में तेजी से परिवर्तन होता है, पाइक्नोक्लाइन परत या घनत्व परिवर्तन परत कहते हैं।

**Quadrature (समकोणिक स्थिति) :** पृथ्वी, सूर्य एवं चन्द्रमा की समकोणिक स्थिति को क्वैडरेचर कहते हैं।

**Radial Drainage Pattern (अरीय अपवाह प्रतिरूप) :** अरीय या अपकेन्द्री अपवाह प्रतिरूप का विकास गुम्बदाकार पर्वतों तथा ज्वालामुखी शंकुओं पर होता है जिनके शीर्ष भाग से नदियां निकल कर चारों दिशाओं में ढाल का अनुसरण करती नीचे की ओर प्रवाहित होती हैं।

**Radiation (विकिरण) :** बिना किसी पदार्थीय माध्यम (यथा: ठोस, तरल एवं गैस) के एक वस्तु से दूसरी वस्तु में ऊष्मा के स्थानान्तरण की प्रक्रिया को विकिरण कहते हैं।

**Radiation Cooling (विकिरण शीतलन) :** किसी भी आर्द्र वायु से सीधे तौर पर विकिरण द्वारा ऊष्मा के क्षय होने से वायु के ठंडा होने को विकिरण शीतलन कहते हैं।

**Radiation Window (विकिरण खिड़की) :** उच्च पर्वतों को विकिरण की खिड़की कहते हैं क्योंकि बढ़ती ऊँचाई के साथ-साथ प्रवेशी सौरिक विकिरण तथा बहिर्गामी पार्थिव विकिरण, दोनों में वृद्धि होती है।

**Radiolaria (रेडियोलैरिया) :** प्लैकटन एवं बेन्थस समुदाय के एक कोशिका वाले सिलिकायुक्त चोल (test) धारक सागरीय जन्तुओं को रेडियोलैरिया कहते हैं।

**Raft Dammed Lake (रेफ्ट द्वारा निर्मित झील) :** जब नदियां जंगलों से होकर प्रवाहित होती हैं तो उनके साथ लकड़ी के बड़े-बड़े लट्टे भी बहते रहते हैं। इन लट्टों से नदी का जल अवरुद्ध होकर अस्थायी झील का निर्माण करता है, जिसे रेफ्ट (लकड़ी के लट्टे) निर्मित झील कहते हैं।

**Rainforests of Oceans (महासागरीय / सामुद्रिक वर्षावन) :** उष्ण कटिबन्धी महासागरों एवं सागरों में प्रवालों की बस्तियों को सामुद्रिक वर्षावन कहते हैं क्योंकि इनमें 10,00,000 से अधिक प्रवालों की प्रजातियां होती हैं।

**Randketten (रैण्डकेटेन) :** कोबर महोदय ने भूसन्नतियों के किनारों पर निर्मित समानान्तर सीमान्त श्रेणियों (marginal ranges) को रैण्डकेहेन बताया है।

**Range of Temperature (तापान्तर) :** प्रति समय इकाई (एक दिन, एक महीना, एक ऋतु या एक वर्ष) में उच्चतम एवं न्यूनतम तापमानों के अन्तर को तापान्तर या तापमान का परिसर कहते हैं।

**Rapid Dispersal (त्वरित विसरण) :** एक आवास से अचानक सामूहिक वहिगर्भन को त्वरित विसरण कहते हैं परन्तु नये आवास में जन्तुओं का औपनिवेशीकरण नहीं हो पाता है।

**Rapids (क्षिप्रिका) :** नदियों के मार्ग में कम ऊँचाई से जल के गिरने से बने प्रपात को क्षिप्रिका कहते हैं। सामान्यतया क्षिप्रिका की स्थिति मुख्य प्रपात के ऊपर या नीचे होती है।

**Rayleigh Scattering (रेले प्रकीर्णन) :** सौरिक विकिरण के प्रकीर्णन की प्रक्रिया एवं उसके बहुआयामी प्रभावों का रेले महोदय द्वारा अध्ययन किए जाने के कारण सौरिक विकिरण के प्रकीर्णन को रेले प्रकीर्णन कहा जाता है।

**Reaction (प्रतिक्रिया) :** किसी आवास में वनस्पतियों के आनुक्रमिक विकास की अवस्था जिसमें विभिन्न पौधों में आपसी प्रतिस्पर्धा होती है तथा उसका स्थानीय आवास पर प्रभाव पड़ता है।

**Rectangular Drainage Pattern (आयताकार अपवाह प्रतिरूप) :** आयताकार संधियों तथा जोड़ों के सहारे उत्पन्न सरिताओं के जाल को आयताकार अपवाह प्रतिरूप कहते हैं। इसमें नदियां एक दूसरे से समकोण पर मिलती हैं।

**Red Data Book (रेड डाटा बुक) :** पौधों एवं जन्तुओं की संकटापन्न एवं विलोपन के कगार पर खड़ी प्रजातियों की सूची को रेड डाटा बुक कहते हैं।

**Red Tides (लाल ज्वार) :** कुछ लाल-भूरे सूक्ष्मस्तरीय पौधों में इतनी तेजी से प्रजनन प्रस्फोट होता है कि सागरीय सतह पर लाल-भूरे पौधों का अपार समूह निर्मित हो जाता है। इसे लाल ज्वार कहते हैं।

**Reg (रेग) :** उष्ण रेगिस्तानी भागों में पवन द्वारा अपरदित मैदानों को (सहारा में) रेग, सेरिर तथा हमादा कहते हैं।

**Regolith (रिगोलिथ) :** आधार शैल के अपक्षयित (weathered) पदार्थों को रिगोलिथ कहते हैं।

यह मृदा परिच्छेदिका के निचले C संस्तर का प्रतिनिधित्व करता है।

**Regressional Sea (निवर्तमान सागर) :** महाद्वीपीय सीमान्त भागों से सागरीय जल के वापस लौटने की प्रक्रिया को सागरीय निवर्तन कहते हैं।

**Rejuvenated Plateau (पुनर्युवनित पठार) :** पठारों की जीर्णवस्था (अपरदन के आधार पर) के बाद यदि उनमें पुनः उत्थान होने से उनकी ऊँचाई अधिक हो जाती है तो उन्हें पुनर्युवनित पठार कहते हैं।

**Relative Humidity (सापेक्षिक आर्द्रता) :** किसी निश्चित आयतन एवं तापमान वाली वायु में स्थित वास्तविक जलवाष्प (निरपेक्ष आर्द्रता) और उस वायु के अधिकतम जलवाष्प धारण करने की क्षमता के अनुपात को सापेक्षिक आर्द्रता कहते हैं। इसे सामान्यतया प्रतिशत में व्यक्त करते हैं।

**Relic Lake (अवशिष्ट झील) :** गहरे गड्ढों से युक्त जल मग्नतट (continental shelves) महादेशजनक संचलन (epeirogenetic movement) के कारण ऊपर उठकर सागरीय जल से मुक्त हो जाता है, तो गहरे गड्ढों में जमा सागरीय जल झीलों का निर्माण करता है, जिसे अवशिष्ट झील कहते हैं।

**Relict Mountain (अवशिष्ट पर्वत) :** दीर्घ अवधि तक अपरदन से प्रभावित कम ऊँचाई वाले प्राचीन पर्वतों को अवशिष्ट पर्वत कहते हैं, जैसे : अरावली पर्वत, विन्ध्यन श्रेणियां आदि।

**Resequent Streams (नवानुवर्ती सरिता) :** वलित पर्वतीय क्षेत्र में द्वितीय अपरदन चक्र के दौरान उद्भूत एवं प्रधान अनुवर्ती सरिता के अनुरूप दिशा में प्रवाहित होने वाली अनुवर्ती सरिता को नवानुवर्ती इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका उद्भव मुख्य अनुवर्ती के बहुत बाद होता है।

**Residence Time (निवास समय) :** सागरीय लनवणता के सन्दर्भ में महासागरीय जल में नमक के आयन के घोल रूप में रहने के औसत समय को आयन का निवास समय कहते हैं।

**Retail Sedimentation (फुटकर अवसादीकरण) :** एक- एक कणों के रूप में सागरीय अवसादों के मन्द गति से लगातार जमा होने की प्रक्रिया को फुटकर अवसादीकरण कहते हैं। इस प्रक्रिया में वारीक अवसादों की लगातार बरसात होती रहती है।

**Reverse Fault (व्युत्क्रम भ्रंश) :** जब क्षैतिज संचलन के कारण चट्टानों में दरार पड़ने के कारण दोनों खण्ड आमने- सामने खिसकते हैं तो निर्मित भ्रंश को व्युत्क्रम भ्रंश कहते हैं। इसे उत्क्रम भ्रंश या क्षेपित भ्रंश (thrust fault) भी कहते हैं। चूँकि व्युत्क्रम भ्रंश का निर्माण मुख्य रूप से क्षैतिज संचलन (अभिसारी-convergent) के द्वारा उत्पन्न सम्पीडन के कारण होता है अतः इसे सम्पीडनात्मक भ्रंश (compressional fault) भी कहा जाता है।

**Rift Valley (रिफ्ट या भ्रंश घाटी) :** दो सामान्य भ्रंशों के बीच वाले भाग के नीचे धंस जाने के कारण उत्पन्न बेसिन या घाटी को रिफ्ट घाटी या ग्राबेन कहते हैं।

**Rift Valley Lake (भ्रंश झील) :** भूपटलीय सतह में सामान्य भ्रंशों के बीच निर्मित रिफ्ट घाटी में जल भर जाने से निर्मित झील को भ्रंश झील या रिफ्ट घाटी झील कहते हैं।

**Rigid Masses (दृढ़ भूखण्ड) :** प्राचीन एवं स्थिर दृढ़ स्थलीय भागों को दृढ़ भूखण्ड कहा जाता है। प्रत्येक महाद्वीप का इन्हीं दृढ़ भूखण्डों के चारों ओर स्थलीय अभिवृद्धि होने से निर्माण एवं विस्तार हुआ है।

**Rime (तुहिन) :** किसी वस्तु पर अतिशीतल जलसीकरों (supercooled water droplets) के त्वरित हिमीकरण के फलस्वरूप छोटे-छोटे

सफेद रंग के दानेदार हिमकणों के निक्षेप को तुहिन कहते हैं।

**Rip Current (तरंगिका) :** सागरीय तट पर सागरीय तरंगें टकराकर जब पीछे अर्थात् सागर की ओर लौटती हैं तो उनका कुछ जल सतह के ऊपर सागर की ओर तरंगों के रूप में चलता है। इन्हें तरंगिका कहते हैं।

**River Capture (सरिता अपहरण) :** अधिक तेज ढाल से होकर तीव्र प्रवाह वाली सरिता द्वारा दूसरी सरिता के जलमार्ग को अपने में मिला लेने की प्रक्रिया को सरिता अपहरण कहते हैं।

**River Meander (नदी विसर्प) :** समतल मैदानी क्षेत्रों में विकसित नदियों के घुमावदार मार्गों को एशिया माइनर की मियाण्डर नदी के नाम पर मियाण्डर या विसर्प कहते हैं।

**River Terraces (नदी वेदिका) :** नदियों की घाटियों के दोनों ओर निर्मित सोपानों को नदी वेदिका कहते हैं।

**Roche Moutonnee (राश मुटोने) :** हिमनदों के मार्ग में असमान ढाल (हिमनद के गतिशील होने वाली दिशा में तीव्र ढाल तथा जिसपर से हिमनद आता है, उस ओर मन्द ढाल) वाली शिलाओं को भेड़ पीठ शैल इसलिए कहते हैं, मानो दूर से देखने पर लगता है सफेद ऊन वाली भेड़ें बैठी हैं।

**Rock Flowage Zore (चट्टान प्रवाह मण्डल) :** धरातलीय सतह के नीचे निश्चित गहराई पर ऊपर स्थित भार के कारण चट्टानों के छिद्र तथा रंध्र बन्द हो जाते हैं और भूमिगत जल उसके नीचे नहीं जा सकता है। ऐसे मण्डल को, जिसके ऊपर जल रिस कर नीचे जाता है परन्तु जिसके नीचे जल नहीं रिस सकता, को चट्टान प्रवाह मण्डल कहते हैं।

**Rogue Waves (दैत्याकार या रोग तरंग) :** महासागरों में कभी-कभी अचानक उत्पन्न होने वाली अत्यधिक ऊंची प्रचण्ड तरंगों को रोग या दैत्याकार तरंग कहते हैं।

**Root Formation (जड़ निर्माण) :** भूसन्तुलन के सन्दर्भ में सर जार्ज एयरी के मतानुसार तरल भाग में किसी वस्तु के तैरने के लिए उसके 9 भाग को तरल में रहना होता है। इस तरह धरातलीय ऊँचे भागों (यथा : पर्वत, पठार आदि) के पूर्ण सन्तुलन के लिए उनकी ऊँचाई का नौ गुना भाग धरातलीय सतह के नीचे रहता है। इसी तथ्य के आधार पर व्यक्त किया गया है कि ऊँचे उच्चावचों की जड़ें होती हैं जिनके द्वारा ऐसे उच्चावच धरातलीय सतह पर सन्तुलित रहते हुए खड़े रहते हैं।

**Root Osmosis (जड़ परासरण) :** जिस क्रिया द्वारा पौधे अपनी जड़ों से मृदा में स्थित पोषक तत्वों को घोल रूप में प्राप्त करते हैं उस क्रिया को जड़ परासरण कहते हैं।

**Rosby Waves (रासबी तरंग) :** ऊपरी वायुमण्डल में सर्पिलाकार (लहरनुमा) जेट स्ट्रीम के प्रवाह को कार्ल गुस्ताव रासबी के नाम पर रासबी तरंग / लहर कहते हैं।

**Rotatory Circulation (घूर्णन परिसंचरण) :** चक्रवातीय या प्रतिचक्रवातीय प्रतिरूप में वायु के परिसंचरण को घूर्णन परिसंचरण कहते हैं।

**Sabkha (सबखा) :** शुष्क उष्ण कटिबन्धी भागों के तटीय भागों में निक्षेप जनित सपाट तटों को साल्ट फ्लैट या सबखा कहते हैं।

**Salinas (सैलिनास) :** रेगिस्तानी क्षेत्रों में पर्वतों से घिरी प्लायामें जब नमक की मात्रा अधिक हो जाती है तो उसे सैलिनास कहते हैं।

**Saline Lake (नमकलीन झील) :** अधिक लवणता (salinity) वाली झीलों को खारे जल की झील कहा जाता है। ऐसी झीलें प्रायः गर्म शुष्क एवं अर्द्धशुष्क भागों में पायी जाती हैं, क्योंकि वहाँ पर वाष्पीकरण अधिक होता है। राजस्थान की सांभर एवं पंचभद्रा झीलें खारे पानी की झील हैं।

**Salinity (लवणता) :** सागरीय जल के निश्चित आयतन वाले भाग में नमक की कुल मात्रा को सागरीय लवणता कहते हैं। इसे प्रति हजार ग्राम

इकाई में व्यक्त किया जाता है, यथा :  $30^{\circ}/_{00}$  लवणता का अर्थ है प्रति 1000 ग्राम सागरीय जल में 30 ग्राम नमक है। सामान्य रूप में सागरीय जल के भार एवं उसमें घुले नमक के भार के अनुपात को सागरीय लवणता कहते हैं।

**Salinity (लवणता) :** सामान्य रूप में सागरीय जल के प्रति इकाई भार (प्रायः 1000 ग्राम) एवं उसमें घुले हुए पदार्थों के भार के अनुपात को सागरीय लवणता कहते हैं। इसे प्रति एक हजार ग्राम जल में प्रदर्शित करते हैं -  $^{\circ}/_{00}$ ,  $30^{\circ}/_{00}$  लवणता = 1000 ग्राम सागरीय जल में 30 ग्राम लवण है।

**Salinometer (लवणतामापी यंत्र) :** सैलिनोमीटर सागरीय लवणता की माप करने वाला एक उपकरण है जो  $0.003^{\circ}/_{00}$  लवणता तक का सही-सही माप कर सकता है।

**Salt Weathering (नमक अपक्षय) :** शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क उष्ण रेगिस्तानों में वायु नमक उड़ाकर चट्टानों के सुराखों एवं संधियों में जमा करती है। इस नमक के कारण चट्टानों के सुराखों की दीवारों पर दबाव बढ़ जाने से चट्टानों के विघटन को नमक अपक्षय कहते हैं।

**Saltation (उत्परिवर्तन) :** उत्परिवर्तन या साल्टेशन भ्वाकृतिक प्रक्रमों द्वारा विभिन्न आकार के अवसादों के परिवहन की प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न आकार वाले चट्टानी टुकड़े उछल-उछलकर स्थानान्तरित होते हैं। इस प्रक्रिया में ये टुकड़े सतह से सटकर नहीं चलते हैं।

**Sand Blasting (सैण्ड ब्लास्टिंग) :** उष्ण शुष्क रेगिस्तानी भागों में तीव्र वेग वाली पवन द्वारा अपने साथ लाये ठोस शैलीय पदार्थों से मार्ग में पड़ने वाली चट्टानों के अपघर्षण (abrasion) की क्रिया को सैण्डब्लास्टिंग कहते हैं।

**Sand Dune (बालुकास्तूप) :** वायु द्वारा रेत के लगातार जमाव से बने विभिन्न आकार एवं विस्तार वाले रेत के टिब्बों को बालुकास्तूप कहते हैं।

**Sandfree Corridor (रेतमुक्त मार्ग) :** दो समानान्तर अनुदैर्घ्य बालुकास्तूपों के मध्य नग्न शैल वाले तथा रेतविहीन संकरे मार्ग को रेतमुक्त कारिडोर या कारवां मार्ग या गासी कहते हैं।

**Saprophytes (मृतजीवी) :** मृत पौधों एवं जन्तुओं से जैविक यौगिकों को घोलरूप में ग्रहण कर अपना जीवन निर्वाह करने वाले जन्तुओं को मृतजीवी कहते हैं।

**Sargasso Sea (सारगैसो सागर) :** उत्तरी अटलाण्टिक महासागर में चारों तरफ से सागरीय धाराओं से घिरे तथा सारगैसम पौधों से भरपूर बन्द सागरीय भाग को सारगैसो सागर कहते हैं।

**Saturated Stage (सम्पृक्तावस्था) :** जब मिट्टियों के सभी सुराख तथा रिक्त स्थान जल से पूर्णतया भर जाते हैं तो इस दशा को मिट्टियों की सम्पृक्तावस्था कहते हैं।

**Savanna (सवाना) :** उष्णकटिबन्धी पूर्वी अफ्रीका में मोटी-मोटी लम्बी घासों वाले विस्तृत क्षेत्रों को सवाना कहते हैं जिनमें छोटे-छोटे बिखरे पेंड़ मिलते हैं।

**Scattering (प्रकीर्णन) :** वायुमण्डल में स्थित कणिकीय पदार्थों (particulate matters यथा-धूलिकण) तथा गैसों के अणुओं (molecules) द्वारा प्रवेशी सौर्यिक विकिरण के कुछ भाग के विभिन्न दिशाओं में विसरण (diffusion) या बिखराव को प्रकीर्णन कहते हैं।

**Sea-floor Spreading (सागर-नितल प्रसरण) :** मध्य महासागरीय कटकों (ridges) के सहारे किसी भी महासागरीय तली के दोनों तरफ फैलने को सागर नितल का प्रसरण कहते हैं। यह क्रिया अपसारी (divergent) या रचनात्मक (constructive) प्लेटों के मध्य महासागरीय कटकों से अपसरण (विपरीत दिशाओं में गमन) के कारण होती है। इस क्रिया द्वारा महासागरों की तलियों (floors या bottom) में निरन्तर विस्तार होता है।

**Seasonal Dispersal (मौसमी विसरण) :** अपने आवास से वार्षिक प्रतिकूल मौसम से बचने के लिए अन्य अनुकूल आवास में जन्तुओं के आगमन तथा मूल आवास के मौसम के अनुकूल होने पर जन्तुओं के अपने मूल आवास में पुनः आगमन को मौसमी विसरण कहते हैं।

**Seasonal Time Lag (मौसमी समय शिथिलता) :** अधिकतम सूर्यातप एवं अधिकतम तापमान वाले महीनों तथा न्यूनतम सूर्यातप एवं न्यूनतम तापमान वाले महीनों में समय अन्तराल को मौसम समय शिथिलता कहते हैं।

**Secondary Circulation (द्वितीयक परिसंचरण) :** धरातलीय सतह पर एवं वायुमण्डल में चक्रवातीय एवं प्रतिचक्रवातीय परिसंचरण, मानसून पवन एवं वायुराशियों के प्रवाह को द्वितीयक या द्वितीय श्रेणी का वायुमण्डलीय परिसंचरण कहते हैं।

**Secondary Succession (द्वितीयक अनुक्रम) :** किसी आवास में पहले से विकसित वनस्पति समुदाय का मानव हस्तक्षेप द्वारा सफाया हो जाने के बाद दुबारा विकसित होने वाले वनस्पति अनुक्रम को द्वितीयक अनुक्रम कहते हैं।

**Secondary Waves / Transverse Waves (द्वितीयक या अनुप्रस्थ लहर) :** अनुप्रस्थ या गौण भूकम्पीय लहरें जल तरंग अथवा प्रकाश तरंग के समान होती हैं जिनमें कणों (अणुओं) की गति लहर की दिशा के समकोण पर होती है। संक्षेप में, इन्हें S लहर कहते हैं। ये तरल भाग में प्रायः लुप्त हो जाती हैं।

**Sedimentary Rock (अवसादी शैल) :** विभिन्न प्रकार के अवसादों (sediments) के जमाव व समूहन से बनी शैल को अवसादी शैल कहते हैं। अवसादी शैलों में परतें एवं जीवाश्म (fossils) पाये जाते हैं।

**Seismic Waves (भूकम्पीय लहर) :** भूकम्प के कारण उत्पन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की जहरों को भूकम्पीय लहर कहते हैं।

**Seismograph (सीमोग्राफ) :** भूकम्पीय लहरों का अंकन करने वाले यंत्र को सीमोग्राफ (भूकम्पलेखी यंत्र) कहते हैं।

**Seismology (भूकम्प विज्ञान) :** भूकम्प विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अन्तर्गत भूकम्पीय लहरों का अध्ययन किया जाता है तथा उसके आधार पर पृथ्वी की आन्तरिक संरचना का पता लगाया जाता है।

**Self (सीफ) :** समानान्तर रूप में एक सीध में मिलने वाले बालुकास्तूपों को रैखिक स्तूप, रेत कटक, सीफ तथा अलव बालुकास्तूप कहते हैं।

**Semi Arid Region (अर्द्धशुष्क प्रदेश) :** 250 से 500 मिमी० औसत वार्षिक वर्षा वाले शुष्क प्रदेशों को अर्द्ध शुष्क प्रदेश कहते हैं।

**Sensible Heat (ज्ञेय ऊष्मा) :** किसी वस्तु की उस ऊष्मा को ज्ञेय ऊष्मा कहते हैं जिसे सामान्य थर्मामीटर से नापा जा सके तथा जिसे भण्डारित (store) किया जा सके।

**Sequent Stream (क्रमवर्ती सरिता) :** ढालों का अनुसरण कर प्रवाहित होने वाली सरिताओं को क्रमवर्ती या अनुवर्ती सरिता कहते हैं।

**Sere (क्रमक) :** किसी भी पारिस्थितिक तंत्र या आवास में वनस्पति के एक समुदाय के दूसरे समुदाय द्वारा प्रतिस्थापन (replacement) को अनुक्रम (succession) कहते हैं तथा इस तरह के वनस्पति समुदाय के क्रम (sequence) को क्रमक कहते हैं।

**Shattering (विखराव) :** सूर्यातप से तप्त चट्टानों पर वर्षा की हल्की छीटें पड़ने से उनकी ऊपरी पतली परतों के चटककर टूटने की क्रिया को शैटरिंग कहते हैं।

**Shore Line (सागरीय किनारा) :** किसी भी समय सागरीय जल की स्थल की ओर अन्तिम सीमा को सागरीय किनारा कहते हैं। यह रेखा स्थायी न होकर हर सागरीय लहर के साथ बदलती रहती है।

**Sial (सियाल) :** एडवर्ड स्वेस ने पृथ्वी की क्रस्ट (ऊपरी परत) का नामकरण सिलिका (silica-si) तथा अल्युमिनियम (aluminium-al) की प्रधानता के कारण सियाल (si + al) किया है।

**Siliceous Rock (सिलिका प्रधान शैल) :** अधिक मात्रा में सिलिका युक्त अवसादी शैल को सिलिका प्रधान शैल कहते हैं। इस अवसादी शैल का निर्माण रेडियोलेरिया एवं स्पंज जीवों तथा डायटम पौधों के अवशिष्ट भागों के संघटन से होता है।

**Sill (सिल) :** परतदार अथवा रूपान्तरित शैलों की परतों के बीच मैग्मा के प्रवेश एवं जमाव द्वारा बनी आग्नेय शैल को सिल कहते हैं। पतली सिल को शीट कहा जाता है।

**Silurian Period (सिल्यूरियन शक) :** यह पेल्योजाइक महाकाल्य का एक भूगर्भिक काल है, सिका समय आज से 44 करोड़ वर्ष पूर्व से 40 करोड़ वर्ष पूर्व तक रहा। इस शक का नामकरण दक्षिणी वेल्स की सिलूटर नामक ब्रिटिश जनजाति के आधार पर किया गया है।

**simanite (साइमा) :** एडवर्ड स्वेस ने सियाल के नीचे स्थित पृथ्वी की दूसरी परत का नामकरण सिलिका एवं मैग्नेसियम की प्रधानता के आधार पर सीमा (si + ma) किया है।

**Sink Hole (घोल रंध्र) :** चूना पत्थर शैल वाले भाग में वायुमण्डलीय कार्बन डाइ आक्साइड युक्त जल चट्टानों की संधियों के सहारे कार्बोनेट खनिजों को घुलाकर अलग कर लेता है। इस तरह असंख्य छिद्रों का निर्माण हो जाता है। इन बेलनाकार एवं कीप्राकार (funnel shaped) छिद्रों को घोल रंध्र कहते हैं।

**Sink of Ocean Salinity (सागरीय लवणता का निर्गमन) :** सागरों से नमक के बाहर निकलने को सागरीय लवणता का निर्गमन (output) कहते हैं। यह क्रिया वाष्पीकरण, साल्ट स्प्रे, नयी बेसाल्ट, अधिशोषण आदि प्रक्रियाओं से सम्पादित होती है।

**Sinking Creek (धंसती निवेशिका) :** चूनापत्थर शैल वाले क्षेत्र में धरातलीय सतह पर प्रवाहित होने वाली सरिताओं का जल असंख्य घोल रंध्रों (sink holes) से नीचे चला जाता है। ऐसी सरिताओं को धंसती निवेशिका कहते हैं।

**Sleet (सहिम वृष्टि) :** बर्फ एवं जलसीकरों के सम्मिलित रूप से धरातलीय सतह पर गिरने को सहिम वृष्टि (हिम सहित वृष्टि) कहते हैं। अमेरिका में 5 मिलीमीटर या उससे कम व्यास वाली पारदर्शी या ट्रान्सलुसेण्ट हिम की छोटी-छोटी गुटिकाओं (pellets) के वर्षण को स्लीट कहते हैं।

**Slip-off Stope (स्कन्ध विस्तारित ढाल) :** नदी के मियाण्डर के अवतल किनारे, जिस पर रेत का निक्षेप होता है, को स्कन्ध (विस्तारित) ढाल कहते हैं।

**Snow Eater (हिम भक्षक) :** गर्म एवं शुष्क चिनूक पवन को स्नोईटर इसलिए कहते हैं कि इनके आगमन से तापमान में अचानक वृद्धि होने से बर्फ अचानक पिघल जाती है।

**Snowline (हिमरेखा) :** सागर तल से उस ऊंचाई को हिमरेखा कहते हैं जिसके ऊपर सदा हिमावरण रहता है।

**Snowpatch (हिमखण्ड) :** परिहिमानी क्षेत्रों के पहाड़ी ढालों पर सर्क के आकार वाले छिटपुट कोटरों में स्थित हिम को हिमखण्ड कहते हैं।

**Soil (मृदा) :** शैलों के विघटन एवं वियोजन (अपक्षय) से उत्पन्न ढीले एवं असंगठित भूपदार्थों को मृदा कहते हैं। मिट्टियां जन्तु, खनिज एवं जैविक पदार्थों से निर्मित प्राकृतिक वस्तु होती हैं जिनमें विभिन्न मोटाई के विभिन्न संस्तर होते हैं।

**Soil Enrichment (मृदा सम्वर्द्धन) :** मृदा संवर्द्धन की प्रक्रिया के अन्तर्गत उन समस्त क्रियाओं तथा प्रक्रमों को सम्मिलित करते हैं जो मिट्टियों में जैविक एवं खनिज पदार्थों की वृद्धि में सहायक होते हैं।

**Soil Profile (मृदा परिच्छेदिका) :** मृदा की ऊपरी सतह से नीचे आधार शैल के मध्य स्थित समस्त मृदामण्डल के लम्बवत स्तरों (horizons) को सामूहिक रूप से मृदा परिच्छेदिका या मृदा पार्श्विका कहते हैं।

**Solar Flare (सौर ज्वाला) :** सूर्य की वाह्य सतह से कभी-कभी जलती तप्त गैसों के अचानक विस्फोटक प्रस्फोट (explosive burst) को सौर ज्वाला कहते हैं।

**Solar Wind (सौर पवन) :** सूर्य के फोटोस्फीयर से क्रोमोस्फीयर में अवमुक्त (released) इलेक्ट्रान एवं प्रोटान की धारा को सौर पवन कहते हैं।

**Solution (Corrosion, घोलीकरण या संक्षारण) :** जल जिसमें वायुमण्डलीय कार्बन डाइ आक्साइड घुली रहती है, के सम्पर्क में कार्बोनेट शैलों (चूनापत्थर, डोलोमाइट आदि) के घुलनशील पदार्थों के घुलकर अलग होने की प्रक्रिया को घोलीकरण या संक्षारण कहते हैं।

**Solution Lake (घोल द्वारा निर्मित झील) :** चूनापत्थर वाले क्षेत्रों में जल द्वारा घुलन क्रिया के अधिक सक्रिय होने से बड़े-बड़े घोल पटल (solution pans) एवं घोल गर्त बन जाती हैं जिनमें जल भर जानेसे निर्मित झील को घोल झील कहते हैं।

**Solution Pan (घोल पटल) :** जल के घुलन कार्य द्वारा उत्पन्न उथले परन्तु डोलाइन से बड़े आकार वाले छिद्रों को घोल पटल कहते हैं।

**Southern Busters (दक्षिणी बस्टर्स) :** आस्ट्रेलिया में उष्णकटिबन्धी चक्रवातों को दक्षिणी बस्टर्स कहते हैं।

**Southern Oscillation (दक्षिणी दोलन) :** उष्ण कटिबन्धी पूर्वी एवं पश्चिमी प्रशान्त महासागर में उच्च वायुदाब सिस्टम एवं न्यून वायुदाब सिस्टम में स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन (spatio-temporal changes) को दक्षिणी दोलन (SO) कहते हैं।

**Species Biodiversity (प्रजाति जैव विविधता) :** किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र के पौधों एवं जन्तुओं की प्रजातियों के प्रकार तथा उनकी परिवर्तनशीलता को प्रजाति विलोपन कहते हैं।

**Species Variation (प्रजाति विभिन्नता) :** किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र के पौधों, जन्तुओं एवं सूक्ष्म जीवों के समुदायों की प्रजातियों की विविधता एवं भिन्नता को प्रजाति विभिन्नता कहते हैं।

**Specific Humidity (विशिष्ट आर्द्रता) :** एक किलोग्राम आर्द्र वायु में मौजूद ग्राम इकाई में जलवाष्प के सकल द्रव्यमान (mass) या भार (weight) को विशिष्ट आर्द्रता कहते हैं। इस प्रकार विशिष्ट आर्द्रता निश्चित आयतन वाली आर्द्र वायु में स्थित वास्तविक आर्द्रता की मात्रा (ग्राम / किलोग्राम में) को दर्शाती है।

**Speleothem (स्पीलियोथेम) :** चूनापत्थर शैल वाले भागों में निर्मित कन्दराओं में सभी प्रकार के निक्षेपों तथा निक्षेपजनित स्थलरूपों को सामूहिक रूप से स्पीलियोथेम कहते हैं।

**Sphere (गोला) :** एक गोला वह ज्यामितीय आकृति है जिसका आयतन उसके धरातलीय क्षेत्रफल की अपेक्षा सर्वाधिक होता है।

**Spit (स्पिट) :** जब सागरीय अवसादों के निक्षेपण द्वारा निर्मित रोधिका सागरीय तट के लम्बवत होती है जिसका एक सिरा सागरीय स्थलीय भाग से जुड़ा होता है तथा दूसरा सिरा सागर की ओर निकला रहता है तो उसे स्पिट कहते हैं।

**Spreading Center (विसर्पण केन्द्र) :** जहाँ पर दो प्लेट विपरीत दिशा में गतिशील होते हैं उस केन्द्र को विसर्पण केन्द्र कहते हैं। मध्य महासागरीय कटक प्लेटों के विसर्पण केन्द्र हैं।

**Spring Tides (दीर्घ ज्वार) :** जब सूर्य एवं चन्द्रमा पृथ्वी के ओर एक सीधी रेखा में होते हैं तो सूर्य एवं चन्द्रमा की सम्मिलित गुरुत्वाकर्षण शक्ति से उत्पन्न ज्वार को दीर्घ ज्वार कहते हैं।

**Stabilization (स्थिरीकरण) :** किसी आवास में वनस्पतियों की प्रजातियों की संख्या की अन्तिम समस्थिति की दशा को स्थिरीकरण कहते हैं।

**Stack (स्टैक) :** सागरीय तट के पास चट्टानों का स्तम्भाकार रूप स्टैक कहलाता है। इसका हेडलैण्ड के अपरदन से निर्माण होता है। इसे चिमनी शैल या स्केरी भी कहते हैं।

**Stalactite (स्टैलेक्टाइट-निश्चुताश्म) :** भूमिगत कन्दराओं की छतों से नीचे की ओर लटकते नुकीले अग्रभाग वाले निक्षेप से निर्मित नुकीले पतले स्तम्भों को स्टैलेक्टाइट या आकाशी स्तम्भ कहते हैं।

**Stalagmite (स्टैलेग्माइट) :** भूमिगत कन्दराओं की फर्श पर निक्षेप जनित स्तम्भों, जो ऊपर यानी छत की ओर निरन्तर बढ़ते जाते हैं, को स्टैलेग्माइट कहते हैं।

**Star Dune (तारा बालुकास्तूप) :** तीन से अधिक बाहर निकली भुजाओं वाले बालुकास्तूपों को तारा स्तूप कहते हैं।

**Stationary Front (स्थायी वाताग्र) :** स्थायी वाताग्रों का निर्माण उस समय होता है जबकि विपरीत भौतिक गुणों वाली दो वायुराशियाँ इस तरह अभिसरित हों कि वे एक दूसरे के समानान्तर हो जायं तथा वायु का उपरिमुखी संचलन न हो। इस तरह के वाताग्र जलवायु की दृष्टि से महत्वहीन होते हैं क्योंकि इनसे बादलों का निर्माण एवं वर्षा की सम्भावना नहीं होती है।

**Stefan-Boltzman Law (स्टीफन-बोल्जमैन नियम) :** इस नियम के अनुसार विकिरण का प्रवाह विकिरण करने वाली वस्तु के निरपेक्ष तापमान की चौथी शक्ति के समानुपातिक होता है।

**Step Fault (सोपानी भ्रंश) :** जब किसी धरातलीय भाग में कई भ्रंशों का निर्माण इस तरह होता है कि सभी भ्रंश तल (fault plane) के ढाल एक ही दिशा में हों तो उसे सोपानी या सीढ़ीदार भ्रंश कहते हैं।

**Steppes (स्टेपीज़)** : यूरोप के शीतोष्ण प्रदेशों में विस्तृत वृक्षविहीन घास के मैदानों को स्टेपीज़ कहते हैं।

**Stone Glacier (प्रस्तर हिमानी)** : परिहिमानी क्षेत्रों के पर्वतीय भागों पर चट्टानी टुकड़ों तथा बारीक पदार्थों के मिश्रित रूप, जो ढाल के सहारे गुरुत्व बल के कारण नीचे की ओर गतिशील होता है, को शैल हिमनद कहते हैं। शैल हिमनद की ऊपरी परत में चट्टानों के विभिन्न आकार वाले टुकड़े होते हैं जबकि निचली परत में बारीक पदार्थ (सिल्ट, रेत, पंक आदि) होते हैं।

**Stone Lattice (जालीदार शिला)** : उष्ण शुष्क रेगिस्तानों में तीव्र वेग से चलने वाली पवन के मार्ग में पड़ने वाली शिलाओं पर सैण्डब्लास्टिंग (तीव्र अपघर्षण) होने से कोमल शैल कण अलग हो जाते हैं, जिस कारण शिलाओं में छोटे-छोटे छिद्र हो जाते हैं। इस तरह के छिद्रों से युक्त शैल को जालक शैल कहते हैं।

**Stone Stream (शैल सरिता)** : परिहिमानी क्षेत्रों में शैल मलवा (जिसमें बड़े तथा बारीक, सभी प्रकार के पदार्थ होते हैं) के समूह को, जो घाटी में एकत्रित होकर ढाल के अनुसार आगे की ओर सामूहिक रूप से अग्रसर होता है, को शैल सरिता कहते हैं।

**Storm Tracks (चक्रवात मार्ग)** : जिन मार्गों से होकर चक्रवात चलते हैं उनको तूफान मार्ग या चक्रवात मार्ग या झंझा पथ कहते हैं।

**Stratopause (स्ट्रैटोपाज़)** : समतापमण्डल (स्ट्रैटोस्फीयर) की ऊपरी सीमा (50 किमी०) को स्ट्रैटोपाज़ कहते हैं।

**Strike (नतिलम्ब)** : चट्टानों की झुकी परतों की नति (dip) के साथ समकोण बनाने वाली कल्पित रेखा को उस झुके हुए स्तर पर नतिलम्ब कहते हैं। यह सदैव नति के साथ 90° का कोण बनाता है।

**Structural Benches (संरचनात्मक सोपान)** : नदियों के मार्ग में क्रम से कठोर तथा कोमल शैलों की परतों की स्थिति होने पर (क्षैतिज अवस्था में) कठोर चट्टानों का कम तथा कोमल शैलों का अधिक अपरदन होने से सोपानकार सीढ़ियां बन जाती हैं, जिन्हें संरचनात्मक सोपान कहते हैं।

**Structural Lake (संरचनात्मक झील)** : जब नदी के जलमार्ग में कठोर चट्टानें आ जाती हैं तो उनका अपरदन कम होता है परन्तु कोमल शैलों का अपरदन अधिक होता है। परिणामस्वरूप कठोर शैलों के पीछे नदी का जल अवरुद्ध हो जाता है तथा अस्थायी झील का निर्माण हो जाता है जिसे संरचनात्मक झील कहते हैं।

**Subduction (क्षेपण)** : जब दो अभिसारी प्लेट (converging plates) एक-दूसरे से टकराते हैं तो अपेक्षाकृत भारी प्लेट का अग्र भाग मुड़कर अपेक्षाकृत हल्के प्लेट के नीचे चला जाता है। इसे प्लेट क्षेपण कहते हैं।

**Sublimation (ऊर्ध्वपातन)** : ऊष्मा के निवेश द्वारा ठोस (हिम) के सीधे तौर पर गैसीय रूप (जलवाष्प) में रूपान्तरण की प्रक्रिया को ऊर्ध्वपातन कहते हैं।

**Subsequent Stream (परवर्ती सरिता)** : प्रधान अनुवर्ती नदियों की उत्पत्ति के बाद अपनतियों के अक्ष के सहारे उत्पन्न सरिताओं को परवर्ती सरिता कहते हैं। जबकि दूसरे मतानुसार वलित पर्वतीय भागों में अपनतियों के पार्श्व भागों पर उत्पन्न होकर अभिनतीय प्रधान अनुवर्ती नदी से समकोण पर मिलने वाली सरिताओं को परवर्ती नदियां कहते हैं।

**Sun Spots (सौर कलंक)** : सूर्य के फोटोस्फीयर में अंधेरे एवं शीत भागों को सौर कलंक कहते हैं जो बाहर से चारों तरफ से क्रोमोस्फीयर से घिरे होते हैं।

**Super Imposed Stream (अधारोपित सरिता) :** भौमिकीय संरचना के आर-पार प्रवाहित होने वाली सरिता को अधारोपित या पूर्वरोपित नदी कहते हैं।

**Surf (सर्फ) :** प्रतोड़न रेखा पर ऊंची लहरों के शिखर के टूटने पर सफेद झाग वाली तट की ओर तेजी से झपटने वाली लहरों को सर्फ, स्वाश या ब्रेकर कहते हैं।

**Surf Current (सर्फ तरंग) :** प्रतोड़न रेखा (plunge line) पर टूटने के बाद सफेद झागदार तट की ओर तेजी से चलने वाली सागरीय लहरों को सर्फ धारा, स्वाश या ब्रेकर कहते हैं।

**Surface Waves (धरातलीय लहरें) :** धरातलीय भूकम्पीय लहरें प्रायः पृथ्वी के ऊपरी भाग को ही प्रभावित करती हैं। ये अत्यधिक प्रभावशाली होती हैं यद्यपि इनकी गति सबसे कम होती है। इन्हें L अक्षर से इंगित करते हैं।

**Suspension (निलम्बन) :** यह भ्वाकृतिक प्रक्रमों द्वारा वारीक पदार्थों के परिवहन की प्रक्रिया है। वारीक अवसाद नदी के जल या पवन के साथ लटक कर (निलम्बित) दूर तक परिवहन कर लिए जाते हैं।

**Swallow Hole (विलयन छिद्र) :** चूनापत्थर शैल वाले भूभाग की सतह पर जल के घुलन कार्य द्वारा जब कई घोलरंध्र (sink holes) विस्तृत होकर आपस में मिलकर बड़े रंध्रों या गर्तों का निर्माण करते हैं, तो उन्हें विलयन रंध्र कहते हैं।

**Symmetrical Anticline (समामित अपनति) :** जिस अपनति के दोनों ओर के ढाल बराबर होते हैं तो उसे सममित अपनति कहते हैं।

**Synclinal Lake (अभिनतीय झील) :** वलित पर्वतीय क्षेत्रों में अभिनतियों में जल भर जाने से निर्मित झील को अभिनति झील कहते हैं।

**Syncline (अभिनति) :** दो अपनतियों के बीच नीचे धंसे भाग को अभिनति कहते हैं।

**Synclinatorium (समभिनति) :** असमान सम्पीडन के कारण जब एक वृहद् अभिनति के अन्तर्गत छोटी-छोटी कई अपनतियाँ तथा अभिनतियाँ बन जाती हैं तो ऐसी संरचना को समभिनति कहते हैं।

**Synecology (समुदाय पारिस्थितिकी) :** किसी निश्चित पारिस्थितिक तंत्र में वनस्पति समुदाय के उसके आवास (habitats) के सन्दर्भ में अध्ययन को समुदाय पारिस्थितिकी कहते हैं।

**Synoptic Climatology (सिनाष्टिक जलवायु विज्ञान) :** वायुमण्डलीय परिसंचरण के सम्बन्ध में जलवायु के अध्ययन को सिनाष्टिक जलवायु विज्ञान कहते हैं। यह विज्ञान वायु परिसंचरण (air circulation), मौसम प्रकारों, तथा जलवायु सम्बन्धी प्रादेशिक विभिन्नताओं के मध्य सम्बन्धों के अध्ययन पर बल देता है।

**System (तंत्र) :** वस्तुओं के समुच्चय को तंत्र कहते हैं जिसके अन्तर्गत एक वस्तु के दूसरे वस्तु से सम्बन्धों तथा उनके (वस्तुओं) वैयक्तिक गुणों का अध्ययन किया जाता है।

**Syzygy (सिजिगी, युति-वियुति) :** पृथ्वी, चन्द्रमा एवं सूर्य की एक सीधी रेखा में स्थिति को सिजिगी कहते हैं।

**Tafoni (टैफोनी) :** उष्ण कटिबन्धी मरुस्थलों में सिलिकायुक्त बालुकापत्थर शैल पर रासायनिक अपक्षय से विकसित छिद्रों के जाल को टैफोनी कहते हैं।

**Taliks (टालिक्स) :** परमाफ्रास्ट मण्डल में बीच-बीच में छिटपुट विना हिमीकृत वाले भाग को टालिक्स कहते हैं।

**Tarn (टार्न) :** सर्क की बेसिन में निर्मित शैल बेसिन (गर्त) हिम के पिघल जाने पर अनावृत्त हो जाती है। जब उसमें हिमद्रवित जल भर जाता है तो उसे सर्क झील या टार्न कहते हैं।

**Tarn Lake (टार्न झील) :** हिमानी क्षेत्रों में निर्मित सर्क में जल जमा हो जाने से निर्मित झील को टार्न झील कहते हैं।

**Tectonic Earthquake (विवर्तनिक भूकम्प) :** पृथ्वी के धरातलीय भाग (भूपटल) में भ्रंशन के कारण चट्टानों की स्थितियों में अचानक परिवर्तन होने से उत्पन्न भूकम्प को भ्रंशमूलक या विवर्तनिक भूकम्प कहते हैं।

**Tectonic Mountain (विवर्तनिक पर्वत) :** विवर्तनिक घटनाओं से जनित भ्रंशन (faulting) के कारण निर्मित पर्वतों को विवर्तनिक पर्वत कहते हैं। यथा : ब्लाक या होस्ट पर्वत।

**Terminal Moraines (अग्रान्तस्थ हिमोढ़) :** हिमनद के पिघलने (ablation) पर उसके मुख के पास हिमानी ड्रिफ्ट के जमाव को अग्रान्तस्थ हिमोढ़ कहते हैं।

**Terrigenous Sediments (भूमिज अवसाद) :** महाद्वीपीय चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन से जनित अवसादों को जब नदियां महासागरों में लाती हैं तो उन्हें भूमिज अवसाद कहते हैं।

**Territorial Sea (क्षेत्रीय सागर) :** किसी भी देश के तट से (आधार रेखा से) 12 नौटिकल मील की दूरी तक के सागरीय भाग को क्षेत्रीय सागर कहते हैं।

**Tertiary Circulation (तृतीयक परिसंचरण) :** धरातलीय सतह पर स्थानीय एवं दैनिक हवाओं के संचरण को वायुमण्डल का तृतीयक या तृतीय श्रेणी का परिसंचरण कहते हैं (यथा : चिनूक, सिरोको, हरमट्टान, स्थलीय एवं सागरीय समीर, पर्वत एवं घाटी समीर आदि)।

**Tetrahedron (चतुष्फलक) :** एक चतुष्फलक चार फलकों वाली वह ज्यामितीय आकृति है जिसका आयतन उसके धरातलीय क्षेत्रफल की अपेक्षा न्यूनतम होता है।

**Thermal Anomaly (तापीय विसंगति) :** किसी स्थान विशेष के औसत तापमान तथा उस स्थान के अक्षांश के औसत तापमान के अन्तर को तापीय विसंगति कहते हैं। जब स्थान विशेष का तापमान उसके अक्षांश के तापमान से अधिक

होता है तो धनात्मक विसंगति (positive anomaly) एवं कम होने पर ऋणात्मक विसंगति (negative anomaly) होती है।

**Thermal Convection Current (तापीय संवहन तरंग) :** क्रस्ट के नीचे मैण्टिल में तापीय कारणों से उत्पन्न संवहन तरंगों को तापीय संवहन तरंग कहते हैं। इन्हीं तरंगों के आधार पर आर्थर होम्स ने वलित पर्वतों की उत्पत्ति के लिए 'तापीय संवहन तरंग सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया है।

**Thermal Cyclones (तापीय चक्रवात) :** शीतोष्ण प्रदेशों में गर्मियों में महाद्वीपों पर न्यून वायुदाब के केन्द्रों के विकसित होने के फलस्वरूप निर्मित चक्रवातों को तापीय चक्रवात कहते हैं।

**Thermocline (थर्मोक्लाइन) :** महासागरों में 300 मीटर से 1000 मीटर की गहराई में तापमान में तेजी से परिवर्तन वाली परत को थर्मोक्लाइन कहते हैं।

**Thermocline Current (थर्मोक्लाइन धारा) :** महासागरों में थर्मोक्लाइन परत के नीचे घनत्व चालित धाराओं को थर्मोक्लाइन धारा कहते हैं।

**Thermodynamic Modification (ऊष्मागतिक परिवर्तन) :** किसी भी वायुराशि के विभिन्न सतहों पर होकर प्रवाहित होते समय उसके नीचे से गर्म तथा ठंडा होने के कारण उसके भौतिक गुणों (खासकर तापमान एवं आर्द्रता सम्बन्धी) में होने वाले परिवर्तनों को ऊष्मागतिक परिवर्तन कहते हैं।

**Thermokarst (थर्मोकार्स्ट) :** परिहिमानी क्षेत्रों में परमाफ्रास्ट की हिम के किसी भी कारण से पिघल जाने से ऊपरी धरातलीय सतह के ध्वस्त होने के कारण निर्मित विभिन्न आकार वाली गर्तों से युक्त स्थलाकृति को थर्मोकार्स्ट कहते हैं।

**Thermokarst Lake (थर्मोकार्स्ट झील) :** परिहिमानी क्षेत्रों में जब धरातलीय सतह के नीचे परमाफ्रास्ट की हिम पिघल जाती है तो धरातलीय

सतह धंस जाती है और इस तरह निर्मित गड्ढों में जल भर जाने से निर्मित झील को थर्मोकार्स्ट झील कहते हैं।

**Three-phase Work (त्रिपथ कार्य) :** भ्वाकृतिक प्रक्रमों द्वारा किए जाने वाले अपरदन, परिवहन एवं निक्षेपण से सम्बन्धित कार्यों को त्रिपथ कार्य कहते हैं।

**Tidal Bore (ज्वारीय बोर) :** ज्वार के समय उत्पन्न ज्वारीय धाराओं के कारण एशुअरी में अपप्रवाह (upstream) दिशा में बढ़ती सागरीय जल की दीवार को ज्वारीय बोर कहते हैं।

**Tidal Range (ज्वारीय परिसर) :** ज्वारीय तरंग की ऊंचाई को ज्वारीय परिसर कहते हैं।

**Tidal Waves (ज्वारीय तरंग) :** सागरों में ज्वार आने पर उत्पन्न सागरीय तट की ओर चलने वाली सागरीय तरंगों को ज्वारीय तरंग कहते हैं।

**Tide (ज्वार) :** चन्द्रमा एवं सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के द्वारा सागरीय जल स्तर में उभार एवं पतन को ज्वार भाटा कहते हैं।

**Till Plain (टिल मैदान) :** हिमानी द्वारा लाये गये विभिन्न आकार वाले अवसादों को टिल कहा जाता है। इनके निक्षेपण से निर्मित मैदान को टिल मैदान कहा जाता है।

**Tombolo (टोम्बोलो) :** तट से किसी द्वीप या शीर्षस्थल से किसी द्वीप को मिलाने वाली रोधिका (bars) को टोम्बोलो कहते हैं।

**Tor (टार) :** नग्न शैल स्तर (bare bedrock) की सामान्य सतह के ऊपर चट्टानों के खण्डों के समूह को टार कहते हैं। इनका आधार चौड़ा होता है तथा ऊपर की ओर वह संकरा हो जाता है। चट्टानी खण्ड एक दूसरे पर इस तरह सजे होते हैं कि लगता है किसी व्यक्ति ने उन्हें सजाया हो। परन्तु ये प्राकृतिक रूप से बनते हैं।

**Tower Karst (टावर कार्स्ट) :** पास-पास स्थित काकपिट के मिल जाने पर उसके बीच के

अवशिष्ट अधिक ऊंचाई वाले कटकों से (ridges) से युक्त स्थलाकृति को टावर कार्स्ट कहते हैं।

**Traction (कर्षण) :** भ्वाकृतिक प्रक्रमों द्वारा अपरदित पदार्थों के परिवहन की यह एक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत चट्टानों के बड़े-बड़े टुकड़े सतह से घिसट कर लुढ़कते हुए स्थान्तरित किए जाते हैं।

**Transgressional Phase (अतिक्रमण अवस्था) :** विभिन्न कारणों से सागरीय जल के महाद्वीपीय भाग पर प्रसार की दशा को सागरीय अतिक्रमण की प्रावस्था कहते हैं।

**Transitional Waves (संक्रमणीय तरंग) :** गहरे जल (दोलन तरंगों) एवं छिछले जल (स्थानान्तरणी तरंगों) के मध्य उत्पन्न होने वाली लहरों को संक्रमणीय तरंग कहते हैं।

**Translatory Circulation (स्थानान्तरणी परिसंचरण) :** एक ही दिशा में एक स्थान से दूसरे स्थान को वायु के क्षैतिज परिसंचरण को स्थानान्तरणी परिसंचरण कहते हैं।

**Transpiration (वाष्पोत्सर्जन) :** स्थलीय जीवित पौधों से जल के क्षय की प्रक्रिया को वाष्पोत्सर्जन कहते हैं।

**Transverse Dune (अनुप्रस्थ बालुकास्तूप) :** वायु की दिशा के विपरीत दिशा में निर्मित रेत के टिब्बों को अनुप्रस्थ बालुकास्तूप कहते हैं।

**Transverse Waves (अनुप्रस्थ भूकम्पीय लहर) :** जल तरंग अथवा प्रकाश तरंग के गुणों वाली भूकम्पीय लहरों को अनुप्रस्थ भूकम्पीय लहर कहते हैं क्योंकि इसमें अणुओं की गति लहर के समकोण पर होती है। इसे द्वितीयक (secondary-S लहर) तथा विध्वंशक लहर भी कहते हैं।

**Travertine (ट्रैवरटाइन) :** भूमिगत कन्दराओं में धारीदार (पट्टीयुक्त) चूने (calcareous) के निक्षेप को ट्रैवरटाइन कहते हैं।

**Trellis Drainage Pattern (जालीनुमा अपवाह तंत्र) :** वलित पर्वतीय क्षेत्रों में अपनतियों के पार्श्व भागों पर एवं अभिनतियों में विकसित सरिताओं एवं उनकी सहायक नदियों के जाल को जालीनुमा अपवाह प्रतिरूप कहते हैं जिसमें सहायक नदियां अपनी मास्टर नदी से समकोण पर मिलती हैं।

**Triassic Period (ट्रियासिक शक) :** यह मेसोजोइक महाकल्प का एक भूगार्भिक काल है, जिसका समय आज से 22.5 करोड़ वर्ष पूर्व से 18 करोड़ वर्ष पूर्व तक था। इस शक का नामकरण जर्मनी में निक्षेप के तृस्तरीय (three fold) विभाजन के आधार पर किया गया है। ट्रियास का अर्थ तिहरा (triple) होता है।

**Trophic Level (पोषण स्तर) :** जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तंत्र में आहार श्रृंखला के उस बिन्दु को जहां पर आहार ऊर्जा का एक वर्ग के जीवों से दूसरे वर्ग के जीवों में स्थानान्तरण होता है, को पोषण स्तर कहते हैं।

**Tropopause (ट्रोपोपाज़) :** क्षोभमण्डल (ट्रोपोस्फीयर) की ऊपरी सीमा (16-17 किमी०) को ट्रोपोपाज़ कहते हैं।

**Tsunamigenic Earthquake (सुनामीजनक भूकम्प) :** सागरीय तली के नीचे रिटर मापक पर 7.0 या 7.5 परिमाण या उससे अधिक परिमाण वाले भूकम्पों को सुनामीजनिक भूकम्प इसलिए कहते हैं क्योंकि ऐसे भूकम्पों से सुनामी लहर उत्पन्न होने का खतरा रहता है।

**Tsunarnis (सुनामी) :** सागरीय तलों में तीव्र परिमाण वाले भूकम्पों से उत्पन्न सागरीय जल में गमन करने वाली लहरों को सुनामी कहते हैं।

**Tuffa (टूफा) :** भूमिगत कन्दराओं के मुख पर निक्षेपित टैवरटाइन के कोमल निक्षेप को टूफा या काल्क टूफा कहते हैं।

**Tundra (टुण्ड्रा) :** यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका के वृक्षविहीन विस्तृत लगभग समतल विस्तृत मैदामी

भाग को टुण्ड्र या बंजर प्रदेश (barren land) कहते हैं।

**Turbidity Current (आविल धारा) :** अन्त : सागरीय भागों में मग्न ढालों पर तथा सागरीय तली पर अधिक घनत्व वाले अवसादों द्वारा चालित अन्तः सागरीय धाराओं को आविल धारा कहते हैं।

**Turbulent Flow (क्षोभ प्रवाह) :** किसी भी गतिमान वस्तु (यहां पर वायु) में अणुओं/कणों के चारों दिशाओं में गतिशील होने को क्षोभ प्रवाह कहते हैं। संवहन तरंग तथा भंवर (eddy) इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

**Twin-river System (जुड़वा-सरिता तंत्र) :** धरातलीय सतह के ऊपर तथा ठीक उसी के नीचों 2 विभिन्न तलों (levels) पर एक ही दिशा में प्रवाहित होने वाली सरिताओं के तंत्र को जुड़वा-सरिता तंत्र नाम दिया गया है। उदाहरण : ब्राजील में धरातलीय सतह पर अमेजन नदी तथा 4 किमी० की कहराई पर 6000 किमी० लम्बी हज्मा भूमिगत नदी पश्चिम से पूर्व दिशा में प्रवाहित होती हुई अटलाण्टिक महासागर में मिलती है।

**Umdertow (अधः प्रवाह) :** सागरीय तट से सागर की ओर सागरीय जल सतह के नीचे चलने वाले जल के प्रवाह को अधः प्रवाह कहते हैं।

**Unconformity (असमविन्यास) :** यह एक भौमिकीय (geological) शब्दावली है। किसी भी क्षेत्र में शैलों के अनुक्रम (sequence) में असमानता (irregularity) या क्रमभंगता (discontiguity) को असमविन्यास कहते हैं। यथा: समान्तर एवं क्षैतिज परतों के ऊपर झुकी परतों का क्रम हो (इसे कोणीय असम्बद्धता कहते हैं), या बारीक कणों वाली परतों के ऊपर गोलाश्म (boulders) वाला जमाव हो आदि।

**Undertow Current (अधः प्रवाह) :** जब सर्फ लहरें सागरीय तट से टकराने के बाद सागरीय जल के नीचे से होकर सागर की ओर लौटती हैं तो उन्हें अधः प्रवाह कहते हैं।

**Upwarps (उत्संवलन) :** जब क्षैतिज संचलन के कारण उत्पन्न सम्पीडन से धरातल के बीच का भाग गुम्बद के आकार में ऊपर उठ जाता है तो उस क्रिया को उत्संवलन कहते हैं।

**Uvala (युवाला) :** चूनापत्थर शैल वाले भाग में घोलीकरण द्वारा कई डोलाइन आपस में मिलकर वृहद् गर्त का निर्माण करते हैं जिन्हें युवाला कहते हैं।

**Vadoze Zone (वैडोज़ मण्डल) :** भौमजलस्तर (groundwater table) के ऊपर स्थित असम्पृक्त मण्डल को वैडोज़ मण्डल कहते हैं। इसे पवन मिश्रित मण्डल या वातन मण्डल भी कहते हैं। इसके विपरीत वातन मण्डल के नीचे से स्थित जलमिश्रित मण्डल को सम्पृक्त मण्डल या फ्रीटिक मण्डल कहते हैं।

**Volcanicity (ज्वालामुखी क्रिया) :** धरातल के नीचे गैस एवं वाष्प के संचय, मैग्मा के निर्माण, उसका गैसों के साथ ऊपर उठने तथा धरातल के ऊपर दरारी एवं विस्फोटक केन्द्रीय उद्भेदन के रूप में विभिन्न प्रकारों में प्रकट होने की समस्त संयुक्त प्रक्रियाओं को सम्मिलित रूप से ज्वालामुखी क्रिया कहते हैं।

**Vapour Pressure (वाष्प दाब) :** किसी निश्चित आयतन एवं तापमान वाली वायु में स्थित जलवाष्प द्वारा डाले जाने वाले दबाव को वाष्प दाब कहते हैं।

**Vegetation (वनस्पति) :** किसी भी क्षेत्र में विभिन्न प्रजातियों के पादपों के सम्मिलित रूप को वनस्पति कहते हैं।

**Vertical Abrasion (लम्बवत अपघर्षण) :** नदियों द्वारा छेदक यंत्रों (drilling tools - नुकीले टुकड़े) के माध्यम से अपनी घाटी को गहरा करने की प्रक्रिया को लम्बवत या निम्नवर्ती अपघर्षण कहते हैं।

**Volcanic Breccia (ज्वालामुखी ब्रेसिया) :** ज्वालामुखी से निस्सृत बड़े आकार वाले

विखण्डित पदार्थों के संगठित रूप को ज्वालामुखी संकोणाश्म कहते हैं। जब ये जल में जमा हो जाते हैं तो उन्हें ज्वालामुखी टूफ कहते हैं।

**Volcanic Plateau (ज्वालामुखी पठार) :** ज्वालामुखी उद्गार के समय विस्तृत लावा प्रवाह के फलस्वरूप क्रमिक रूप से लावा की मोटी-मोटी चादर (lava sheets) के जमाव से समीपी सतह से ऊँचे स्थलखण्ड को ज्वालामुखी पठार या लावा पठार कहते हैं। भारत का प्रायद्वीपीय पठार इसका प्रमुख उदाहरण है।

**Vulnerable species (सुभेद्य प्रजाति) :** किसी पारिस्थितिक तंत्र में पौधों एवं जन्तुओं की उन प्रजातियों को सुभेद्य प्रजाति कहा जाता है जिनके विगत 10 वर्षों में या 3 पीढ़ियों के 50 प्रतिशत सदस्यों का नाश हो गया हो।

**Walker Circulation (वाकर परिसंचरण) :** दक्षिणी प्रशान्त महासागर में उष्ण कटिबन्धी हवाओं के विशिष्ट परिसंचरण की पूर्व-पश्चिम कोशिका को जी० टी० वाकर (1922) के नाम पर वाकर संचरण कहते हैं।

**Warm Air mass (गर्म वायुराशि) :** जिस वायुराशि का तापमान उसके नीचे स्थित धरातलीय सतह के तापमान से अधिक होता है, उसे गर्म वायुराशि कहते हैं।

**Warm Front (उष्ण वाताग्र) :** उष्ण वाताग्र मन्द ढाल वाली वाताग्री सतह होता है, जिसके सहारे गर्म एवं हल्की वायु आक्रामक होकर ठंडी एवं भारी वायु के ऊपर उठती है।

**Warm Front Occlusion (उष्ण वाताग्र अधिधारण) :** उष्ण वाताग्र अधिधारण उस समय होता है जब शीत वाताग्र के पीछे वाली हवा उष्ण वाताग्र के आगे वाली गतिमान हवा से गर्म होती है। इस स्थिति में ठंडी वायु उष्ण वाताग्र एवं आगे बढ़ती वायु का अभिलंघन (overtaking) कर लेती है।

**Waterfall (जलप्रपात) :** पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्रों में नदियों के मार्ग में अधिक ऊंचाई से जल के तीव्र वेग से कई मीटर नीचे गिरने को जलप्रपात कहते हैं। जलप्रपातों के नीचे आधार पर गहरे कुण्ड बन जाते हैं जिन्हें प्लंज पूल कहते हैं।

**Wave Built Platform (तरंग निक्षेपित चबूतरा) :** सागरीय तरंगों द्वारा तरंग अपरदित चबूतरों के सागरवर्ती भाग पर सागरीय अवसादों के जमाव से निर्मित चबूतरे को तरंग निक्षेपित चबूतरा कहते हैं।

**Wave Crest (तरंग शिखर) :** सागरीय तरंगों के सबसे ऊंचे उठे भाग को तरंग शिखर कहते हैं। यह दो तरंग गर्तों के बीच होता है।

**Wave Cyclone (लहर चक्रवात) :** लहरनुमा ध्रुवीय वाताग्र के सहारे निर्मित शीतोष्ण कटिबन्धी चक्रवातों को लहर चक्रवात कहते हैं।

**Wave of Oscillation (दोलन तरंग) :** अधिक गहरे महासागरी भागों में उत्पन्न होने वाली लहरों को दोलन तरंग कहते हैं, जिसमें जल की प्रत्येक बूंद वृत्ताकार मार्ग में गतिशील होती है।

**Wave of Translation (स्थानान्तरणी तरंग) :** इस लहर में जलगति तरंग संचरण दिशा में होती है तथा सतह से तली तक का समस्त सागरीय जल तरंग दिशा में ही गतिशील होता है। इसे एकशृंगी लहर (solitary wave) भी कहते हैं।

**Wave Theory (लहर सिद्धान्त) :** शीतोष्ण कटिबन्धी चक्रवातों की उत्पत्ति के चिरप्रतिष्ठित ध्रुवीय वाताग्र सिद्धान्त को 'लहर सिद्धान्त' कहते हैं।

**Wave Trough (तरंग गर्त) :** किसी भी लहर के दो लगातार शिखरों के मध्य जल के सबसे निचले भाग को तरंग गर्त कहते हैं।

**Wave-cut Platform (तरंग घर्षित चबूतरा) :** सागरीय क्लिफ के आधार पर सागरीय तरंगों से अपरदित नग्न शैल वाले चबूतरे को तरंग अपरदित प्लेटफार्म कहते हैं।

**Wavelength (तरंग लम्बाई) :** तरंगों के 2 लगातार तरंग शीर्षों या तरंग गर्तों के मध्य सीधी दूरी को तरंग लम्बाई कहते हैं।

**Weather (मौसम) :** वायुमण्डलीय दशाओं, यथा तापमान, वायुदाब, पवन संचार, आर्द्रता, वर्षा, दृश्यता आदि की किसी स्थान विशेष में निश्चित समय के अन्तर्गत अल्पकालीन विभिन्नताओं की दशा को मौसम कहते हैं, जो एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक समय से दूसरे समय में अत्यन्त परिवर्तनशील होता है।

**Weathering (अपक्षय) :** चट्टानों के अपने मूल स्थान पर ही विभिन्न कारकों द्वारा विभिन्न विधियों से विघटन एवं वियोजन की स्थैतिक प्रक्रिया को अपक्षय कहते हैं।

**Whaleback Dune (हेलबैक टिब्बे) :** मोटी रेत से बने बालुकास्तूपों को हेलबैक टिब्बा कहते हैं।

**Whaling (हैलिंग) :** हेल मछलियों के पकड़ने के कार्य को हैलिंग कहते हैं।

**Wien's Displacement Law (वेन का विस्थापन नियम) :** इस नियम के अनुसार अधिकतम विकिरण की तरंगदैर्घ्य (wavelength) विकिरण करने वाली वस्तु के निरपेक्ष (absolute) तापमान से विलोम समानुपातिक (inversely proportional) होती है।

**Wilting Stage (म्लान अवस्था) :** जब मिट्टियों में वाष्पीकरण द्वारा तथा पौधों की जड़ों द्वारा समस्त जल ग्रहण कर लेने के बाद मिट्टियों में जल का पूर्णतया अभाव हो जाता है तो मृदा की उस दशा को म्लान अवस्था कहते हैं।

**Wind Gap (वात द्वार) :** सरिता अपहरण के कारण अपहरण की कुहनी तथा रुण्डित नदी (beheaded stream) के ऊपरी भाग के बीच जलाभाव के कारण शुष्क स्थान को वात दर्रा या बात द्वार कहते हैं।

**Wind Shift (पवन विचलन) :** वायु की दिशा में जब सामान्य से अधिक अचानक परिवर्तन हो जाता है तो उसे पवन विचलन कहते हैं।

**Window (खिड़की) :** किसी क्षेत्र में एक ग्रीवाखण्ड के ऊपर सवार दूसरे ग्रीवाखण्ड के कुछ भाग का अपरदन हो जाता है तो निचले ग्रीवाखण्ड का भाग दिखाई पड़ने लगता है। इसे संरचनात्मक खिड़की कहते हैं।

**Winters of Tropics (उष्णकटिबन्ध की शरद) :** विषुवतरेखीय वर्षावन जलवायु में रात्रियों को उष्णकटिबन्ध की शरद कहते हैं क्योंकि रात का अपेक्षाकृत कम तापमान स्थानीय लोगों को असुविधाजनक होता है।

**wlechert Discontinuity (विचर्ट असम्बद्धता) :** निचली मैण्टिल एवं वाह्य अन्तरतम (क्रोड, Core) की विभाजक सीमा को गुटेनबर्ग असम्बद्धता या विचर्ट असम्बद्धता कहते हैं। यह धरातीय सतह से नीचे 2900 किमी० की गहराई पर होती है। इस सीमा पर घनत्व में अचानक वृद्धि होती है। निचली मैण्टिल का 5.5 का घनत्व बढ़ कर 10 हो जाता है जिस कारण भूकम्पीय लहरों की गति में अचानक वृद्धि (13.6 किमी० प्रति सेकेण्ड) हो जाती है।

**Xerophytes (जेरोफाइट्स) :** जेरोफाइट्स ऐसे पादप समूह होते हैं जो उष्ण शुष्क जलवायु में विकसित होते हैं तथा चरम शुष्कता को सह सकते हैं। उदाहरण के लिए उष्ण मरुस्थलों की वनस्पतियाँ इस श्रेणी में आती हैं।

**Xerophytic Structure (शुष्कानुकूलित संरचना) :** रूमसागरीय जलवायु प्रदेशों में शुष्क ग्रीष्मकाल की शुष्कता को सहन करने वाली वनस्पतियों की बनावट (यथा : मोटी वाह्य छाल, ग्रंथित रोयें, बन्द रंध्र आदि) को शुष्कानुकूलित संरचना कहते हैं।

**Yardang (यारडंग) :** यारडंग एक दिशा में समूह में पाये जाने वाले ऐसे शैल कटक (rock ridges) होते हैं जिनका एक तरफ का निचला भाग अत्यधिक अपरदित होता है तथा शीर्ष आगे की ओर निकला रहता है।

**Young Plateau (तरुण पठार) :** गहरी घाटियों तथा विस्तृत उच्चावच से युक्त सतह वाले एवं चारों तरफ से कगारों (scarps) से घिरे पठारों को तरुण पठार कहते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका

का कोलोरैडो का पठार, इदाहो पठार आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

**Zenith Tide (जेनिथ ज्वार) :** चन्द्रमा की ओर वाले पृथ्वी के जल में उत्पन्न ज्वार को जेनिथ ज्वार कहते हैं।

**Zeugen (ज्यूजेन) :** रेगिस्तानी भागों में ढक्कनदार दावात (inkpot) के समान मेज के आकार के स्थलरूप को ज्यूजेन कहते हैं।

**Zonal Solls (मण्डलीय मिट्टियाँ) :** सुवातित (well aerated) तथा सुप्रवाहित (well drained) दशाओं में निर्मित मिट्टियों को मण्डलीय मिट्टियाँ कहते हैं। इनके अन्तर्गत पूर्ण विकसित तथा सभी विकसित संस्तरों वाली प्रौढ़ मिट्टियाँ आती हैं।

**Zone of Compensation (क्षतिपूर्ति मण्डल) :** ज्ञातव्य है कि आर्क डकन प्राट ने एक तल (रैखिक) के सहारे क्षतिपूर्ति तल की बात कही थी अर्थात् धरातलीय सतह के नीचे एक ऐसा तल होता है जिसके सहारे ऊँचे-नीचे सभी उच्चावचों का भार बराबर होता है (जो भूस्तम्भ जितना बड़ा होता है उसका घनत्व उतना ही कम होता है तथा जो भूस्तम्भ जितना छोटा होता है उसका घनत्व उतना ही कम होता है) परन्तु जोली महोदय के अनुसार क्षतिपूर्ति तल एक रेखा के सहारे न होकर एक समूची 10 मील (16 किमी०) मोटी परत के रूप में होता है, जिसे इन्होंने क्षतिपूर्ति मण्डल कहा है।

**Zone of Low Velocity (न्यून गति का मण्डल) :** ऊपरी मैण्टिल (100 से 700 किमी०) में भूकम्पीय लहरों की गति मन्द (7.8 किमी० प्रति सेकेण्ड) पड़ जाती है, जिस कारण इस भाग को न्यून गति का मण्डल कहते हैं।

**Zooplankton (जन्तु प्लैंकटन) :** सागरों के ऊपरी 200 मीटर गहरे प्रकाशित मण्डल में उतराने वाले सूक्ष्म आकार के जन्तुओं को जन्तु प्लैंकटन कहते हैं।

**Zooxanthalae Algae (जुक्सान्थलाई शैवाल) :** जुक्सान्थलाई एककोशिकीय प्रकाशसंश्लेषी शैवाल पौधे हैं जो प्रवालों (जीवित प्रवाल जन्तुओं) के शरीर के वाह्य भाग में रहते हैं।